गांधी ग्रथमाला—चौथा पुष्प

श्रद्धांजलियाँ

अनुवादक एव संपादक

श्रीज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी०

भूतपूर्व प्रचार अफसर, विहार-सरकार

—⊷⊷—

मिलने का पता—

राष्ट्रीय प्रकाशन - मंडल

मछुआ-टोली, पटना

१९४८ } प्रथम संस्करण { मूल्य ३)

प्रकाशक
श्रीराजकुमार भार्गव
अध्यक्ष राष्ट्रीय प्रकाशन-मंडल
मछुआ-टोली, पटना

मिलने के अन्य पते

१. गंगा-पुस्तकमाला, ३६, लाटूश रोड, लखनऊ
२ दिल्ली-ग्रंथागार, १६२३, चर्खेवालों, दिल्ली
३ प्रयाग ग्रंथागार, ४०, क्रास्थवेट रोड, प्रयाग

नोट—हमारी सब पुस्तकें इनके अलावा हिंदुस्थान-भर के सब प्रधान बुकसेलरों के यहाँ मिलती हैं। जिन बुकसेलरों के यहाँ न मिलें, उनका नाम-पता हमें लिखें।

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

नेता थे, जिन्होंने शांति, सद्भावना और नैतिकता के लिये अपने जीवन का बलिदान किया। चेहरे पर मृदु मुस्कान लिए और आततायी को क्षमा-भाव प्रदर्शित करते हुए, वह मृत्यु को प्राप्त हुए। मृत्यु उनको कई बार चुनौती दे चुकी थी, और कदाचित् वह जानते भी थे कि वह अपने शांति एवं सद्भावना के प्रयास में मारे जा सकते हैं। फिर भी इस महा-मानव ने सर्वजनहितार्थ अपने प्राण दे दिए। सारे संसार के इतिहास में ऐसा अन्य उदाहरण खोजने पर भी नहीं मिलेगा।

गांधीजी की स्मृति हमारे देश के करोड़ों मनुष्यों के हृदयों में ही नहीं, बल्कि समस्त संसार के शांति-इच्छुक प्राणियों की मनोकामनाओं में जीवित रहेगी। उनके द्वारा प्रज्वलित सद्भावना एवं सतोगुणों की ज्योति हजारों वर्षों तक प्रज्वलित रहेगी और दुखी एवं आर्त मानवों को प्रकाश एवं राह दिखाती रहेगी। यह अमरज्योति भारतवर्ष के इस महान् महात्मा की विश्व को देन होगी। हमारा मस्तक आज गर्व से उन्नत है कि गांधी जी ने हमारे देश में जन्म लिया और हमारी दो हजार वर्ष पूर्व की सांस्कृतिक प्रभुता एक बार पुनः स्थापित की।

गांधीजी ऐसे ही महात्मा थे। हमारे ऐसे क्षुद्र प्राणी अपनी कृतज्ञता एक ही प्रकार से प्रकट कर सकते हैं—उनके उपदेशों पर चलकर और उनकी वाणी को पुस्तकाकार देकर गांधी-

ग्रंथमाला के प्रकाशन का हमारा यही उद्देश्य है । हर्ष की बात है कि इस ग्रंथमाला का प्रथम पुष्प गांधी-गौरव हाथों-हाथ बिका, और ३ मास में ही उसके तीन संस्करण हो गए। अन्य प्रकाशनों का भी अच्छा समादर हुआ। अब हम यह चौथा पुष्प 'श्रद्धांजलियां' लेकर उपस्थित हो रहे हैं। संपूर्ण विश्व की श्रद्धांजलियों का इसमें संकलन है, और अपने ढंग से महात्मा गांधी के विचारों, कार्यों, उपदेशों एवं आदर्शों पर विश्व के मान्य नेताओं के अपने उद्गार हैं। संकलन कुछ चुने हुए व्यक्तियों के उद्गारों का किया गया है। क्योंकि महात्माजी के प्रति संसार भर में हजारों व्यक्तियों एवं संस्थाओं ने श्रद्धांजलियाँ अर्पण की हैं। उन सबका समावेश कठिन ही नहीं, असंभव भी था। चयन की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है और इसमें दोष अवश्य होंगे, पर शुद्ध हृदय से नियोजित इस सत्कार्य को देखते हुए हम क्षमा योग्य हैं।

हमें गर्व है कि हम सर्वप्रथम ऐसी श्रेष्ठ एवं पवित्र भावों से ओत-प्रोत पुस्तक भेंट कर रहे हैं। आशा है, हिंदी-संसार इसको तुरंत अपनाकर उस महान् महात्मा के प्रति हमारे साथ श्रद्धांजलि अर्पित करेगा।

१।५।१९४८

ज्योतिलाल भार्गव
संपादक

सूची

पृष्ठ

श्रद्धांजलियाँ —

महात्मा

एष देवो विश्वकर्मा महात्मा
सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः ;
हृदा मनीषा मनसा भिक्लृप्तो
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ।

अर्थात् वह प्रकाशमान तथा सबकी उत्पत्ति करनेवाला महात्मा है। वह हर समय लोगों के हृदय मे विराजमान रहता है। जिसकी बुद्धि निर्मल है, मनन करने पर उसके हृदय मे प्रकट होता है। जो उसे जानते हैं, वे अमर हो जाते हैं।

प्रकाश लुप्त हो गया !

[पंडित जवाहरलाल नेहरू]

आज भारत का प्रकाश लुप्त हो गया ! चारों तरफ अँधेरा छा गया है। राष्ट्र-पिता गांधीजी हमसे बहुत दूर चले गए। हमारी लंबी-लंबी आशाएँ विनष्ट हो गईं। विश्व की वह महत्तम विभूति तिरोधान हो गई। लेकिन यह अवसर हमारी परीक्षा का अवसर है। हम भारतीयों को इस अवसर पर काफ़ी समझदारी से काम लेना होगा। हमारी सबसे महत्त्वशाली प्रार्थना, जो अमर बापू की आत्मा को शांति प्रदान कर सकती है, शांति और सत्य है। हमें निश्चित रूप से उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलना चाहिए, तभी हम उनका आदर कर सकते हैं।

मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि इस घटना से करोड़ों भारतीयों के हृदयों पर गहरा धक्का पहुँचा है। हमने कहा—प्रकाश चला गया, लेकिन उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलकर उस प्रकाश की हमें रक्षा करनी है, जिसे बापू ने हमे दिया है। वह प्रकाश भारत के लिये ही नहीं, बल्कि इसकी उपादेयता संपूर्ण विश्व में मानव-समाज के लिये है।

इस नाजुक अवसर पर प्रत्येक भारतीय को सँभलकर चलना होगा। हमारे सामने जो समस्या है, उसे हम आपस में

मिल-जुलकर ही हल कर सकते हैं। गांधीजी ने इस देश को आजाद किया है। उनके सतत प्रयत्नों से अर्जित इस स्वतंत्रता की रक्षा का भार तो भारत के नागरिकों के हाथों में है। गांधीजी द्वारा प्रदत्त प्रकाश हजार वर्ष बाद भी दुनिया में चमकेगा, और उनके तेज को चमकाएगा। आज के युग में ऐसे नेताओं की हमें आवश्यकता है—इस समय उनकी अनुपस्थिति हमारे लिये और भी दुःखदायी है।

एक पागल ने हमारी इस अमूल्य निधि का विनाश किया है। लेकिन जनता को क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। आज हमारा क्रोध सीमा उल्लंघन अवश्य कर रहा है, लेकिन अगर हम शांति तथा दयार्द्रता से काम नहीं लेते, तो गांधीजी की कोमल आत्मा को आघात पहुँचेगा।

गांधीजी ने हमारा मार्ग प्रशस्त कर दिया है। हमें उसी मार्ग पर चलकर उनके विचारों को कार्यान्वित करना है। हम आपस में मिल-जुलकर रहें, और इस तरह हमारे रास्ते में जो कठिनाइयाँ आवें उनका सामना संयुक्तरूप से करें। गांधीजी की यही साध थी कि हम भारतीय एक हों, और अपनी पुरानी संस्कृति के प्रकाश में विश्व की संतप्त मानवता को एक नवीन पथ प्रदान करें। गांधीजी ने जीवित रहकर समाज की सेवा की है, मरने के बाद भी वह मानवता की सेवा करेंगे।

वह अमर हैं !

[सरदार वल्लभभाई पटेल]

इस समय मैं आप लोगो से कुछ विशेष कहने मे असमर्थ हूँ। मेरा दिल दर्द से भरा है। ज़बान चलती नही। आज भारत के लिये दुःख, शोक और शर्म का अवसर है। थोडी देर पहले ४ बजे मैं गांधीजी से मिलने गया था, और एक घंटे बातें कीं। घडी की ओर देखने के पश्चात् मुझसे कहने लगे—"मेरा प्रार्थना-समय हो गया मुझे जाने दीजिए।" यही कहते हुए गांधीजी बिडला-भवन के बाहर निकल पडे। मैं घर जाने के रास्ते मे ही था कि एक भाई आया और बोला कि एक नौजवान हिंदू ने गाधीजी पर प्रार्थना स्थल में पिस्तौल से गोली चलाई। गाधीजी इस आघात को सहन न कर सके, और उनके प्राण-पखेरू उड गए।

मैंने उनका चेहरा देखा। चेहरे से शांति, दया और क्षमा का भाव प्रकट हो रहा था। वह अपना काम कर चले गए। चार दिनो से उनका दिल कुछ खट्टा हो गया था। यदि उसी समय वह चले गए होते, तो अच्छा होता। कुछ दिन हुए उन पर बम भी फेंका गया था, किंतु वह बच गए। इस समय उन्हें जाना था। वह भगवान् के मंदिर मे चले गए।

यह समय दुःख और शोक का है, क्रोध का नहीं, नहीं तो

उनकी आत्मा को चोट पहुँचेगी। उनका सबक हम भूल जायँगे। उनकी कही गई बातों को हमने नहीं माना, इसका धब्बा हम पर लग जायगा। हमारी परीक्षा हो रही है, और शांति-पूर्वक एक दूसरे से मिलकर हमें रहना है। हमारे ऊपर बहुत बोझ है। बोझ के मारे हमारी कमर टूटी जा रही थी। उनका एक सहारा था, वह भी चला गया। चला तो गया, पर वह रहेगा। और, जो चीज दे गया, वह कभी जानेवाली नहीं है। अब उनका शरीर तो भस्म हो जायगा, किंतु हमेशा वह हमें देखता रहेगा। वह अमर है। उनके मरने से शायद वह, जो अब तक भारत को नहीं दे सके थे, अब पूरा हो जाय। जिस नौजवान ने पागल होकर उन्हें मारा, उसके हृदय को सयत होने में समय लगेगा। इसलिये मेरी प्रार्थना है कि जितना भी दु:ख-दर्द हो, पर हमें ध्यान रखना है कि शांति, अदब और विनय से हमें उस काम को करना है, जो उन्होंने सिखाया है। यह समय हमारे लिये हिम्मत से मुसीबत का मुक़ाबला करने का है।

नोट—मृत्यु की रात को प० जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल के रेडियो से भाषण।

भारतीय नेताओं की

अहिंसा के ईश्वरीय दूत

हिज़ एक्सिलेंसी रियर ऐडमिरल दि अर्ल माउंटबैटेन
ऑफ बर्मा, भारत के गवर्नर जनरल

संसार के हर हिस्से के लाखों—करोड़ो मनुष्यों के लिये गांधीजी की मृत्यु व्यक्तिगत विपत्ति के रूप मे आई । न केवल उनके लिये, जिन्होंने जीवन-पर्यंत उनके साथ कार्य किया, अथवा मेरे जैसा व्यक्ति, जिसका गांधीजी से हाल ही में परिचय हुआ था, परंतु ऐसे भी लोगों ने, जिन्होंने न तो कभी उन्हें देखा था, न कभी उनसे मिले थे, और न कभी उनका लिखा एक भी शब्द पढ़ा था, अनुभव किया मानो उनका एक मित्र खो गया है। "प्यारे दोस्त" शीर्षक देकर वह मुझे अपने पत्र लिखते थे, और मैं भी इसी प्रकार उन्हें जवाब देता था, क्योंकि यही उपयुक्त भी था। और इसी अर्थों मे मैं और मेरा परिवार उन्हें हमेशा गिनेगा।

पिछले साल के मार्च मे मैं पहले-पहल गांधीजी से मिला। हिंदुस्तान पहुँचने के बाद मेरा पहला काम उनके पास पत्र

लिखना था कि हम लोग शीघ्र-से-शीघ्र मिलें। और पहले ही मिलन में हमने निश्चय किया कि आगे आनेवाली बड़ी-बड़ी समस्याओं को निपटाने के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाय होगा कि हम हमेशा व्यक्तिगत संबंध रखें।

पिछली बार वह जब मुझसे मिलने आए उसे एक मास का अर्सा हुआ। उस प्रार्थना-सभा के कुछ ही मिनट पहले, जिसमें उन्होंने, जब तक साम्प्रदायिक सद्भावना पूर्णरूप से स्थापित नहीं हो जाती तब तक अपने आमरण अनशन की घोषणा की थी। अंतिम बार हमने उन्हें तब देखा जब मैं और मेरी पत्नी उनसे उपवास के चौथे दिन मिलने गए। पिछले १० महीनों में, जब से हम एक दूसरे को जानते थे हमारे मिलन कभी साधारण भेंट के रूप में नहीं होते थे; वह तो दो मित्रों के बीच बात-चीत का सिलसिला था। और हम एक दूसरे को समझते थे और हममें विश्वास की पर्याप्त मात्रा रहती थी। इस स्मृति को हम अमूल्य निधि समझते हैं।

अहिंसा के दूत और शांति की मूर्ति गांधीजी की मृत्यु अंध-भावना के विरुद्ध संघर्ष करते हुए, एक शहीद की तरह हिंसा द्वारा हुई। यह अंध-भावना हिंद की नवजात स्वतंत्रता के लिये बड़ा खतरा है। गांधीजी ने यह समझा कि राष्ट्र-निर्माण के कार्य में लगने से पहले इस रोग को जड़ से उखाड़ देना अतीव आवश्यक है।

हमारे महान प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने धर्म-

विहीन भौतिक लोकतांत्रिक राज्य का उद्देश्य सामने रक्खा है। ऐसे राज्य द्वारा सामाजिक और आर्थिक न्याय का आधार लिए हुए वास्तविक प्रगतिशील समाज का विकास हो सकता है। गांधीजी की स्मृति में हम जो सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं, वह यह है कि हम अपने दिल, दिमाग और हाथों को ऐसे ही समाज के निर्माण मे लगा दे, जिसका शिलान्यास सस्कार गांधीजी ने अपने जीवन काल में किया था।

यदि गाधीजो की निर्मम और शोकपूर्ण हत्या से चालित ही हम सब अपने भेद भाव भुला सके और सयुंक्तरूप से निरंतर इस प्रयास मे आज और अभी से लग जाय, तो गांधी जी अपनी अतिम और महान्तम सेवा उन लोगों के लिए कर जांयगे, जिनको वे अपने जीवन मे इतना प्यार करते थे।

केवल इसी प्रकार कार्य करने से गाधी जी का आदर्श पूरा हो सकता है, और भारत अपने अतीत के गौरव का सच्चा उत्तराधिकारी वन सकता है।

गांधीजी की हम रक्षा न कर सके !

[पंडित जवाहरलाल नेहरू, प्रधान मंत्री, भारत सरकार]

मैं खुद इस विषय में निश्चय के साथ कुछ नहीं कह सकता कि इस मौक़े पर मेरा या विधान-सभा के किसी दूसरे मेंबर का ज़्यादा कुछ कहना मौज़ूं है या नहीं, क्योंकि निजी तौर पर, और साथ ही हिंदुस्तान की सरकार के प्रधान मंत्री के नाते, मैं बहुत शर्मिंदा हूं कि हम अपने सबसे बड़े खज़ाने की हिफ़ाज़त न कर सके। यह हमारी वैसी ही नाकामयाबी थी, जिस तरह हम पिछले कई महीनों में भोले-भाले मर्दों, औरतों और बच्चों की हिफ़ाज़त करने में नाकामयाब रहे। हो सकता है, जो बोझ और जो समस्या हमारे सामने है, वह हमारे लिये, या किसी भी सरकार के लिये बहुत बड़ी हो। फिर भी उसे हमारी नाकामयबी ही कहा जायगा। और, आज यह हम सबके लिये शर्म की बात है कि वह शक्तिशाली व्यक्ति जिसे हम बेहद इज़्ज़त और प्यार करते थे, इसलिये चला गया कि हम उसकी बराबर हिफाज़त न कर सके। यह मेरे लिये एक हिंदुस्तानी के नाते शर्म की बात है, क्योंकि एक हिंदुस्तानी ने उनके ख़िलाफ़ अपना हाथ उठाया, यह मेरे लिये एक हिंदू के नाते शर्म की बात है, क्योंकि एक हिंदू ने यह बुरा काम किया, और उस व्यक्ति के ख़िलाफ़ किया, जो आज का सबसे

बड़ा हिंदुस्तानी था, और साथ ही इस युग का सबसे बड़ा हिंदू।

विश्व का आकर्षण-केंद्र

हम चुने हुए शब्दों में लोगों की तारीफ करते हैं, और हमारे पास महत्ता को नापने का किसी किस्म का पैमाना भी होता है। मगर हम किस तरह गांधीजी की तारीफ करें, और कैसे उनकी महत्ता को नापें, क्योंकि वह उस मामूली मिट्टी से नहीं बने थे, जिससे हम सब बने हैं। वह आए, काफी लंबे अरसे तक यहाँ रहे और चले गए। इस सभा में उनकी तारीफ करने की जरूरत नहीं, क्योंकि उनको अपनी जिंदगी में इतनी तारीफ मिली, जितनी किसी आदमी को अपने जीवन में नहीं मिली। और, उनकी मौत के बाद के इन दो या तीन दिनों में सारी दुनिया ने उन्हें श्रद्धांजलि दी, उसमें हम और क्या जोड़ सकते हैं? हम उनकी क्या तारीफ कर सकते हैं?—हम उनके बच्चों की तरह रहे हैं। और, शायद उनके सगे बच्चों से भी उनके ज्यादा नजदीक, कम या ज्यादा मात्रा में उनकी आत्मा के बच्चे रहे हैं, फिर हम कितने ही अयोग्य क्यों न हों।

उनका अक्षय स्मारक

एक महान् गौरव-भरा व्यक्तित्व हमसे बिछुड़ गया। जो सूरज हमें गरमी देता था, हमारी जिंदगी को रोशन करता था, वह अस्त हो गया है, और हम अँधेरे में ठंड से काँप रहे हैं। फिर भी वह हमारा इस तरह लाचारी महसूस करना पसंद

नहीं करते। आखिरकार जिस महान व्यक्ति के साथ उतने बरसों तक रहने का हमें सौभाग्य मिला, उस दैवी तेज से भरे हुए महापुरुष ने हमें भी बदल डाला—और जो कुछ हम आज हैं, वह उन्हीं के द्वारा इन बरसों में निर्माण किए गए हैं। उस दैवी तेज से हममें से बहुतों ने एक छोटी-सी चिनगारी ले ली, जिसने हमें शक्ति दी, और कुछ हद तक उनके बतलाए रास्ते पर चलकर काम करने के काबिल बनाया। इसलिये अगर हम उनकी तारीफ़ करते हैं तो हमारे शब्द छोटे पड़ जाते हैं, और कुछ हद तक हम अपनी ही तारीफ़ करते हैं। महापुरुषों के मरने के बाद संगमर्मर और काँसे में उनकी मूर्तियाँ बनाकर उनके स्मारक खड़े किए जाते हैं। मगर दैवी तेजवाले उस व्यक्ति ने तो अपने जीते-जी ही करोड़ों के दिलों को जीत लिया, ताकि हम सब भी कुछ-कुछ उस तत्त्व के हिस्सेदार बन जायँ, जिससे वह बने हुए थे, यद्यपि हम लोग बहुत कम मात्रा में उस तत्त्व को अपने में ला पाए हैं। वह सारे हिंदुस्तान पर छा गए थे। उनका असर सिर्फ़ महलों, चुनी हुई जगहों या सिर्फ़ धारा-सभाओं तक ही नहीं था, बल्कि गाँवों में और उन निचले दरजे के लोगों की झोपड़ियों तक भी फैला हुआ था, जो समाजद्वारा सताए गए हैं। करोड़ों के दिलों में उनका आसन है, और अनंत युगों तक वह वहाँ जीवित रहेंगे।

योग्य अंजलि

तब इस मौके पर हम विनम्र बनने के सिवा उनके और क्या गुण गान कर सकते हैं? हम उनकी तारीफ़ करने लायक नहीं—जिनका हम ठीक तरह से अनुसरण न कर सके, उनकी तारीफ़ हम किस मुँह से करें? उनको शब्दों में लिपटा देना तो उनके साथ अन्याय करना होगा. जब कि उन्होंने हमसे काम, मेहनत और क़ुरबानी की अपेक्षा की हो। उन्होंने लगभग तीस बरसों मे इस देश को त्याग की उस ऊँचाई तक पहुँचा दिया कि इस ख़ास क्षेत्र में उसकी बराबरी करनेवाला और कोई देश नहीं। उनको इसमें सफलता मिली। फिर भी आखिर मे ऐसी बातें हुई, जिनसे उनको बेहद दुःख हुआ, किंतु उनके कोमल चेहरे से कभी मुस्कान नहीं हटी, और उन्होंने कभी किसी को कड़ा शब्द नहीं कहा। फिर उन्हें दुःख तो हुआ ही होगा, इसलिये जिस पीढ़ी को उन्होंने तालीम दी थी, वह नाकाम रही इसलिये कि जो रास्ता उन्होंने हमें बताया था, उसे हमने छोड़ दिया। और, अंत में अपने ही एक बच्चे के हाथ से—क्योंकि वह उसी तरह उनका एक बच्चा है, जिस तरह कोई दूसरा हिंदुस्तानी है—वह मारे गए।

युगों बाद

कई युगों बाद इतिहास इस काल के बारे में अपना निर्णय देगा, जिसमें हम गुजर रहे हैं। वह सफलताओं और असफलताओं के बारे मे निर्णय करेगा—हम तो उसके इतने नज़-

ठीक हैं कि बराबर फ़ैसला नहीं कर सकते, और जो हुआ है, और जो नहीं हुआ है, उसे नहीं समझ सकते। हम सिर्फ़ इतना जानते हैं कि एक महान गौरवशाली व्यक्ति हमारे बीच में था, और अब नहीं है। हम सिर्फ़ इतना जानते हैं कि इस क्षण हमारे सामने अँधेरा है। मगर बेशक इतना ज्यादा अँधेरा नहीं, क्योंकि जब हम अपने दिलों में नज़र डालते हैं, तो अब भी वह जीवित ज्वाला वहाँ देखते हैं, जिसे उन्होंने जलाया था। और, अगर ये जीवित ज्वालाएँ बनी रहती हैं, तो इस देश में अँधेरा न रहेगा, और हम अपनी कोशिशों से, उनके साथ प्रार्थना करते हुए और उनके बतलाए हुए रास्ते पर चलते हुए, इस देश को फिर से उन्नत कर सकेंगे। हम छोटे भले हों, मगर अब भी उनकी सुलगाई हुई आग हमारे भीतर मौजूद है। वह शायद प्राचीन हिंदुस्तान के सबसे महान् प्रतीक थे, और मैं कह दूँ कि हमारी मुरादों के भावी हिंदुस्तान के प्रतीक भी वही थे। हम उस भूतकाल और भविष्य के बीच वर्तमान के खतरनाक किनारे पर खड़े हैं, और सब क़िस्म के ख़तरों का सामना कर रहे हैं। कभी-कभी सबसे बड़ा ख़तरा तब होता है, जब हममें श्रद्धा की कमी होती है, जब हममें निराशा की भावना पैदा होती है, जब हमारा दिल बैठने लगता है, जब हम आदर्शों की उपेक्षा होते देखते हैं, और जब हम उन महान् चीजों को, जिनकी हम चर्चा करते थे, निरी बातों में

उडते और जीवन को एक भिन्न दिशा में जाते हुए देखते हैं ।फिर भी, मुझे पूरा विश्वास है, यह काल जल्दी ही बीत जायगा ।

मौत में और ज्यादा महान्

गांधीजी अपने जीवन में जितने महान् थे, अपनी मौत में उससे भी ज्यादा महान हो गए । और, इसमे मुझे जरा भी शक नहीं कि अपनी मृत्यु से भी उन्होंने उस महान् उद्देश्य की सेवा की है, जिसके लिये वह जीवन-भर काम करते रहे। हम उनके लिये शोक करते हैं, हम सदेव उनके वियोग मे रोते रहेंगे, क्योंकि हम मामूली इंसान हैं, और अपने महान् गुरू को भूल नहीं सकते । मगर, मैं जानता हूँ, वह नहीं चाहेंगे कि हम उनके लिये आँसू बहाएँ । जब उनके प्यारे-से-प्यारे और नजदीक-से-नजदीक के व्यक्ति मरे, तब भी उनकी आँखे गीली नहीं हुईं—उनसे सिर्फ धीरज रखने का पक्का निश्चय और वह महान् मकसद, जो उन्होंने अपने लिये चुना था, पूरा करने की उनकी भावना ही ज्यादा मजबूत हुई । इसलिये अगर हम उनके लिये सिर्फ शोक करते रहेंगे, तो वह हमे उलाहना देंगे । उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने का यह बहुत हलका तरीका है । उसका एकमात्र तरीका यह है कि हम अपना निश्चय जाहिर करे, फिर से प्रतिज्ञा करे, उसके मुताबिक काम करें और उस महान् काम के लिये जिंदगी लगा दे, जिसे उन्होंने अपने हाथ मे लिया था, और इस बड़ी हद

तक चलाया था। इसलिये हमें काम करना है, हमें मेहनत उठानी है, हमें कुरबानी करनी है, और इस तरह कम-से-कम कुछ हद तक उनके योग्य अनुयायी साबित होना है।

नफ़रत और हिंसा की बुराइयाँ

यह वाक़या, यह दुर्घटना सिर्फ़ एक पागल आदमी का ही काम नहीं है। यह हिंसा और नफ़रत के उस निश्चित वातावरण का परिणाम है, जो कई महीनों और कई बरसों से, खासकर पिछले कुछ महीनों से, इस देश में फैला हुआ है। उस वातावरण ने हमें ढँक लिया है, वह हमारे चारों तरफ़ फैला हुआ है। और, अगर हम गांधीजी द्वारा अपने सामने रक्खे हुए मक़सद को पूरा करना चाहते हैं, तो हमें उस वातावरण का सामना करना चाहिए, उससे लड़ना चाहिए, और नफ़रत तथा हिंसा की बुराई को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए।

जहाँ तक हमारी सरकार का संबंध है, मेरा पक्का विश्वास है वह इस समस्या को सुलझाने में कोई साधन और कोई कोशिश बाक़ी न रहने देगी। क्योंकि अगर हम ऐसा नहीं करते, अगर हम अपनी कमजोरी के कारण या किसी दूसरी वजह से, जिसे हम उचित समझते हों, इस हिंसा को और शब्दों से लेखनी से या कामों से फैलाई जानेवाली इस नफ़रत को रोकने के लिये पुरअसर तरीक़े काम में नहीं लाते, तो सचमुच हम इस सरकार में रहने के काबिल नहीं। इतना

ही नहीं, हम सचमुच उनके अनुयायी कहलाने लायक नहीं, और हमसे बिछुड़ी हुई उस महान् आत्मा की तारीफ करने लायक भी हम नहीं हैं। इसलिये इस मौके पर या किसी दूसरे मौके पर, जब हम इस महान् गुरू के बारे में सोचें, तो हमेशा काम, मेहनत और त्याग की भाषा में सोचें, जहाँ-कहीं बुराई देखें, वहाँ उससे लोहा लेने की भाषा में सोचें, और जिस रूप में सत्य को उन्होंने हमारे सामने रक्खा है, उस रूप में उसे पकड़े रहने की भाषा में सोचें। और, अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम चाहे जितने अयोग्य हों, कम-से-कम यह तो कहा जायगा कि हमने अपना फर्ज़ अदा किया, और उस आत्मा को उचित श्रंजलि दी।

गांधीजी चले गए, और सारे हिंदुस्तान में यह भावना फैल गई कि हम किसी सुनसान जगह में अनाथ बनाकर छोड़ दिए गए हैं। हम सबमें यह भावना है, और मैं नहीं जानता कि कब हम उससे पीछा छुड़ा सकेंगे। और, इस भावना के साथ ही हमारे दिल में अभिमान-भरी धन्यवाद की यह भावना भी है कि इस पीढ़ी में पैदा हुए हम लोगों को इस शक्तिशाली व्यक्ति के साथ रहने का मौका मिला। हमारे बाद आनेवाले युगों में, सदियों में और शायद सहस्राब्दियों में लोग इस पीढ़ी के बारे में सोचेंगे जब वह प्रभु का बंदा इस धरती पर था। और, हम चाहे जितने छोटे हों, फिर भी हमारे

333

बारे में, जो उनका अनुसरण कर सके, और जिस पवित्र भूमि पर उनके पाँव पड़े, उस पर चल सके, भविष्य के लोग विचार करेंगे। हम लोग उनके अनुयायी कहलाने के क़ाबिल बनें। हम हमेशा उनके लायक़ बनें।

रचनात्मक कार्य सच्ची श्रद्धांजलि है।

[सरदार वल्लभभाई पटेल, उप प्रधान मंत्री, भारत सरकार]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की असामयिक मृत्यु से उनके कुछ अंतरंग मित्रों को गहरी चोट लगी। कुछ मित्रों ने उस व्यथा से व्याकुल होकर मार्मिक तथा हृदयद्रावक पत्र लिखे हैं। मैं उन लोगों को भारत की इस महान् क्षति के अवसर पर सलाह दूँगा कि वे इस शोक का निवारण महात्माजी के बताए आदर्शों पर चलकर करें।

पूज्य बापू ने हम लोगों के जीवन काल मे जो कुछ भी आदर्श सामने रक्खे थे, उन्हें हम यदि इस समय मनन करें तथा इस महान संकट-काल मे ईश्वर पर भरोसा रक्खे, तो हमे वास्तव मे सान्त्वना प्राप्त हो सकेगी।

राष्ट्र ने इन १३ दिनों मे जिस तरह बापू का शोक-पक्ष मनाया, और जिस धीरता और सहिष्णुता से देश मे शांति स्थापित रक्खी, वह वास्तव मे उल्लेखनीय है। कल राष्ट्र-

पिता के शोक-काल की समाप्ति थी। उस दिन हमें रह-रह-कर याद आ जाती थी कि अभी हमको बापू के अधूरे स्वप्नों को पूरा करना है। यदि हम आज ही से रचनात्मक कार्य-क्रम तथा आपसी कलह को दूर कर एक दूसरे में भाईचारे का संबंध स्थापित करें, तो राष्ट्र-पिता की आत्मा को बड़ी शांति मिलेगी। इस अवसर पर हमें यह सोचकर बड़ा क्लेश होता है कि हम उन अधूरे रचनात्मक कार्य-क्रम को बापू के नेतृत्व में पूरा नहीं कर सकेंगे। इस समय हमको बापू के अमूल्य निर्देश नहीं प्राप्त हो सकेंगे। परंतु क्या हुआ आज बापू यदि हमारे बीच स्थूल रूप में वर्तमान नहीं है, तो हम उनके बताए हुए आदर्शों तथा मार्ग पर चलने का प्रयत्न करेंगे। अपने जीवन-काल में बापू एक स्थान पर रहकर अपनी अमर वाणी से संसार को तृप्त करते थे, परन्तु आज तो वह भारत के प्रत्येक आबालवृद्ध के हृदय में बैठकर अपना अमर संदेश सुना रहे हैं। अत: मैं इन दुखी भाई-बहनों को सलाह दूँगा कि वे एक होकर बापू के अधूरे स्वप्नों को पूरा करने का प्रयत्न करें।

सुनने में आता है, बहुत-से लोग गांधीजी की मूर्तियाँ तथा उनके स्मारक स्वरूप प्रजा-गृह का निर्माण करना चाहते हैं। मैं उन लोगों से अनुरोध करूँगा कि गांधीजी के नाम पर वे इस प्रकार के कार्य न करें। प्राय: सभी लोग जानते हैं कि गांधीजी अपने जीवन-काल में ही इन सब कामों का कितना

भयानक विरोध करते थे। इसके विरोध में गांधीजी ने एक बार नहीं अनेक बार अपने विचार भी प्रकट किए थे। अंत में सब लोगों से अनुरोध करूंगा कि वे इस प्रकार का कार्य कर व्यर्थ में धन का दुरुपयोग न करें। गांधीजी के आदेशों का अनुकरण करना तथा उनके अधूरे रचनात्मक कार्यों को पूरा करना ही बापू के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी इस तरह हम गांधीजी की प्रतिमूर्ति प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्थापित पायेंगे।

कठिन परीक्षा का समय

[देशरत्न डॉक्टर राजेंद्रप्रसाद, कांग्रेस प्रेसिडेंट]

महात्मा गांधी का पार्थिव शरीर हमारे बीच अब न रहा। उनके चरण अब स्पर्श करने को हमे नहीं मिलेंगे। उनका वरद हस्त हमारे कंधो पर अब थपकियां नहीं दे सकेगा। उनकी मधुर वाणी अब हमें सुनने को नहीं मिलेगी। उनकी आंखे अब अपनी दया से हमें सराबोर नहीं कर सकेंगी। पर उन्होंने मरते-मरते भी हमे बताया है कि शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। यद्यपि उनकी आत्मा शरीर से पृथक् हो चुकी है, फिर भी हमारे कार्यों की अच्छाई या बुराई उसके निरीक्षण के परे नहीं है। जो कुछ उन्होंने अधूरा छोड़ा है, उसे हमे

पूरा करना है, और उनकी पवित्र स्मृति बनाए रखने का यही एकमात्र उपाय है। उनके खुद के कार्य तथा उनका अद्वितीय व्यक्तित्व ही उन्हें अमर बनाने के लिये काफी है, उनके स्मारक बनाने की कतई जरूरत नहीं जान पड़ती। लेकिन फिर भी मनुष्य को अपने सतोष के लिये कुछ करना ही पड़ता है।

अतः यह सुझाव रक्खा गया है कि सभी रचनात्मक कार्य, जिनका गांधीजी ने अपने जीवन-काल में बहुत प्रचार किया, और खुद बड़ी लगन के साथ उस पर अमल करते रहे पूरे उत्साह और लगन के साथ किए जायँ। उनका सत्य और अहिंसा का सिद्धांत इसी रचनात्मक कार्य-क्रम द्वारा विकसित हुआ। हमें इसी को चलाना है, इसीका प्रचार करना है। इसीलिये कांग्रेस की कार्य समिति ने देश के लोगों से अपील की है कि सब लोग अपनी कमाई में से कम-से-कम दस दिनों की कमाई गांधी-स्मारक कोष में दें।

अब मैं इस हृदय-विदारक दुर्घटना के संबध में अपने विचार बतलाना चाहता हूँ। आखिर यह घोर कुकृत्य क्यों हुआ? क्यों दुनिया में अहिंसा का सबसे बड़ा पुजारी क्रूर हिंसा का शिकार हुआ? हमारे देश में इधर एक अरसे से सांप्रदायिक भावनाएँ खूब उत्तेजित की गईं और सांप्रदायिक भेद बहुत उग्र किए गए। इसी के फल-स्वरूप यह दुर्घटना हुई।

गांधीजी ने उपर्युक्त घटना के आंदोलन के विरोध में अपनी

सभी ताक़त लगा दी थी। जो काम वह अपने जीवन में पूरा नहीं कर पाए, उनकी शहादत के बाद उसे पूरा करना हमारा कर्तव्य है। क्या हम कभी कल्पना भी कर सकते हैं कि गांधीजी हिंदुओं या उनके धर्म का अहित कर रहे थे? लेकिन संकुचित विचारवालों ने ऐसा ही समझा, और उसी का फल वर्तमान दुर्घटना है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि गांधीजी की हत्या से किस प्रकार हिंदू-समाज या हिंदू-धर्म की रक्षा हुई? मैं तो कहूँगा, हिंदू-समाज के इतिहास में ऐसी दुर्घटना का उदाहरण नहीं मिलेगा—किसी महात्मा की हत्या का तो उल्लेख भी नहीं मिलेगा। यह हिंदू-समाज के इतिहास में पहला अवसर है, जब कि एक हिंदू का हाथ एक महात्मा के खून से रंगा हो। यह ऐसा धब्बा है, जिसे कोई मिटा नहीं सकता। जो गोली लगी, वह गांधीजी के कलेजे में नहीं बल्कि हिंदू-समाज के मर्मस्थल में लगी। इसलिये आज प्रत्येक देशवासी का प्रमुख कर्तव्य है कि वह अपने दिल को टटोलें और देखे कि क्या यह साम्प्रदायिक पाप उसके दिल में भी कोई स्थान रखता है? और यदि रखता है, तो उसे निकाल दे। अगर देश की उन्नति करनी है, तो प्रत्येक व्यक्ति को आत्मविवेचन और आत्मसुधार करना होगा, जिस पर गांधीजी बहुत जोर देते थे। गांधीजी द्वारा निर्दिष्ट सत्य और अहिंसा के ही पथ पर चलकर देश आगे बढ़ सकता है। इसी रास्ते पर चलकर हम, स्वतंत्र हुए लेकिन स्वराज्य की स्थापना तो अभी बाकी है।

कॉंग्रेस-जन, जो गांधीजी का अनुयायी बनने का दम भरा करते थे, समझें कि उनकी सबसे कठिन परीक्षा का समय आ गया है। आज हर कांग्रेस-जन को इसका उत्तर देना है कि गांधीजी की हत्या की उन पर कितनी जिम्मेदारी है। अगर वे गांधीजी की शिक्षा ग्रहण की होती और उसके मुताबिक चलते भी, तो यह राष्ट्रीय संकट उपस्थित न होता। हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक पापों के कारण ही गांधीजी की हत्या हुई।

अगर हम लोग सचमुच 'स्वराज्य' की स्थापना करना चाहते हैं, तो हम सबको अनुशासन, त्याग और सेवा का कठोर व्रत पालन करना होगा। मेरे कांग्रेस के साथियो! आप यह न सोचें कि आप निश्चिंत होकर रह सकते हैं। शांति और बहुलता के युग में भी सृष्टि करने के लिये अभी आपको दुख भोगना और त्याग करना बाकी है। वस्तुत त्याग का वास्तविक समय अब आया है, जब आपके पास कुछ चीज त्याग करने के लिये है।

आज ताकत हमारे हाथों में है। इसका उपयोग अच्छे तथा बुरे, दोनो के लिये हो सकता है। हमे देश की उज्ज्वल परंपरा के अनुकूल कार्य करने का सुनहला मौका मिला है। हमे योग्य स्वामी और योग्य सेवक बनने की कोशिश करनी चाहिए। अंगरेजों के विरुद्ध जब हम लड रहे थे, उस वक्त हमने जो त्याग किए, वे नकारात्मक थे। अब अधिकार-

लिप्सा और भौतिक सुख की लालसा त्याग करने का मौका आया है। गांधीजी की आत्मा हम सबसे ऐसा ही त्याग चाहती है। हमें उम्मीद है, गांधीजी के महान त्याग से हम इस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

भारत-माता का सर्वश्रेष्ठ रत्न खो गया!

[हिज़ एक्सिलेंसी चक्रवर्ती श्रीराजगोपालाचारी]

निस्सन्देह हमने अपना अमूल्य रत्न खो दिया! भारत-माता अपने सबसे बड़े सपूत को गवाँकर, आज अपने दुर्दिन पर बैठकर अविरल आँसू बहा रही है। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि भारत सरकार अपने सबसे कीमती रत्न की रक्षा करने में अपना कर्तव्य पालन न कर सकी। भगवान को महात्मा गांधी की आवश्यकता थी। उसने उन्हें अपने पास बुला लिया। किसी पर दोषारोपण करना व्यर्थ है।

मैंने सोचा भी न था कि मुझे ऐसे अवसर पर आपसे बोलना पड़ेगा। मैं चिन्तित, विक्षिप्त और शोकाकुल हूँ, और आपको मूर्ख भी जँच सकता हूँ। जब हृदय में दुःख भरा हो, बोलना दूभर हो जाता है। दुःख प्रकट करने का एकमात्र उपाय बालक के रोने ही में है।

मैं ३१ जनवरी को यमुना के किनारे पहुँचा, और अपने

प्यारे नेता की चिता जलते हुए देखी। वहाँ सरोजिनी देवी, मौलाना साहब और जवाहरलाल मौजूद थे। हम सब एक दूसरे को हृदय लगाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते थे। कुछ सप्ताह पहले जब महात्माजी ने उपवास किया था, सारा देश डर से कॉप उठा था। महात्माजी ने दुःख के बीच उपवास शुरू किया, पर समाप्ति अति प्रसन्नता के साथ की। वह भारत के सेवा कुछ और अधिक दिन करना चाहते थे। जब उन्होंने भारत की दशा सुधरते देखी तो वह उतनी ही प्रसन्नता से नाच उठे, जैसे वाल्मीकि के सिर पर चिड़ियों की युगल जोड़ी।

अब भारत-माता अपने सबसे प्रिय साथी को खोकर जमीन पर पड़ी तड़प रही है। जितना अधिक महात्माजी हम सबको प्यार करते थे, उतना अधिक कोई भी अपनी प्रेमिका को प्यार नहीं करता। जब व्याध ने चिड़िया को मार दिया, वाल्मीकि दया और करुणा से थर्राकर बोल उठे—'ऐ व्याध! तुझे पृथ्वी पर कभी शान्ति न मिले।" जिस भाव से ये शब्द कहे गए थे उन्हीं से रामायण की रचना हुई। हमारा इतिहास भी उसी काल और समय को व्यक्त करते हुए लिखा जाना चाहिए, जो भारत-माता ने गांधीजी के हत्या के वक्त सहन किया। ईश्वर करे दिल्ली की दुर्घटना हमे उत्साह और प्रकाश दे कि हम अपने भविष्य के इतिहास की रचना कर सकें।

गौरवमय मृत्यु

क्या हम महात्माजी के लिये रो रहे हैं? महात्माजी मुझे अतीव प्रिय थे, पर मैं उनके लिये शोक नहीं करता। वह प्रार्थना सभा में भजनार्थ जा रहे थे। वह अपने राम से बोलने जा रहे थे। उन्हें कुछ देर हो गई थी, अत: वह जल्दी जल्दी चल रहे थे। महात्माजी शय्या पर नहीं मरे, और न उन्होंने डॉक्टर को बुलाया, और न पानी माँगा। उनकी मृत्यु खड़े-खड़े हुई, बैठे हुए भी नहीं। वह उस समय मरे, जब वह अपने राम से बात करने जा रहे थे, और राम ने उन्हें प्रार्थना-सभा में पहुँचने के पहले ही उठा लिया। प्रार्थना-सभा में देर से जाने के कारण नष्ट हुए समय को उन्होंने पूरा कर लिया, और वह सीधे राम के पास चले गए। अतः हम उनके लिये क्यों रोवें? हमें अपने लिये दुःख करने का काफी समय है। सुकरात अपने कर्मों के लिये मरा, और, ईसा मसीह अपने धर्म के लिये। हमें यकीन नहीं था कि हमें ऐसा कोई अन्य उदाहरण मिलेगा। "घृणा को प्रेम से जीतो।" अपने जीवन-भर महात्माजी ने यही उपदेश दिया, और वह मारे गए, क्योंकि उन्होंने प्रेम का संदेश दिया।

ईश्वर अल्ला तेरे नाम;
सबको सन्मति दे भगवान!

यह उन्होंने रोज प्रार्थना की, और इसीलिये वह मारे गए।

वह इसलिये मारे गए कि उन्होंने उपदेश किया कि सभी धर्म एक हैं, और सभी नाम ईश्वर के हैं। हमें रोने का कोई कारण नहीं। हमें अभिमान होना चाहिए, और उनके योग्य। वह सभी के मित्र और प्रेमी थे। वह कृष्ण भगवान् के समान थे, और जैसे कृष्ण भगवान् एक व्याध के तीर से मारे गए, उसी प्रकार हमारे नेता की भी मृत्यु हुई! हमे रोना-धोना छोडकर अपनी कमजोरियों को दूर करना चाहिए।

इसमें कोई शक नहीं कि आज हमसे हमारा सबसे बड़ा पथ-प्रदर्शक तथा भारत-माता का सबसे बडे-से-बड़ा लायक सपूत छिन गया। आज हम अनाथ हो गए हैं। अँधेरे में हैं, पर संतोष है कि यदि हम पूज्य बापू के बताए मार्गों पर चलते रहे, तो उनकी आत्मा हमे प्रकाश दिखाएगी, हमें ठीक मार्ग पर ले चलेगी। और, पूज्य बापू के बताए मार्गों पर चलना ही उनके प्रति सबसे बड़ी और सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

राष्ट्र-पिता गांधी

[हर एक्सिलेंसी श्रीमती सरोजिनी नायडू]

आज मेरे बोलने का अवसर नही है। संसार कई भाषाओं में पहले बोल चुका है, और इसने सिद्ध कर दिया है कि

महात्मा गांधी विश्व-मानव थे। आदेश, भलाई और शांति की भावना रखनेवाले सभी उनकी श्रद्धा और पूजा करते थे।

गांधीजी के पहले अनशन, जो उन्होंने हिंदू मुस्लिम-एकता के लिये किया था, मे मैं भी उनके पास उपस्थित थी। इस अनशन के प्रति समस्त राष्ट्र की सहानुभूति थी। गांधीजी का अंतिम अनशन भी हिंदू-मुस्लिम-एकता के लिये ही था, परंतु इस अनशन में सारा देश उनके साथ नहीं था। इस समय देश मे इतनी कटुता घृणा और फूट उत्पन्न हो गई थी और देश के विभिन्न धर्मों के सिद्धांतों के प्रति कुछ लोगो की इतनी अश्रद्धा हो गई थी कि कुछ ही लोग, जो गांधीजी को समझते थे, उनके अनशन का अर्थ समझ सके। हिंदू-जाति के दुर्भाग्य से हिंदू जाति के आज तक के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष हिंदू की हत्या एक हिंदू के ही हाथ हुई। महात्मा गांधी ही एकमात्र ऐसे हिंदू थे जो हिंदू-धर्म के सच्चे आदर्शों और सिद्धांतों पर चलते थे।

हममे से कुछ का उनसे इतना निकट का संपर्क था कि हम लोगों का और उनका जीवन एक-सा हो गया था। वास्तव में हममे से कुछ उनके साथ ही मर गए। सचमुच ही उनकी मृत्यु से हममे से कुछ का तो अंगच्छेद हो गया क्योंकि हमारा रक्त, नस हृदय आदि सभी उनके जीवन से ही मिले हुए थे। किंतु यदि हम निराश हो गए, यदि हम यह मान बैठे कि उनकी मृत्यु से अब कुछ रहा ही नहीं, तो हम भगोड़ों की तरह मारे जायँगे।

गांधीजी के प्रति अपनी श्रद्धा और विश्वास का अर्थ ही क्या होगा, यदि अपने बीच से उनके शरीर-मात्र के हट जाने से हम यह समझ बैठे कि अब तो जीवन मे कुछ रहा ही नहीं। क्या हम उनके उत्तराधिकारी, उनके महान् आदर्शों के अनुयायी के रूप मे जीवित नहीं हैं? निजी तौर से दुख मनाने का समय अब नहीं रहा, और इसी तरह छाती और सिर पीटने का भी समय नहीं है। अब तो यहीं पर खडे होकर यह कहने का समय है कि जिन लोगो ने महात्मा गांधी की अवज्ञा की है, उन्हें हम चुनौती देते हैं।

हम लोग गांधी जी के जीवित प्रतीक हैं। हम उनके सैनिक हैं, और संसार मे उनकी पताका को फहराते हुए लेकर चलनेवाले हैं। हमारी पताका सत्य की है, अहिंसा हमारी ढाल है, और हमारी तलवार उस आत्मा की बनी है, जो बिना रक्तपात के विजय पाती है। क्या हम अपने मालिक के पद-चिह्नों पर नहीं चलेंगे, क्या हम अपने पिता के आदेश नहीं मानेंगे? क्या हम उनके सैनिक नहीं रहेंगे, और उनकी लडाई में विजय नहीं प्राप्त करेंगे? क्या हम महात्मा गांधी के संदेश को पूरा करके संसार को नहीं देंगे? हालाँकि उनकी वाणी अब सुनने को नहीं मिलेगी, फिर क्या कोटि-कोटि मुखों से उनका संदेश नहीं सुना सकते? और न सिर्फ इस समय के संसार को, वरन् पीढी-दर-पीढ़ी आनेवाले संसार को उनका संदेश नहीं सुनाएगा?

आज से ३० वर्ष से भी अधिक पहले मैंने जिस प्रकार की प्रतिज्ञा की थी, उसी प्रकार की प्रतिज्ञा संसार के सामने आपके साथ-साथ फिर कर रहा हूँ कि महात्मा की सेवा में हम जुट जायँगे। मृत्यु है क्या? मेरे अपने पिता मर गए, और मरने के पहले उन्होंने कहा कि जन्म तो है, परंतु मृत्यु नाम की कोई चीज नहीं है। आत्मा ऐसी है, जो सत्य के ऊँचे-से-ऊँचे स्तर का अनुसंधान करती है।

महात्मा गांधी, जिनका क्षीण शरीर आग में जलकर समाप्त हो गया मरे नहीं हैं। ईसा की तरह वह तीसरे दिन पथ-प्रदर्शन, प्रेम, प्रेरणा और सेवा के लिये देशवासियों और संसार की पुकार पर फिर उठेंगे।

यह बहुत ही ठीक हुआ कि दिल्ली में ही उनका अंतिम संस्कार हुआ, जहाँ सम्राटों के अंतिम संस्कार हुए हैं, क्योंकि वह सम्राटों के शिरोमणि थे। यह भी ठीक ही हुआ कि एक महान् योद्धा की भाँति पूर्ण सम्मान से शांति-दूत श्मशान-भूमि पहुँचाए गए। युद्ध के संचालन करनेवाले सभी योद्धाओं में यह छोटा मनुष्य कहीं अधिक बड़ा योद्धा और सबसे बहादुर और सभी का सच्चा मित्र था। दिल्ली इस महान् क्रांतिकारी का केंद्र और पुण्य स्थान बन गई है, जिसने इस गुलाम देश को विदेशी बंधन से मुक्त किया, और इसे स्वाधीनता और अपनी पताका दी।

क्या मेरे नेता, मेरे पिता की आत्मा शांति से विश्राम नहीं

लेगी, विश्राम नहीं करेगी? मेरे पिता विश्राम नहीं करते। हमें अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने दो। हम लोगों को, जो आपके उत्तराधिकारी, वंशज, छात्र आपके स्वप्नों के अभिभावक और भारत के भाग्य-विधाता हैं, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने की शक्ति दो।

प्रकाश बना रहेगा, और उसकी विजय होगी!

[योगी अरविंद]

हम जिस वातावरण से घिरे हुए हैं, उसमें मैं चुप रहना ही श्रेयस्कर समझता हूँ, क्योंकि ऐसी दुर्घटना के बीच शब्दों का असर नहीं होता। परंतु इतना तो मैं कहूँगा कि जिस प्रकाश ने हमें स्वतंत्रता दिलाई, यद्यपि अभी तक वह एकता नहीं दिला सकी, अब भी प्रज्ज्वलित है, और तब तक प्रज्ज्वलित रहेगी, जब तक वह विजय न प्राप्त कर ले। मुझे निश्चित विश्वास है कि इस राष्ट्र और जनता का भविष्य महान् और एकतामय है। वह शक्ति, जिसने इतनी कठिनाइयों एवं विभीषिकाओं से निकालकर हमें आगे किया, अवश्य ही, चाहे जितने भयंकर संघर्षों और त्याग के बीच से लेकर, उस महान् नेता की मृत्यु के समय अंतिम इच्छा के उद्देश्य की प्राप्ति कराएगी। एक आज़ाद और संयुक्त भारत अवश्य होगा, और भारत-माता अपने बालकों को एकत्र करके

एक राष्ट्र एक सूत्र में बांधकर एक महान देश का सृजन अवश्य करेंगे।

उनकी आत्मा हमारे साथ रहेगी

[भूतपूर्व कांग्रेस प्रेसिडेंट आचार्य्य कृपलानी]

महात्माजी सशरीर हमारे बीच नहीं रहे, परंतु हम केवल उन्हीं के बताए रास्ते पर चलेंगे, और उनकी दी हुई रोशनी में काम करें, जिससे हमारा रास्ता प्रकाशित हुआ है। उनकी आत्मा बराबर हमारे साथ रहेगी।

गांधीजी की मृत्यु से यही सिद्ध होता है कि व्यक्ति और समूह के लिये वह जिस प्रकार के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत पर जोर देते रहे हैं, उसे स्वीकार करने के लिये अभी संसार तैयार नहीं है। सत्य और अहिंसा का मार्ग अब भी शहीदों का ही रास्ता है, जैसा कि इतिहास में बराबर रहा है। हाल की घटनाओं से उनके नैतिक विश्वास की अग्नि-परीक्षा हुई, जिसमें वह बिलकुल ही खरे निकले। जीवन के सबसे अधिक संकट-काल में भी वह अपने सिद्धांतों पर अटल रहे, और कभी जरा भी नहीं डिगे।

गांधीजी का बराबर यही मत रहा है, और नैतिक नियम का तकाज़ा है कि प्रत्येक को अपनी व्यक्तिगत गलती को बढ़ा-चढ़ा-

कर बताना और दूसरे की ग़लती को घटाकर देखना चाहिए। इस प्रकार नैतिक नियम का सच्चे अर्थ मे पालन किया जा सकता है। और, इस प्रकार पूरा होने पर उसका परिणाम बहुत अच्छा होगा। जो मनुष्य और राष्ट्र नैतिक नियम के प्रकाश में काम करता है, वह कभी विपत्ति मे नहीं पड़ सकता। जहाँ धर्म है, वहाँ विजय भी है।

गाधीजी का प्रेम मानवता का प्रेम था। उन्होंने हिंदू या मुस्लिम या सिक्ख और हिंदुस्तानी और ग़ैर हिंदुस्तानी मे किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं रक्खा। उनके लिये मनुष्य-मात्र समान थे। यह हमारा सौभाग्य था कि हमारी दासता और पतन के युग मे भी हमारे बीच ऐसे महापुरुष का जन्म हुआ। आज हमारे लिये यह अपमान और लज्जा की बात है कि जिसे विदेशी विरोधियों तक ने बचाया, उसकी हत्या अपने एक देशवासी ने ही की, जब कि हमारे लिये गाधीजी ने बुद्धिमत्ता के साथ समुचित रूप से अनेक सेवाएँ कीं।

जिस मनुष्य ने यह कुकृत्य किया, उसे पता नहीं कि उसने क्या किया। उसने राष्ट्र-पिता और उनकी आत्मा की हत्या कर डाली। महात्माजी के निधन से देश ऐसे समय मे अनाथ हुआ है, जब कि उनकी बुद्धिमत्ता और नैतिक सलाह की सबसे अधिक आवश्यकता थी। एकमात्र वही ऐसे पुरुष थे, जिनके कारण ग़ुलामी मे भी भारत की प्रतिष्ठा थी। गाधी-जी ने हमारे सभी भीतरी मतभेदों को दूर किया। निजी

और सार्वजनिक कठिनाइयों में हम बराबर उन्हीं के पास दौड़ जाते थे। उनके लिये जीवन-मरण समान था। वह बराबर कहते थे कि मैं ईश्वर के हाथों मे हूँ। उनके लिये शरीर कुछ नहीं, आत्मा सब कुछ थी। उनकी आत्मा अब शरीर के बंधन से मुक्त हो समस्त संसार में व्याप्त हो गई है।

उनको गुरु माननेवाले और अपने योग्यतानुसार उनके गुणों से लाभ उठानेवाले हम सबों का आज कर्तव्य है कि हम अपनी दलबंदियों को खत्म कर दें, और एक साथ मिलकर ऐसा काम करें, जिसमे उनकी कल्पना का स्वराज्य प्राप्त हो—इस स्वराज्य की उन्होंने बुनियाद तैयार कर दी है। उनके आशीर्वाद हमारे लिये बने रहें, और ईश्वर हमे शक्ति दे कि हम ईमानदारी के साथ गांधीजी के उद्देश्य को लेकर आगे बढें। गांधीजी के उद्देश्य के दायरे में कोई खास सिद्धांत, संप्रदाय या देश नहीं है, संपूर्ण मानवता उसमें निहित है।

सत्य एवं प्रेम की दैवी ज्योति

[सर सर्वपल्ली राधाकृष्णन्]

गाधीजी की हत्या के समाचार से हम स्तब्ध हो गए। अविश्वसनीय एव अविचारणीय घटना घटित हो गई। हमारे युग के सर्वविशुद्ध, सर्वोन्नतकारी तथा सर्वोत्साहवर्धक रत्न का इस प्रकार एक विक्षिप्त व्यक्ति के क्रोध का शिकार होना भी विधि की विडंबना ही है। गाधीजी आज नहीं हैं, पर सत्य एवं प्रेम की दैवी ज्योति से निस्सरित होनेवाला उनका प्रकाश कभी बुझ नहीं सकता।

महात्मा गाधी प्राचीनता की अनुपम आभा के अति निकट पहुँच गए थे ; उस प्राचीनता के नहीं, जो कि मूर्खता-पूर्ण है, बल्कि जो गौरवमय है।

उस उच्चतम आदर्श से, जिसका प्राप्त करना मानव-जाति के लिये संभाव्य है, व्याप्त तथा प्रभावित हो ईश्वर-जनित सत्य को निर्भयता से प्रचारित करते हुए लालसा और मूर्खता के उस अटूट गढ को, जिसे तोडना असभव-सा ही प्रतीत होता था, विध्वस करने के लिये लगभग अकेले ही सघर्ष करते हुए अनत कठिनाइयों का उस अपूर्व दृढनिश्चयता से, जो खतरों और दूसरो की हंसी की परवाह नहीं करती सामना करते हुए महात्मा गाधी ने इस अविश्वासी ससार को एशिया की आत्मा मे निहित सभी गौरवमय आदर्शों की भेंट की है।

महात्मा गाधी के पथ-प्रदर्शन से एशिया का महान काल

अपना नवीन युग प्रारंभ करेगा, और उसका स्वर्ण-काल पुनः लौटेगा। महात्मा के जीवन और कार्य-कलाप में एशिया का ही नहीं, वरन् संपूर्ण संसार का स्वप्न निहित है। हिंसा, क्रूरता तथा अशांति के गढ़े में गिरने से संसार को बचाने का एक ही मार्ग है महात्मा गांधी के सिद्धांतों का अनुसरण करना।

शानदार मृत्यु

[महापंडित श्रीराहुल सांकृत्यायन, सभापति हिं० सा० सम्मेलन]

गांधीजी ने अपने जीवन की प्रत्येक घड़ी परोपकार में लगाई, और उनकी मृत्यु व्यर्थ न जायगी। ७८ वर्ष तक उनका दुबला-पतला शरीर बुद्ध के शब्दों में 'शकट' का प्रतीक था। उसके लिये आराम का समय आनेवाला था। परंतु गांधीजी एक असाधारण शय्या पर हैं। उनकी मृत्यु उतनी ही शानदार है, जितना उनका जीवन।

सदियों तक गांधीजी का स्थान शायद रिक्त रहेगा। शब्द के असली अर्थों में गांधीजी हमारे राष्ट्र-पिता थे। इस देश के नवजीवन में उनका सबसे बड़ा हाथ है। भारतवर्ष कभी न मरेगा, गांधीजी की कभी मृत्यु न होगी।

गांधीजी ने हमें मार्ग दर्शाया है। उन्होंने हमें दीपक और प्रकाश दोनों दिया है। यदि ऐसा न होता, तो गांधीजी का पूरा जीवन ही व्यर्थ जाता।

निर्वाण की अंतिम शय्या पर पड़े हुए बुद्ध की भाँति हमारे राष्ट्र-पिता ने भी कामना की—"आत्मविश्वास रक्खो। स्वयं अपने मार्ग-दर्शक प्रकाश बनो।"

अपनी सदी के सर्वश्रेष्ठ पुरुष

[डॉक्टर सच्चिदानंद सिन्हा]

मानव-इतिहास की विचित्र बात है कि विभिन्न युगों और विभिन्न देशों में बर्बर जाति ने ही नहीं, सभ्य जातियों ने भी अपने मान्य हितचिंतकों को सताने के लिए अथवा मारने के लिये हिंसा के साधन का प्रयोग किया। उदाहरणार्थ ईसा के ३६६ वर्ष पूर्व की सबसे अधिक सभ्य जाति एथंस-निवासियों-ने अपने सर्वश्रेष्ठ जीवित दार्शनिक सुकरात को जहर खाकर मर जाने के लिये बाध्य किया। तीन सदी बाद फिलिस्तीन के यहूदियों ने अपने एक महान् पुरुष का प्राणांत किया। सातवीं सदी में हजरत मुहम्मद अपने मक्का निवासियों द्वारा बुरी तरह सताए गए। अंत में उन्हें अपना शहर छोड देना पड़ा। तब से बारह सदी बाद, पिछले एक सौ वर्षों के बीच, सन् १८६५ में, अमेरिका के प्रसिद्ध प्रेसीडेंट एब्राहम लिंकन की हत्या हुई, आधुनिक रूस के निर्माता लेनिन पर, सन १९१८ में, गोली चलाई गई और सन् २४ में गोली के बिना निकले उसकी मृत्यु हुई, आयरलैंड के बड़े नेता माइकेल कॉलिंस, जिन्होंने अपने देश की आजादी प्राप्त की, गोली द्वारा सन

१६२२ में मारे गए। और, अब अहिंसा के सबसे सच्चे प्रतिनिधि महात्मा गांधी की हत्या एक भारतीय द्वारा जनवरी, ४८ में हुई। ये सब लोग अपने सिद्धांत और विश्वास के कारण मारे गए। ये इतिहास में अमर हैं।

महात्मा गांधी को विश्व ने एक मत से न केवल भारत को गुलामी से छुटकारा दिलानेवाला ही, वरन मानव-जाति का महान् नेता और अपने युग का सर्वश्रेष्ठ पुरुष माना है। जो श्रद्धांजलियाँ, गांधीजी के प्रति उनके जीवन-काल में और मुख्यतया मृत्यु के बाद संसार के कोने-कोने से, हर देश, हर राज्य, सम्राटों, गवर्नर जेनरलों, प्रधान मंत्रियों, प्रेसीडेंटों आदि द्वारा अर्पित की गई हैं, उनमें एक स्वर से महात्माजी को महान् विश्व-नेता कहा गया है, जिनकी मृत्यु से न केवल भारत की ही, अपितु समस्त विश्व की क्षति हुई है।

भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महात्माजी की सफलता इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से लिखी हुई है, जो कभी नहीं मिटाई जा सकती। परंतु हमें उनके मानवीय गुणों को न भूलना चाहिए, जिन्होंने समस्त विश्व का ध्यान उनकी ओर आकर्षित कर लिया था। महात्माजी ने प्राचीन धर्मशास्त्रों का प्रचुर मात्रा में मनन किया, और उनमें से अपने प्रेम और अहिंसा के सिद्धांतों को निकाला। प्रेम, जो उनके अर्थों में अहिंसा का ही हृदय है, हिंदुत्व के प्रथम अवतरण से ही है। प्रहार का बदला प्रहार से मत दो, न गाली का गाली से, न

क्षुद्र चालाकी का बेईमानी से, बल्कि "प्रहार और गाली का बदला आशीर्वाद से चुकाओ," यह हमने ऋग्वेद में पढ़ा। "अच्छे हों, अथवा बुरे, हम सबसे प्रेम करें।"—हमे अथर्व वेद ने पढाया। और, अंत में भगवद्‌गीता मे कहा गया है—"वही ईश्वर का प्यारा है, जो किसी से द्वेष नहीं रखता, और सबसे सहानुभूति और मित्रता रखता है।"

बुद्ध और ईसा के उपदेशों से महात्माजी के उपदेशों की बड़ी समानता थी, यह हमे धम्मपद पढ़ने से ज्ञात होता है। प्रेम, अहिंसा अथवा क्षमा सभी धर्मों की जड़ मे हैं, और महात्माजी का पूरा जीवन इन्हीं के प्रयोग मे व्यतीत हुआ, जैसा कि एक अमेरिकन पादरी ने कहा था—"ईसा के उपदेशों की सबसे अच्छी टीका प्रथम बार, भारत में, महात्मा गांधी के आचरणों और जीवन में लिखी गई है।"

ऐसे थे हमारे महात्माजी, जिनकी आध्यात्मिक और धार्मिक महत्ता एवं अहिंसा पर आधारित अभूतपूर्व राजनीतिक नेतृत्व समस्त संसार के प्रतिनिधियों ने स्वीकार किया है। भारत का यह महान् अद्वितीय नेता ऐसा था, जिसकी समानता इतिहास मे कोई नहीं कर सकता। बिना प्रतिवाद के यह कहा जा सकता है कि भविष्य के इतिहासकार उन्हें मानव-जाति का एक सर्वश्रेष्ठ सुधारक और भारत का सर्व-शक्तिमान् राष्ट्र-निर्माता मानेंगे।

दशम अवतार

[डॉ० पट्टाभि सीतारमैया, भूतपूर्व प्रधान, अखिल भारतवर्षीय देशी राज्य-प्रजा-परिषद्]

महात्मा गांधी अपना कार्य संपन्न कर चुके थे। हम जब उनकी मृत्यु पर, जो निस्संदेह अकाल न थी, लेकिन अस्वाभाविक जरूर थी, शोक मनाते हैं, तो इस बात को समझें कि कार्य समाप्त हो जाने के बाद अवतार को अपने कार्य-क्षेत्र में रहने की जगह नहीं रह जाती। कलि के इस युग में संसार में अवतीर्ण होनेवाले अवतारों में वह दसवें थे।

गत जून के बाद से उन्हें ऐसा अनुभव करने का कारण मिला कि अब उनकी आवश्यकता नहीं रह गई है, और समाज तथा नीति-संबंधी उनके विचार और उनके इर्द-गिर्द लोगों द्वारा स्वीकृत विचारों के बीच भेद की खाई गहरी होती जा रही है। निर्वाण के अवसर पर अतीतकाल में सभी अवतारों को ऐसे संकट का सामना करना पड़ा है। गांधीजी का नवीनतम उपदेश था कि हिंदुस्तान अभी तक मुक्त नहीं हुआ है, वह केवल स्वतंत्र हुआ है। हिंदू और मुसलमानों के बीच पूर्ण एकता स्थापित करने का कार्य उन तीन कार्यों में से एक है, जिनका बीड़ा उठाकर गांधीजी ने राष्ट्र का नेतृत्व ग्रहण किया, और उसी की पूर्ति में, जो आज अपूर्ण है, उन्होंने अपनी जान दे दी। क्या हम आशा करें कि

उनके परिश्रम का फल, जिसको देखने के लिये वह जिंदा नहीं रहे, उनके अनुयायियों के श्रम को सार्थक करेगा, और अपने को अधिक उच्च बनाकर और अपना सुधार कर उस महान् दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करेगा।

नए युग के अग्रदूत

[श्रीके० एम्० मुंशी, भारतीय एजेंट जेनरल, हैदराबाद]

महात्मा गांधी ने हिंदुस्तान को एक राष्ट्र के रूप मे सगठित किया। उन्होंने इसे एक राष्ट्रीय भाषा प्रदान की। इसके लिये उन्होंने नई परपरा की स्थापना की। उन्होंने शासन के लिये एक स्वरूप का निर्माण किया। राष्ट्रीय आदोलन को स्वतन्त्रता की मंजिल तक पहुँचाया, और स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद जब वह मरे, तो उन्हें राष्ट्र की श्रद्धांजलि मिली।

उनके शब्द हिंद-सरकार को प्रभावित करने के लिये काफ़ी थे। और, ये सब उन्होंने सच्ची लोकतान्त्रिक पद्धति द्वारा, अपने मत को लिखकर या कहकर और साथ ही दुश्मनों को जरा भी नुक़सान पहुँचाए बिना, प्राप्त किए।

लेकिन ये सफलताएँ, जो उन्हे दुनिया के सर्वोच्च राजनीतिक उद्धारक घोषित करती हैं, उनकी नैतिक सफलता के सामने

नगण्य है। उन्होंने गुलामों को आदमी बनाया। समाज से छुआछूत दूर की। दूसरे जगत की कल्पना करने की प्रवृत्ति को, जो देश का रोग बन गई थी, उन्होंने मिटाया। उन्होंने लोगों में अपनी संस्कृति के प्रति गौरव का और अपनी शक्ति में विश्वास का भाव प्रतिष्ठित किया, जिसे हम लोग खो चुके थे। हिंदुस्तान की अमर संस्कृति को उन्होंने फिर से जीवित कर उसे विश्व-विजय के पथ पर पहुँचाकर छोड़ दिया। गांधीजी नए युग के अग्रदूत थे।

आसक्ति, भय और क्रोध पर निरंतर विजय प्राप्त कर वह जीवन-पर्यंत अपने व्यक्तित्व को उन्नत करते रहे। वह इस बात के जीवित प्रमाण थे कि नैतिक व्यवस्था जीवित व्यवस्था है। उन्होंने अपने को अहिंसात्मक बनाया। दुश्मन अपनी प्रेम-भावना लेकर उनके पास आते थे। उन्होंने सत्य पथ का अवलंबन किया। फल-स्वरूप उनके कार्यों का परिणाम निकला। उन्होंने भोग-लिप्सा का जीवन नहीं व्यतीत किया, फिर भी उनकी शारीरिक स्फूर्ति बनी रही। उन्होंने धन का मोह छोड़ दिया, और धन उनकी उद्देश्य-सिद्धि के लिये बिना माँग प्रचुर परिमाण में उन्हें मिलने लगा। वह ईश्वर में रहते थे, और ईश्वर उनमें।

जिस तरह ईश्वर का अस्त्र बनकर वह जीवित रहे, उसी तरह मरे भी। उनके जीवन का प्रत्येक क्षण ईश्वर की प्रार्थना-भेंट था। उनकी मृत्यु कर्तव्य पूरा हो जाने के बाद

ईश्वराज्ञा का पालन थी। उनके अंत से राष्ट्र सात्वना-विहीन हो गया, दुनिया शोक मे डूब गई और काल-चक्र उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये निश्चेष्ट खड़ा रहा।

हे सम्राट्, ,अग्रदूत और योगी! मेरे पिता और पथ-प्रदर्शक !!—तुम्हारे विना हमारा, हज़ारों का जीवन शून्य है।

गांधीजी का मनुष्य-रूप

[श्रीघनश्यामदास बिड़ला]

गाधीजी का मैंने सत के रूप मे देखा, राजनीतिक नेता के रूप में देखा, और मनुष्य के रूप मे भी देखा। मेरा यह भी खयाल है कि अधिक लोग उन्हें संत या नेता के रूप में ही पहचानते हैं। मैं न तो उनकी राजनीति का अनुगामी रहा, न उनके पीछे साधु वना। इसलिये उनके जिस रूप ने मुझे मोहित किया, वह तो उनका मनुष्य रूप था, न नेता का और न सत का। उनकी मृत्यु पर अनेक लोगों ने उनकी दुख-गाथाएँ गाई हैं, और उनके अनुपम गुणों का वर्णन किया है। मैं उनके क्या गुण गाऊँ? पर वह किस तरह के मनुष्य थे, यह मैं वता सकता हूँ, क्योंकि लोग तो उन्हें जानते हैं—महात्मा के रूप मे या नेता के रूप मे। मनुष्य के रूप मे तो जाननेवाले थोडे लोग हैं। मुमकिन है, सुननेवालों को उनका मनुष्य-रूप कैसा था, इसमें ज्यादा दिलचस्पी हो।

मनुष्य क्या थे, वह कमाल के आदमी थे। राजनीतिक नेता की हैसियत से वह अत्यंत व्यवहार-कुशल तो थे ही, किसी से मैत्री बना लेना, उनके लिये चंद मिनटों का काम था। द्वितीय राउंड टेबिल-कॉन्फ्रेंस में जब वह इंगलैंड गए, तब उनके कट्टर दुश्मन सैमुअल होर से मैत्री हुई, तो इतनी कि अंत तक दोनों मित्र रहे। लिनलिथगो से उनकी न निभी, पर यह दोष सारा लिनलिथगो का ही था, गांधीजी ने मैत्री रखने में कोई कसर न रक्खी।

एकमात्र प्रकाश

[ख़ाँ अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ, सीमा-प्रांत के गांधी]

जब देश बहुत संकट-काल से गुज़र रहा है, ऐसे समय में गांधीजी की मृत्यु सचमुच बड़े ही दुर्भाग्य की घटना है। आज के अंधकारमय दिन में हमारी मदद के लिये वही एक-मात्र प्रकाश की किरण थे। मैं आशा करता हूँ, उनका प्रेम, सत्य और अहिंसा हम सबका सर्वदा पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

ईश्वर के करीब

[डॉक्टर ख़ाँ साहब, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, सीमा-प्रांत]

गाधीजी की मृत्यु से देश ने अपना प्रदर्शक और मानवता ने अपना गुण खो दिया है। वह ईश्वर के इतने करीब थे कि उस कष्ट से बचाने के लिये, जिसका अनुभव वह देश-वासियों के दुःख से पीड़ित होने के कारण कर रहे थे, ईश्वर ने उन्हे वापस बुलाना अच्छा समझा। गांधीजी के पास केवल अपना जीवन बचा हुआ था, जिसकी भेंट वह देश तथा देश-वासियों के लिये कर सकते थे।

भारतीय हिंदू, मुसलमान तथा अन्य जातियों के बीच सच्ची एकता की स्थापना करके ही हम उनकी आत्मा को, जो आज मुक्त है, प्रसन्न कर सकते हैं।

इतिहास की पुनरावृत्ति

[राइट ऑनरेबुल डॉक्टर सर तेजबहादुर सप्रू]

गांधीजी की शहादत से दुनिया-भर से जो शोक और श्रद्धा के सदेश आए, इसमे संदेह नही कि वे मूलतः महात्मा गाधी की बुनियादी मानवता की, जो जाति, धर्म और नस्ल के परे है, स्वीकृति के सूचक हैं।

गत महीनों से हमारे देश में जैसी जैसी दुःखद घटनाएँ हुई हैं, उनसे कितनी ही जिंदगियाँ बर्बाद हुईं, जीवन का सुख

मिट गया, और लगता है, जैसे इन सबका निराकरण असंभव है। इतना ही नहीं, इन घटनाओं की परिणति हुई उस महान् व्यक्ति की हत्या में, जिसने अपनी सेवाओं के बल अपना अभिनव स्थान बना लिया था। यद्यपि मैं इतिहास के निर्माण का और अपने देश एशिया अथवा दुनिया के भविष्य पर गांधीजी के जीवन और सिद्धांतों के प्रभाव का अनुमान लगाने में कोई अर्थ नहीं देखता क्योंकि यह दुनिया के भविष्य पर निर्भर है, फिर भी हम स्वतंत्र हिंदुस्तानियों का अगर अपने भविष्य पर कुछ विश्वास है, और वर्तमान की विपत्तियों पर विजय पाकर उज्ज्वल भविष्य की सृष्टि करने की शक्ति रखते हैं, तो निश्चय ही महात्मा गांधी के जीवन को और देश को स्वतंत्र करने के लिये उनके द्वारा किए गए प्रयासों को हम कदापि भुला नहीं सकते।

न तो मैंने राजनीतिक मुक्ति के संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया, और न इस कार्य में लगे नेताओं से संपर्क स्थापित करने की चेष्टा की। लेकिन गांधीजी सबसे इतने भिन्न थे कि जिन-जिन अवसरों पर मैं उनसे मिला हूँ या उनको मैंने सुना है, वे चित्र मेरे स्मृति-पटल पर स्पष्ट रूप से अंकित हैं। अतीत में एशिया ने अनेक ऐसे मानवतावादी पुरुषों को पैदा किया है, जिनके जीवन की छाप मानवता पर सर्वदा के लिये पड़ी है। एक बार फिर मैं दोहराना चाहता हूँ कि इतिहास के निर्णय का कोई अनुमान नहीं लगा सकता। फिर भी, यह तो

सत्य है कि इतिहास की कभी पुनरावृत्ति होती है, और गांधीजी के बारे मे ऐसा हो सकता है।

गांधीजी और ईसा में समानता

[डॉक्टर एम्० आर० जयकर, प्रमुख लिबरल नेता]

महात्मा गाधी की इस निर्मम हत्या और ईसा के सूली चढ़ाए जाने की घटना में कितनी समानता है—वह समानता, जिसकी महात्माजी अपने और ईसा मसीह के उद्देश्यों मे अत्यधिक सम्मान और चाहना करते थे। वे दोनो शहीद होकर भाई-भाई हो गए है।

हिंदोस्ताँ की मौत

[डॉक्टर सैयद महमूद, विकास-मत्री, बिहार]

गाधी की मौत आज है हिंदोस्ताँ की मौत ,
महरूम हिंद हो गया कल्बो दिमाग़ से ।
तारीख़ ईसवी ये कहो तुम जमीले आह ,
इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से ।

महात्मा गांधी की मौत मुल्क की मौत है। कम से-कम हिंदोस्तान की अखलाकी (आध्यात्मिक) मौत तो जरूर है। दुनिया के अमनोअमान (शांति) की मौत है। सुलह और सलामती (संधि और लोक-प्रियता) की मौत है। अभी उनके व्रत के अवसर पर मोशियेल्वुन ने फ्रांस में कहा था कि दुनिया की आँखे शांति के लिये गांधी की ओर लगी हुई हैं। ऐसी मौत पर हम जिस कदर भी अपना सिर धुनें वह कम है।

लोग कहते हैं कि सब्र करना चाहिए। बेशक, सिवा इसके दूसरा चारा नहीं, लेकिन ऐसी मौत पर क्योंकर सब्र हो, जिस मौत ने एक मुल्क की सारी उम्मीदों का खात्मा कर दिया हो। एक कौम को दरिया के बीच मँझधार में छोड़ दिया हो। यहूदियों की जाति जब मिस्र से चली, तो उसके साथ मूसा-जैसा रहनुमा था। हजरत मूसा उनको हजार सीधा रास्ता बतलाते रहे, लेकिन वह क़ौम उनकी एक न सुनती, जो जी में आता, वही करती। यहाँ तक कि चालीस वर्ष रेगिस्तान में रास्ता भटकती रही, लेकिन फिर भी मूसा का कहना न माना। जिसका परिणाम यह निकला कि सृष्टि ने यहूदियों को हुकूमत से अलग कर दिया, और आज तक वे कहीं शासन न कर सके। मुल्क को आजादी दिलाने के बाद गांधीजी को जिन संकटों का सामना करना पड़ा, और जिस प्रकार हम सबने मिलकर उनका कहा न माना, और उनके बतलाए हुए सीधे रास्ते को छोड़कर अपना-अपना रास्ता अख्तियार किया, उनकी चीख-

पुकार पर जरा कान न दिया, और इस तरह उनको बराबर तकलीफ पहुँचाते रहे—ये सब हाल की घटनाएँ हैं, और सब लोग उनसे जानकारी रखते हैं। आजादी मिलने के कुछ महीने बाद हमने देख लिया कि गाधीजी के बतलाए हुए मार्ग को छोड़कर दूसरा रास्ता अख्तियार करने का परिणाम दूसरा हुआ। हमारे सामने एक भयानक समुद्र आ गया। हर तरफ अँधेरा-ही-अँधेरा था, किसी तरफ कोई रास्ता न था। सिर्फ गांधीजी की रोशनी का एक दिया टिमटिमा रहा था, जिसकी रोशनी में उम्मीद थी कि शायद हमे ठीक रास्ता मिल जाय। लेकिन हमारा दुर्भाग्य! किसी ने उस दिए की रोशनी भी बुझा दी। अब चारों तरफ अँधेरा है। भयानक समुद्र बीच मे उमड़ रहा है। न तो कोई किश्ती है न खेनेवाला। अब हमारे देश के सामने कठिनाइयों का सागर लहर मार रहा है। क्या कहीं ऐसा तो नहीं है कि परमात्मा ने हमारे बुरे कामों से तग आकर यह फैसला कर लिया हो कि यहूदी क़ौम की तरह हमारी कौम को भी हुकूमत से हमेशा के लिये अलग कर दिया जाय। हमने चद ही महीने में दुनिया पर साबित कर दिया कि हम हुकूमत के लायक नहीं। आज से चंद दिन पहले दुनिया हम पर हँसती थी। लेकिन आज दुनिया हम पर लानत भेजती है। बुरी दृष्टि से देखती है। क्या तारीख का सबक फिर से दोहराया तो नहीं जायगा। सुकरात और शम्सतबरेज़ को उनकी सचाई के बदले मे ज़हर का प्याला पीना पडा, और मसूर को

सल्तनते-अब्बासी ने क़त्ल किया। फिर सल्तनते-अब्बासी पर क्या बीता, यह संसार जानता है। दक्खन के बहमनी शासन ने सैयद मौला को क़त्ल किया, और बहुत शीघ्र बहमनी शासन का अंत हो गया।

शाहजादा दारा को औरंगजेब ने क़त्ल कराया, थोड़े ही अर्से बाद मुगल-शासन बाक़ी न रहा। ईश्वर के सामने हम सबको गिड़गिड़ाकर अपने दोष की माफ़ी माँगनी चाहिए, और इस भय से थर्राना चाहिए कि तारीख़ का यह पृष्ठ दोहराया न जाय।

सत्य और अहिंसा का संदेश-वाहक

[सैयद नौशेरअली भूतपूर्व मंत्री, बंगाल]

युग के सबसे बड़े पुरुष महात्मा बड़ी ही दुःखद परिस्थिति में हमारे बीच से चले गए। वह एक उद्देश्य लेकर आए थे, उसी के लिये वह जिए, और मरे। ईश्वर में अटूट विश्वास और मनुष्य के अंतर में, ईश्वरीय शक्ति मे विश्वास कर वह हिंसा-मुक्त समाज का सपना देखते थे। वह स्वयं नैतिक शक्ति के स्रोत थे, और साथ ही हरएक व्यक्ति में इसकी संभावना देखते थे, जो प्रेम, केवल प्रेम से ही प्रस्फुटित हो सकती है। सत्य, अहिंसा और प्रेम से उत्पन्न शांति का उन्होंने संदेश दिया। उनके पहले दुनिया मे ऐसे ही उद्देश्य लेकर दूसरे

व्यक्ति उत्पन्न हो चुके हैं, और विश्व-शांति एवं प्रगति को आगे बढ़ाया है। लेकिन किसी भी दूसरे युग में सभ्यता और मानवता को अपने विनाश का इतना खतरा असत्य और हिंसा से नहीं था जितना आज है। अत शाति के सदेश की फिर से घोषणा युग की माँग थी। इसी को पूरा करने के लिये सत्य और अहिंसा का उद्देश्य लेकर मोहनदास करमचंद गाधी अवतीर्ण हुए। उन्होंने बताया कि आज हमारे समाज का विनाश जिस कारण हो रहा है, वह सत्य, अहिंसा द्वारा दूर होगा। हम लोगों ने उनका शांति-दूत और महात्मा के रूप में स्वागत किया।

हम भारतीय उनके विशेष रूप से ऋणी हैं। हमें उन पर गौरव है। वह हिंदुस्तान के तथा उसकी आशा-आकांक्षाओं के प्रतीक थे। इसके राजनीतिक मुक्ति और आत्मिक पुनरुत्थान में उनका कार्य अभिनव है, और यह उनके उद्देश्य और विश्वास का ही प्रतिफल है। उनके सामने यह सवाल था कि जब मानव-जाति का पंचमांश गुलाम, दलित और पीडित हो, तब दुनिया में क्या शाति संभव है? उनके अतर ने उत्तर दिया था 'कदापि नहीं'। अत' इसके बाद हिंदुस्तान के स्वातंत्र्य-आदोलन में उन्होंने अपने को पूर्णतया लगा दिया, और उनके चलते अत मे अहिंसात्मक विजय हुई।

गांधीजी मानते थे कि प्रेम का आधार लिए हुए मानवता अविभाज्य भाईचारे का नाम है, और जनता मे बाह्य भेदों के

रहते हुए हिंदुस्तान एक देश है। देश में स्थायी शांति की स्थापना करने की कोशिश में उनका प्राण गया। निश्चय ही वह अपने जीवन को अपने उद्देश्य से बढ़कर नहीं मानते थे। उन्होंने अपने जीवन को मानव-सेवा में अर्पित किया था, और जीवन-पर्यंत सेवा करते रहे। मुझे संदेह नहीं कि इस महात्मा के रक्त-दान से देश के विभिन्न संप्रदायों के बीच भाईचारे का संबध स्थापित होगा। शहीद का ख़ून कभी व्यर्थ नहीं जाता।

परम गौरवशाली अन्यतम व्यक्ति

[श्रीआसफ़अली, अमेरिका में भारतीय राजदूत]

महात्मा गांधी की मृत्यु भारतवर्ष के इतिहास मे सबसे बड़ी दुर्घटना है। ससार से परम गौरवशाली अन्यतम व्यक्ति उठ गया है। सत्य, अहिंसा, प्रेम और शाति का वह सर्वोपरि उदाहरण था। उसका संदेश संपूर्ण मानव-जाति के लिये था। और, यद्यपि उसने अपने पार्थिव शरीर को छोड़ दिया है, फिर भी मानव-जाति सदैव उसके उपदेशों एव आचरणो से प्रकाश और प्रदर्शन लेती रहेगी।

ईसा मसीह की तरह शांति-सम्राट् महात्मा गांधी भी शहीद हुए। भारतवर्ष के लिये महात्माजी के निधन से भविष्य मे

भयानक दुर्घटनाएँ और परिणाम हो सकते हैं। परन्तु अंत में उन्हीं के सपनों का भारत, जो उन्हीं की आत्मा से पवित्र होकर उन्हीं की अमर स्मृति के योग्य होगा, उन्हीं के आदर्शों को लेकर खड़ा होगा।

सांप्रदायिक सद्भावना के प्रकाश-पुंज

[सर सुल्तान अहमद, भूतपूर्व मेंबर भारत-सरकार]

सांप्रदायिक सद्भावना के जिस 'प्रकाश-पुंज को गांधीजी ने आलोकित किया था, वह अब हम लोगों के हाथ है। मुझे विश्वास है कि उनकी आत्मा को शांति मिलेगी, अगर हम ईमानदारी, सचाई और दृढ़ता के साथ उनकी ज्योति को नगर, गाँव तथा झोपड़ियों तक पहुँचा दें, और इस तरह अपनी मातृभूमि के गौरव को फिर से प्रतिष्ठित करें। हम लोगों को चाहिए कि हम अपना पूरा सहयोग पं० नेहरू, सरदार पटेल, राजेंद्र बाबू, मौलाना आज़ाद तथा उन सबको, जिन्होंने गांधीजी के साथ उनके जीवन-पर्यंत कार्य किया, प्रदान करें, ताकि वे गांधीजी के उद्देश्य को पूरा करने में सफल हो सकें। महात्माजी का बिहार पर विशेष हक़ था, क्योंकि यहीं उन्होंने हिंदुस्तान के जन जागरण के कार्य का सूत्रपात किया था, और इस जन-जागरण के फल-स्वरूप आज हमारी मातृभूमि स्वतंत्र

है, और आज दुनिया के राष्ट्रों के बीच वह अपना उचित पद भी ग्रहण कर सकेगी। फिर १८ महीने पहले बिहार में जब पागलपन का एक दौर आया था, और कुछ लोग उसके शिकार हुए थे, तो गांधीजी वहां पहुंचे, और अपने नैतिक प्रभाव के बल पर समझदारी वापस लाने में सफल हुए। अत आज हम उनके पवित्र उद्देश्य को लेकर चलें, जिसके लिये वह आज तक कार्य करते रहे और मरे भी। हम अपने देश में शांति स्थापित करके ही गांधीजी के उद्देश्यों का पालन कर सकते हैं।

मुसलमानों के लिये प्राणों का बलिदान

[सर मिर्ज़ा इस्माइल भूतपूर्व दीवान मैसूर, जयपुर आदि]

मैं समझता हूँ, यह कहना ठीक है कि गांधीजी ने हिंदुस्तान के मुसलमानो के लिये अपने प्राण का बलिदान किया। मुझे संदेह नहीं कि मुसलमान कृतज्ञता-पूर्वक उनकी याद करते रहेंगे, और उनके द्वारा निर्दिष्ट सिद्धात का पालन ईमानदारी से करेंगे। हिंद-सरकार के प्रमुख मत्री होने के नाते प० जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल पर जो बोझ और जिम्मेवारी थी, उसे महात्मा गांधी काफी हलका कर देते थे। अब वह उनके पथ-प्रदर्शन और उन्हें सँभालने के लिये न रहे। अब हिंदुस्तान के नागरिको का—चाहे वे जो हों और जहाँ भी हों—यह कर्तव्य है कि वे पं० नेहरू और

सरदार पटेल का पूर्ण समर्थन करें। ये लोग हमारे प्यारे बापू के घनिष्ठ व्यक्तियों में से हैं। अत इस संकट-काल में ये ही लोग हमारे सच्चे पथ-प्रदर्शक हैं।

धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक

[श्रीजयपालसिंह, आदिवासी नेता]

गांधीजी की मृत्यु से सारी दुनिया क्षतिग्रस्त हुई है। पुरुष, स्त्री और बच्चों के जीवन के हरएक क्षेत्र के लिये गांधीजी के जीवन में सदेश निहित था। वह उतनी ही निर्भयता से राजाओं तथा धनिकों स बातचीत करते थे, जितनी कि गरीबों से। हरएक देश में उनके कार्य और वाणी की प्रतीक्षा की जाती थी। उनकी हत्या मानवता की हत्या है, और अब मानवता उनके उपदेशों को व्यावहारिक राजनीति में परिणत कर अपना प्रायश्चित्त करे।

धार्मिक सहिष्णुता उनके सिद्धांत की खास विशेषता थी। आज देश की सबसे बडी समस्या है उग्र साम्प्रदायिकता का उन्मूलन। गांधीजी ने मुसलमानों और हिंदुओ के लिये अपनी जान की बाजी लगा दी।

उनके लिये सब समान थे। हम लोग ऐसा कार्य करें, जिससे उनका उद्देश्य पूरा हो।

हिंदुस्तान की सबसे बड़ी दुर्घटना

[पंडित नेहरू को श्रीमती पंडित का संदेश]

महात्मा गांधी की हत्या का समाचार पाते ही रूस-स्थित भारतीय राजदूती श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने वेतार के तार से पंडित नेहरू को निम्न-लिखित आशय का संदेश भेजा—"अभी-अभी रेडियो से हिंदुस्तान की सबसे दुःखद दुर्घटना का समाचार मिला। हम लोगों ने आपका रेडियो पर भाषण सुना। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय शोक के अवसर पर मैं आपसे क्या कहूँ? आपको मेरा प्यार! मैं उस महान् उद्देश्य के लिये जी-जान से प्रयत्न करने की प्रतिज्ञा करती हूँ, जिसके लिये बापू ने अपने प्राणों की बलि चढ़ाई है।

"यहाँ का दूतावास आज से शोक मना रहा है। यहाँ के सभी लोगों को इस घोर भयावह समाचार से गहरा धक्का लगा है।"

हिंदू-धर्म का हनन

[श्रीमती सुचेता कृपलानी]

जब तक महात्माजी का सिद्धांत हावी नहीं हो पाता, तब तक हिंद का भविष्य बन नहीं सकता, और दुनिया में शांति और सुख हो नहीं सकता। हम हिंदुस्तानी, जो उनका अनुसरण करते रहे, और जो उन्हें अपना पिता कहते हैं,

आज यह प्रतिज्ञा करें कि हम अपना सब कार्य प्रेम और अहिंसा को कार्यान्वित कर संपन्न करेंगे।

हमारे प्यारे राष्ट्र पिता आज नहीं हैं। उनका प्रकाश बुझ जाने से आज सारा देश अंधकार में पड़ गया है। वह व्यक्ति, जिसने अपना सारा जीवन मानव-प्रेम और सेवा में बिता दिया, और जिसने कभी धर्म, जाति या वर्ग-भेद नहीं किया, हिंसा का शिकार हुआ, जिसके विरुद्ध वह बराबर लड़ता रहा। देश सिर्फ दुखित ही नहीं, लज्जा से नत है।

एक पागल ने एक वृद्ध के पार्थिव शरीर को नष्ट किया। शारीरिक दृष्टि से सिवा कुछ हड्डियों और चमड़े को नष्ट करने को कुछ नहीं था। पागल हत्यारा नहीं जानता था कि वह केवल हिंदू की आत्मा का नहीं बल्कि हिंदू-धर्म का हनन कर रहा था। गांधीजी हिंदू धर्म की सहिष्णुता, प्रेम और अहिंसा के अवतार थे। क्या ईसा के दुश्मन ईसा को सूली पर चढ़ाकर कामयाब हुए थे? जिस दिन ईसा की हत्या हुई, उसी दिन हत्यारे ने क्रिश्चियन-धर्म की बुनियाद स्थापित कर दी। सत्य, प्रेम और अहिंसा पर हिंसा की विजय केवल अस्थायी और क्षणिक रह सकती है। आत्मिक शक्ति थोड़ी देर के लिये हार जाय लेकिन अंत में वह अस्त्र-शस्त्र पर विजय अवश्य ही प्राप्त करेगी।

दलित, पीड़ित, दुखी वर्गों के आश्रय

[श्रीमती सावित्री दुजारेवाल]

भारतवर्ष गुलामी की दशा में तरह-तरह की मुसीबतें भोग रहा था। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सभी क्षेत्रों में मनुष्य उचित-अनुचित, कर्तव्य, अकर्तव्य का ज्ञान खोकर विमूढ़ की भाँति अज्ञानांधकार मे पथ-प्रदर्शन खोज रहे थे। उसी समय बापूजी का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने जो राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक क्रांतियाँ करवाईं, वे किसी से भी छिपी नहीं हैं। इन्हीं तीनो क्षेत्रों में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी क्रांतियाँ करवाई थीं। परंतु गांधीजी की क्रांतियों में एक विशेषता है, और वह है—अहिंसा। अहिंसा और प्रेम द्वारा सत्य की खोज के बल पर वह सभी क्षेत्रों में निरंतर कर्तव्य-ज्ञान कराते रहे, और आगे भी करते रहेंगे, क्योंकि विश्ववंद्य बापू की सबसे बड़ी स्थायी देन विश्व के लिये यही है।

संसार के सभी दलित, पीड़ित, दु:खी वर्गों के गांधीजी ही एक आश्रय थे। हम स्त्रियों को तो कर्मयोग का अधिकारी महात्माजी ने ही बनाया। उनका राग-द्वेष-रहित, समदर्शी हृदय हमारी वेदना को समझ सका। उन्होंने विश्व, देश, समाज, घर, सभी स्थानों मे स्त्रियों के महत्त्व को समझा, और हमें भी पुरुषों की ही भाँति कर्तव्य करने की व्यवस्था दी। आज भारतवर्ष में श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, श्रीमती सुचेता कृपलानी, डॉ० सुशीला नायर-जैसी नारियाँ हैं, वे सब गांधी-युग की ही देन हैं। हजारों वर्षों तक भारतीय नारियाँ बापू के उपकार को नहीं भूल सकतीं। युग-युग तक उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि अर्पित है। जय बापू!

दुनिया का आधार टूट गया

[श्री शहीद सुहरावर्दी, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, बंगाल]

मुझे तो ऐसा मालूम होता है, जैसे दुनिया का आधार ही टूट गया है। अब कौन है, जो दुखियो को सांत्वना देगा, और उनके आँसू पोंछेगा ?

अहिंसा का एकमात्र दिव्य प्रकाश

[श्रीफ्रैंक एंथोनी, ऐंग्लो-इण्डियन नेता]

महात्मा गांधीजी की हत्या से संसार एक महापुरुष से वंचित हो गया। संसार के इस घृणा-द्वेष के अंधकार-पूर्ण वातावरण मे उनके प्रेम सत्य अहिंसा का एक-मात्र दिव्य प्रकाश जल रहा था जो मनुष्य के कल्याण-मार्ग का पथ-प्रदर्शक था। अपने देश मे भ्रातृभावना और प्रेम का प्रसार करके ही हिंदुस्तानी उस सत्पुरुष के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट कर सकते है।

पीड़ित मानवता के पिता

[श्री जी० पी० मावलंकर, अध्यक्ष भारतीय विधान परिषद्]

क्या बापू सचमुच में जीवित नहीं हैं ? कौन ऐसा कहने का साहस करता है ? क्यों मैं बोल रहा हूँ, मैं उनके जीवित-स्पर्श का अनुभव कर रहा हूँ। वह मरे नहीं हैं। वह कभी मर नहीं सकते। वह हम लोगों के हृदय के बीच जीवित हैं, और हमारी आशा-आकांक्षा की पूर्ति के लिये बराबर प्रेरित कर रहे हैं।

गत ३० साल के बीच उनके द्वारा केवल क्रांति ही नहीं, बल्कि आश्चर्य-जनक प्रगति भी हुई। जीवन के हर क्षेत्र के लिये हमें उन्होंने आदमी बनाया। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जिस पर उनका प्रभाव न पड़ा हो। उन्होंने हमारी राजनीति, अर्थशास्त्र-शिक्षा को नई दिशा में मोड़ा। वह सार्वजनिक जीवन को पूर्णतया आध्यात्मिक बना देने की कोशिश करते रहे। सत्य और अहिंसा के प्रतीक गांधीजी ने अपने उद्देश्य पर अटूट विश्वास रखते हुए सब कुछ त्याग दिया। युग के वह सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति थे। वह मानव-हृदय में शाश्वत काल के लिये जीवित रहेंगे। उनके प्रति अपनी जो श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूँ, जो प्रेम प्रकट करना चाहता हूँ, और जो दुःख अनुभव कर रहा हूँ, उसकी अभिव्यक्ति के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं।

केवल हम लोगों ने नहीं, सारी दुनिया ने बड़े ही संकट-काल में उन्हें खो दिया। अब कौन है, जो मानवीयता, अंतर-राष्ट्रीय भ्रातृत्व और एक विश्व के सिद्धांत को जीवित रक्खेगा ?

बापू हर मानों में सच्चे लोकतंत्र को माननेवाले थे। मैं लोक-तंत्र का अर्थ समझता हूँ अधिक-से-अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लेकिन वैसी स्वतन्त्रता, जो शांति, प्रगति और सामाजिक नैति-कता के साथ चले। अपने सार्वजनिक जीवन में उनके साह-चर्य के कारण मैं बापू द्वारा सच्चे लोकतन्त्रवादी की तरह किए गए अनेक कार्यों का उदाहरण दे सकता हूँ। समाज के हरएक व्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ होता है पारस्परिक सहिष्णुता, आदर और प्रेम—बापू के शब्दों मे विचार और कार्य में अहिंसा का पालन।

नासमझ हत्यारा तथा उसके-जैसा सोचनेवाले शायद यह अनुभव नहीं करते हैं कि गांधीजी की हत्या कर वे लोकतन्त्र के आधार पर आघात करते हैं। इस प्रकार के हिंसा-कार्य लोकतन्त्र को विनष्ट करनेवाले है।

हिंसा से किसी का भी भला नहीं होता। अगर लोकतन्त्र को बचाना है, तो हरएक नागरिक को असहिष्णुता और हिंसात्मक दमन-कार्य का सामना करने का दृढ़ निश्चय करना चाहिए।

गांधीजी हमारे वास्तविक बापू थे—पीड़ित मानवता के, चाहे

वह जिस वर्ग, धर्म, नस्ल या रंग के हों, वह पिता थे। हम उनके मार्ग पर चलकर उनका आदर करें। हम अपने जीवन को गांधीजी के सिद्धांत के, जिसके लिये वह जिए और मरे, अनुकूल बनाकर उनके सर्वश्रेष्ठ स्मारक का निर्माण कर सकते हैं।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा बराबर हमारे साथ रहे, और हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचाए।

समस्त संसार के शुभचिंतक बापू

[बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, अध्यक्ष प्रांतीय धारा-सभा, यू॰ पी॰]

राष्ट्रपिता, प्रातःस्मरणीय बापू को खोकर आज हम लोग सचमुच पितृहीन, बेचारे-से हो गए। वह तो केवल हमारे देश के नहीं, किंतु यदि संसार पहचानता, तो वह सब देशों के सच्चे बापू थे। उनके हृदय में सबकी रक्षा का भाव था, और वह सबके शिक्षक थे, और सच्चे अर्थ में वह जगत्-गुरु थे। हमारे देश के तो वह सर्वस्व थे ही, किंतु उन्होंने तो संसार-भर के लिये एक नया युग बनाया। वह युग-प्रवर्तक थे। हमारे देश में तो वह अवतारी पुरुष माने जायँगे। वह उसी शृंखला में हैं, जिसमें राम, कृष्ण, बुद्ध और ऋषभ-देव हुए। उनका भी नाम उन्हीं अवतारी पुरुषों के साथ गिना जायगा। जैसा कि अवतारी पुरुषों के काम के ढंगों में अंतर

था, उसी तरह से उनके काम का ढग भी अद्भुत और निराला था। जब-जब अवतारी पुरुष आए हैं, उन्होंने समय के अनुरूप शिक्षाएँ दी हैं। धर्म की रक्षा करने के लिये, बुराइयों को हटाने के लिये ही अवतारों का आना होता है। "सम्भवामि युगे-युगे" मे जो वचन है कि मैं युग-युग में आता हूँ—बुराइयों का नाश करने के लिये, वह वाणी महात्माजी के जीवन में सफल होती दिखाई पड़ती है। हमने तो उनको अपने पिता के रूप में, अपने नेता के रूप में देखा। परतु वह केवल हमारे देश की स्वतत्रता के लिये नहीं आए। इस देश मे पैदा होने के नाते तो उनका सीधा काम था, किंतु ससार-भर किस तरह से ऊँचा हो, यही उनका असली अभिप्राय था। यदि हम उनके कामों को थोडा विचार करके देखें, तो ऐसा जान पडता है कि दृष्टिकोण के अतर से कुछ बातो में हममे से कुछ लोगों का और उनका मतभेद था। हम अपने ही राष्ट्र के मसलों को सामने रखते थे, वे उनके सामने भी थे, लेकिन उनकी निगाह ससार-भर किस तरह से ठीक हो, इस पर थी। राष्ट्रीयता और संसार-व्यापक दृष्टिकोण, इन दोनो में कुछ अतर कभी-कभी होना स्वाभाविक है। यही बात हम महात्माजी के कामों मे, उनके जीवन में देखते हैं। राष्ट्र के साथ-साथ वह ससार-भर का ध्यान रखकर कुछ ऐसी बातें भी कहते थे, जो कभी-कभी हमारे देश के लोगों को ऐसी लगती थीं कि वे

राष्ट्रीयता की सहायता करनेवाली नहीं हैं. यद्यपि राष्ट्रीयता से ऊपर हैं।

लोकसंग्रह का काम महात्मा गांधीजी के हृदय में बैठा हुआ था। लोकसंग्रह के भीतर धर्म की एकता मुख्य बात है। सब धर्मों में जो एक अभिप्राय और एक ईश्वर का पूजना बताया गया है, उसकी ओर विशेष रीति से ध्यान दिलाना। देश-जन्य अंतर होते हुए भी संसार-भर की एक संस्कृति है, इसकी घोषणा और शिक्षा महात्मा गांधी ने अपना मुख्य कर्तव्य बनाया। उनकी अंतिम दिनों की पूजा का एक वाक्य था—

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

यही उनकी भावना का द्योतक था। हमारे देश में पहले भी भक्तजन और धर्म-प्रवर्तक हमको सिखला गए हैं कि राम-रहीम एक हैं। यह बात हमारे बहुत-से भक्तों ने सिखलाई, परंतु हम उसे बार-बार भूल जाया करते हैं, और उसके भूलने का ही वह पापमय परिणाम हुआ, जो हमने पिछले दिनों में देखा। इधर साल-भर के भीतर जो हमारी भूलें हुईं, वे बहुत गहरी हुईं। आज उनके याद करने का समय नहीं है। धर्म के नाम पर हमने प्रेम, जो धर्म का स्वाभाविक तत्त्व है, नहीं फैलाया, बल्कि हमने आपस में घृणा पैदा की। ईसा के समान पूज्य बापूजी ने भी हमारी भूलों का प्रायश्चित्त किया। यह कहना कठिन है कि क्या महात्मा गांधी के

प्रायश्चित्त के बाद भी हम कुछ सॅभलेंगे ? ईसा ने प्रायश्चित्त किया किंतु जगत उसके बाद बहुत नहीं बदला। क्या गांधीजी के प्रायश्चित के बाद हमारी भावनाएँ समुचित, सच्ची राह पर आवेंगी ?

आज हमारे लिये यह सोचना भी अनुचित है कि वह चले गए, और अब हमारा मार्ग-प्रदर्शन नहीं करेंगे। यह दिल को दहलानेवाली बात है। हमारे समाज के कोने-कोने में, केवल राजनीति मे नहीं, सब दिशाओं में वह इतने फैले हुए थे, हमारी रगो में उनका प्रभाव इतना छा गया है कि हमारे लिये सोचना भी मुसीबत है। मुश्किल से कोई प्रश्न हमारे देश का होगा, जिसका गाधीजी ने मार्ग-प्रदर्शन न किया हो। आज केवल उनकी याद ही हम कर सकते है। वह धार्मिक पुरुष थे. वह अर्थशास्त्र के भी अद्वितीय जाननेवाले थे, वह शिक्षण-गुरु थे, वह एक सच्चे वैद्य भी थे। समाज का ऐसा कौन-सा कोना था, जिसमें उन्होंने प्रवेश कर मानव-मात्र की भलाई की बात न सोची हो। आज उनकी स्मृति-मात्र रह गई है। वह हमको ठीक रास्ते पर ले चले। हम उनके योग्य हों, इस योग्य हो कि हम उनके साथ भारतवासी कहलाएँ। आज हृदय से हमारी यह प्रार्थना है। इसी से हम उनकी आत्मा को शाति दे सकते हैं।

भारत-सरकार के मंत्रियों की

हमारा कलंक

[सरदार बलदेवसिंह, रक्षा-मंत्री, भारत-सरकार]

वर्तमान पीड़ित और अंधकार-युग में गांधीजी प्रकाश की किरणें थे। अपनी मातृभूमि की मुक्ति के संघर्ष के नेता होने के कारण हम देशवासी गांधीजी को महान समझते हैं। हमारे लिये वह सेनापति, प्रदर्शक और राष्ट्रपिता हैं। हमारा उन्हें इस रूप में मानना पूर्णत: चरितार्थ भी होता है, क्योंकि दुनिया के लिये वे शिक्षक, ऋषि और मसीहा थे। उन्होंने मानव जाति को अभिनव और सूक्ष्म शिक्षा प्रदान की।

व्यावहारिक तौर पर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि पशु-सा व्यवहार किए बिना पशु पर विजय पाई जा सकती है। उन्होंने यह दिखा दिया कि वास्तविक शक्ति शरीर में नहीं रहती है, आत्मा में होती है। युद्ध, घृणा, शंका और भय से जर्जर आज की दुनिया को उन्होंने प्रेम का संदेश सुनाया। उनके लिये वास्तविक विजय युद्ध-क्षेत्र की विजय नहीं, आत्मा की विजय थी।

अपने अंतिम दिनों में गांधीजी साम्प्रदायिक वैमनस्य दूर करने के लिये जी-जान से लगे थे। बड़ी-से-बड़ी उत्तेजना का उन पर प्रभाव नहीं पड़ता था। वे दोषियों का पक्ष और रक्षा करने के लिये बराबर तैयार रहते थे। बड़े शर्म के साथ

हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि कुकृत्य के व्यापक प्रभाव के कारण ही गांधीजी को उपवास करना पड़ा। उनके जीवन के अंतिम दिनों में हम लोगों ने उन्हें ऐसा करने को मजबूर किया, यह हम लोगों के लिये हमेशा कलंक बना रहेगा।

मेरा नम्र निवेदन है कि सच मे अगर हम बापू की इज्जत करते हैं, अगर हम उनके योग्य बनना चाहते हैं, तो हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपने कलंक को दूर करें। किसी भी संप्रदाय के लिये दुर्भावना के प्रत्येक कारण को अपने दिमाग से निकाल देना होगा। हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी और सिक्ख सम्मिलित रूप से एक देश के नागरिक बनकर और साथ ही राष्ट्रपिता के बच्चे के रूप मे रहना सीखे। इसी प्रकार हम गाधीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। इसी तरह हम अपने देश में शांति और सुख की व्यवस्था कर सकते हैं।

हमारी कल्पना तक मे भी यह बात नहीं आनी चाहिए कि साम्प्रदायिक एकता एक कोरी कल्पना है। अपने मे फूट रहने के कारण—एकता के अभाव के कारण हमारा देश विदेशियों के हाथ पडा। गाधीजी ने यह चेतावनी दी है कि अगर हम अपने बीच लडते रहे, तो 'पुन' कोई हम पर अधिकार जमा लेगा। यह गाधीजी की आत्मा से निकला था। हम चाहे जो कुछ करे, उनकी इस चेतावनी को न भूलें। हम यह न भूलें कि पारस्परिक खून-खराबी की भावना के कारण

ही गांधीजी की हत्या हुई। हम हत्यारे से घृणा नहीं कर सकते हैं। लेकिन उसके अंदर जो जहर था, उससे अवश्य घृणा करें। इस वक्त हम सब भेद-भाव भूलकर दिल और दिमाग से एक हो जायँ। तभी हम गांधीजी के महान कार्य को पूरा कर सकते हैं। तभी हम अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता की रक्षा कर सकते हैं।

भारत पर वज्रपात

[डॉक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी, उद्योग-मंत्री, भारत-सरकार]

वह प्रकाश, जिसने अंधकार और दुखों के बीच हमारी मातृभूमि को और असल में संपूर्ण विश्व को प्रकाशित कर रक्खा था, अचानक लुप्त हो गया। महात्मा गांधी की मृत्यु भारत पर सबसे कठोर वज्रपात है। वह व्यक्ति, जिसने भारतवर्ष को स्वतंत्रता दिलाई, जिसका कोई शत्रु न था, जिसके सभी मित्र थे, जिससे करोड़ों मनुष्य प्रेम और सम्मान करते थे, वह एक हत्यारे—वह भी उसी के देशवासी—द्वारा मारा जाय, बड़े ही दु:ख और शर्म की बात है। वह वह गौरवशाली व्यक्ति थे, जिसका प्रभाव अमिट होता है, और समय के साथ-साथ जिसका प्रकाश भी अधिकाधिक होता जाता है। हत्यारे की गोली ने न केवल उनके मानव-शरीर को बेधा, परंतु हिंदुत्व के

हृदय पर भीषण प्रहार किया है। भारत तभी सुरक्षित रह सकता है, यदि सब लोग दृढ़ निश्चय कर ले कि हिंसा का मार्ग इस देश मे सदा के लिये वर्जित हो जाय। हर-एक बुद्धिमान नागरिक, प्रत्येक राजनीतिक दल को इस घृणित हत्या की पूर्ण रूप से भर्त्सना करनी चाहिए। हम लोगों को भी इस दुर्घटना का सामना शांति और दृढता-पूर्वक, उसी आदर्श में, जिसके लिए हमारा प्रिय नेता मारा गया, पूर्ण विश्वास रखकर करना होगा।

पुरातन और आधुनिकता का मधुर समन्वय

[श्रीजगजीवनराम, श्रम-मंत्री, भारत-सरकार]

इतिहास मे कभी हर जगह इतना शोक प्रकट नहीं किया गया, जितना कि महात्मा गाधी की मृत्यु पर। हालांकि गांधी-जी का भौतिक शरीर हमारे साथ नहीं है, फिर भी उन्होंने जो प्रकाश हमे प्रदान किया है, वह हमारे सामने सबके मार्ग को सदा रोशन करता रहेगा। अपने उद्देश्य की ओर पहुँचने में राष्ट्र के सामने जब-जब कठिनाइयाँ या अँधेरा आएगा, तब-तब गाधीजी की महान् आत्मा से हमे प्रकाश और प्रेरणा मिलती रहेगी।

गांधीजी ने सत्य और अहिंसा. प्रेम और सहनशीलता,

एकता तथा मेलजोल के जिन विश्व-सिद्धांतों का प्रचार किया, उससे हर मनुष्य के हृदय पर असर हुआ, और उसी कारण आज हम देखते हैं कि सारा विश्व शोकाकुल है। घृणा और हिंसा के वातावरण में उन्होंने एक कर्मयोगी की भांति हमें बताया कि कर्म में ही सब महान तत्त्व छिपे हुए हैं, और इसी के द्वारा भगवान् भी प्रसन्न होता है। उसकी इच्छा की भी इसी में पूर्ति है। गांधीजी के चरित्र में पुरातनता और आधुनिकता के एक मधुर समन्वय का निरालापन था। वह भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। भारत के किसान-मजदूर तथा दलित वर्ग के लोग उनको परम प्रिय थे। वही एक ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने निरंकुशता, वर्ग-भेद तथा शोषण के प्रति विद्रोह किया। अस्पृश्यता के विरुद्ध गांधीजी ने जो आंदोलन किया, वह सामाजिक क्रांति की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम था। वह केवल शब्दों में ही सहानुभूति नहीं प्रकट करते थे, बल्कि अपने सभी विचारों को सक्रियता भी प्रदान करते थे। जो कहते थे, उसे करके भी दिखाते थे, और इसी में कमाल था। हरिजनों के मसले को उन्होंने अपना निजी मसला बनाया, और कांग्रेस को भी उसे अपनाने पर मजबूर कर दिया।

गांधीजी कभी मर नहीं सकते

[राजकुमारी अमृतकौर, स्वास्थ्य-मंत्राणी, भारत-सरकार]

देखते-ही-देखते क्षण-भर मे हमारे सबसे अधिक प्यारे और महान् बापू, हमारे दोस्त हमारे दार्शनिक और पथ-प्रदर्शक हमारे बीच से छीन लिए गए। नेता से अधिक वह हम सबों के पिता थे ; हम लोग यों ही उन्हे बापू नहीं कहा करते थे। आज हम लोग अनाथ हैं।

इतिहास की वर्तमान संकटकालीन परिस्थिति मे उनकी क्षति का अंदाज़ा लगाना असंभव है। मेरा विश्वास है कि ज्यों-ज्यो दिन बीतते जायँगे, त्यों-त्यों हम उनकी विचार-पूर्ण सलाह से वंचित होते जायँगे। राजनीतिक स्वतंत्रता की मंजिल तक उन्होंने हमे बिना चूक के पहुँचा दिया। १५ अगस्त के बाद जो साम्प्रदायिक खून-खराबियाँ हुई, उनसे उनका दिल बहुत दुखा। हिंसा मे उन्हें गौरव सह्य नहीं था। उन्होंने हमारे नैतिक पतन को पहचाना, और प्यारे पिता की तरह उन्होंने सही रास्ता बताया। अनेकों के हृदय मे जो रोष समा गया था, उसे वे अपने असीम प्रेम द्वारा दूर कर देना चाहते थे। वह हमे विनाश-पथ पर न जाने देने के लिये रोड़ा बनकर खड़े थे।

एक पागल के गुस्से ने उनके पार्थिव शरीर को खत्म किया, लेकिन उनकी आत्मा को कौन मार सकता है? गांधीजी कभी मर नहीं सकते। हम लोग बराबर उनकी उपस्थिति का

अनुभव करते रहेंगे, और मैं आशा करती हूँ कि अब हम लोग उनके प्रति अधिक सच्चे होंगे।

गांधीजी ने शहीदों का मुकुट धारण किया है। उनकी आत्मा आज शांत है, लेकिन हमारे लिए उन्हें असीम त्याग करना पड़ा। हम लोग अपनी गलतियां न भूलें। हम सब हिंदुस्तानियों को लज्जा से सर झुका लेना चाहिए कि हमारा ही एक आदमी इतना पतित हुआ कि उसने गांधीजी की हत्या की। ईश्वर उसको क्षमा प्रदान करे, और हम लोग भी हत्यारे को क्षमा करने की कोशिश करें। बापू ने तो निश्चित रूप से क्षमा कर दिया होगा, और गोली दागते वक्त भी उसके प्रति प्रेम-भावना ही रक्खी होगी।

निराशा और दुःख की इस अंधकारमय घड़ी में हम सब प्रतिज्ञा करें कि न तो हम दुःखित रहेंगे, और न निराश होंगे। हम सत्य और प्रेम के मार्ग पर चलने का बल पैदा करें, और इस तरह गौरव-पूर्ण देश पर लगे कलंक का धो बहावें। ईश्वर हम सब पर कृपा करे, और हमें बापू के प्रति सच्चे बनने के लिये शक्ति प्रदान करे, ताकि हम गांधीजी के कल्पनानुसार हिंद को बनाने में सफल हों।

प्रांतीय गवर्नरों की

शाश्वत सत्य की खोज में बापू

[हिज़ एक्सिलेंसी श्री एम० एस० अणे, गवर्नर, बिहार]

वह भूमि, जहाँ महात्माजी की हत्या की गई तथा जिसकी धूल आपके रक्त से संयुक्त एवं आर्द्र बनी, भविष्य में अनंत वर्षों तक दुनिया के कोने-कोने से तीर्थ-यात्रियों को आकर्षित करती रहेगी। शायद आपके हत्यारे ने यह नहीं समझा कि वह क्या कर रहा था। उसने केवल महात्मा के शारीरिक ढाँचे को नष्ट किया, परंतु शहीद की काया से परिच्युत, उष्ण रक्त मातृभूमि के कण-कण से सनकर उस धर्म का सीमेंट बनायेगा, जिसके लिये वह प्रयत्नशील थे। यद्यपि आपका क्षण-भंगुर शरीर नहीं रहा, तथापि आपकी शिक्षाओं की दीपशिखा दिग् दिगंत को आलोकित करती एवं सुषमा प्रदान करती रहेगी, संसार के प्रत्येक कोने से अँधकार का विनाश कर प्रकाश का प्रसार करती रहेगी।

आपके जीवन की तीन विशेषताएँ थीं—सत्य की प्राप्ति, उसका प्रयोग तथा उस शाश्वत सत्य में अपने को लीन करना। आपका सारा जीवन सत्य के प्रयोग में लिप्त रहा। निस्सर्ग से ज्योति लाकर आपने गाँव की झोपड़ियों को प्रकाश दिया। मानवता के हित के लिये भविष्य में भी इसे प्रदीप्त रखना हमारा कर्तव्य हो जाता है। आपकी शिक्षाएँ नई नहीं

थीं, अपितु वे वही थीं, जिनका उपदेश प्राचीन ऋषियों एवं वेदोपनिषदों के द्रष्टाओं ने किया तथा जिनका प्रसार भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता के स्वर्गीय श्लोकों के सहारे किया। भगवान बुद्ध, ईसा, पैगम्बर मुहम्मद तथा भारत एवं एशिया के समस्त ऋषि-मुनि उनका उपदेश करते रहे। उन शिक्षाओं का सारांश निम्न शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है—

(१) दैनिक जीवन में सत्य एवं अहिंसा का प्रयोग कर ईश्वर की स्तुति करना।

(२) सबके प्रति प्रेम तथा घृणा किसी के भी प्रति नहीं, चाहे अज्ञान-वश आपका कोई अपकार ही क्यो न करता हो।

(३) दीन, हीन, परित्यक्त शोषित, बहिष्कृत तथा दलित की सेवा।

गांधीजी ने दरिद्रों और शोषितों की सहायता करने के लिये ही अपना रचनात्मक कार्यक्रम निर्माण किया। दीन-हीन की आत्मिक एवं भौतिक उन्नति ही आपके जीवन का मुख्य अग रही, और इसी कील के चतुर्दिक् रचनात्मक कार्यक्रम-चक्र परिचालित था। सहस्रो करोड़पति या अरबपति इस महा-मानव के स्मारक स्फटिक या स्वर्ण के बनाने के लिये अपनी निधि समर्पित कर सकते हैं, पर मै समझता हूँ कि भव्य भवनों, स्तंभों या मूर्तियों से गाधीजी के उपयुक्त स्मारक नहीं बन सकते। वे उस आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते जिसकी गांधीजी प्रतिमा थे, और न

विश्वरूपता एवं व्यक्तित्व के इस शाश्वत साहचर्य की प्रतीति ही उनमें हो सकती है, जिसका प्रतिफल गाधीजी के जीवन में हो रहा था। इस ससार की परिणामवती बालुका एवं मृत्तिका पर आपका स्मारक नहीं बन सकता, वरन् काल की धूली पर अंकित आपके पद-चिन्हों का अनुसरण करनेवाले प्राणियों की अमर आत्माएँ ही स्मारक बना सकती है।

उसके फलस्वरूप मानव-जाति की ठोस एवं सची उन्नति हो सकती है, लोलुप शोषकों के शोषण से मुक्ति मिल सकती है, कृत्ययुग (स्वर्ण) का सुखद विहान हो सकता है, पृथ्वी पर स्वर्ग बसाया जा सकता है, एवं आह्लाद के फूल खिलाए जा सकते है।

गीता में वर्णित सच्चे कर्मयोगी

[हिज़ एक्सिलेंसी डॉ० कैलाशनाथ काटजू, गवर्नर, उड़ीसा]

महात्मा गाधी संसार में हिंसा-समुद्र के भीषण तूफान में एक चट्टान की भांति अटल और अविचल थे। जैसे-जैसे समय निकलता जायगा, गाधीजी के जीवन के इस पहलू को पश्चिमी संसार द्वारा भी अधिकाधिक श्रद्धा मिलती जायगी। जब मानवता विनाश और संकट में फँसी हुई थी, उसे गांधीजी का सहारा मिला, इंसान की छटपटाती रूह को राहत मिली।

गांधीजी एक ऐसे नेता थे, जिन्होंने अपने सभी साथियों के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाया। कांग्रेसजन और सत्य, अहिंसा, वफ़ादारी, ईमानदारी, त्याग ये सब जैसे घुल-मिलकर एक रस हो गए। अब हम वास्तव में यह महसूस करते हैं कि हम बापू को खोकर अनाथ हो गए हैं। गांधीजी गीता में बताए गए सच्चे कर्मयोगी थे। जैसे-जैसे सदियाँ निकलती जायँगी, ईसा तथा भगवान बुद्ध की भाँति उनका तथा उनकी शिक्षाओं का प्रभाव भी बढ़ता जायगा। जहाँ भी वे रहे, शांति तथा संतोष छा गया। साथ ही आश्चर्य और कमाल इस बात में है कि एक हँसते और मुस्कराते फूल की भाँति उन्होंने सदा इतने बोझ को वहन किया।

चरित्रवान महापुरुष

[हि० ए० सर आर्चिबाल्ड नाई, गवर्नर, मदरास]

इस अवसर पर दु:ख प्रकट करने के लिये पर्याप्त शब्द नहीं हैं। भारत को जिस योग्यता के नेता मिले, वैसे संसार के किसी भी देश को नहीं, और उन नेताओं को पथ-प्रदर्शन करनेवाला था गांधी-जैसा चरित्रवान महापुरुष। महात्माजी ने आजीवन सत्य और अहिंसा का प्रचार किया। हमें उनके बाद भी उनके इन उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए।

महान ज्वाला बुझ गई

[एम० पैरन, गवर्नर, फ्रांसीसी भारत]

ऐसा ज्ञात होता है कि वह महान ज्वाला बुझ गई है। मेरे विचार से तो संसार में इससे बड़ी दुर्घटना हो ही नहीं सकती।

प्रांतीय प्रधान मंत्रियों की

इस युग के मसीहा

[माननीय प॰ गोविंदवल्लभ पंत, प्रधान मंत्री, युक्त प्रांत]

हमारे भारतवर्ष की पिछले तीस साल की जो-भी घटनाएँ हैं जो कुछ भी इतिहास हमारे देश का है, वह महात्मा गांधी के जीवन का इतिहास है। महात्माजी ने ऐसी अवस्था में जब कि हमारा देश जर्जरित था, हमारे यहाँ लोगों में पराधीनता के भार से जकड़े होने से जो एक निर्बलता रोम-रोम में बस जाती है, उसने घर कर लिया था, जब कि देश में कहीं भी स्वावलम्बन और आत्मविश्वास नहीं रहा था, जब कि सब जगह एक मुर्दनी छाई हुई थी महात्माजी ने अवतार लेकर हमारे इस जर्जरित देश में एक नया जीवन-सचार किया, नई बिजली उन हड्डियों में जो कि बिलकुल घिस चुकी थीं, पैदा की, और फिर ससार को एक नया चमत्कार दिखलाया, जिसके परिणाम स्वरूप अहिंसा द्वारा चालीस करोड़ स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध अपनी जंजीरों से, बेड़ियों से, मुक्त और आजाद हुए। यह, संसार के इतिहास में एक ऐसी बात है, जिसकी मिसाल कहीं मिलती नहीं।

महात्माजी हमारे देश के उद्धारक थे। आज यदि भारतवर्ष स्वतंत्र है, चाहे वह भारतीय संघ हो, चाहे पाकिस्तान, वह महात्माजी के ही पराक्रम का परिणाम है। जहाँ तक मनुष्य देख और

समझ सकता है, हमारी बेड़ियाँ टूटती नहीं, और पाकिस्तान के सब हिस्से उसी तरह बंधनों में बँधे होते जैसे कि पहले थे। पाकिस्तान के रहनेवालों को भी महात्माजी का उतना ही कृतज्ञ और एहसानमंद होना है, जितना कि भारत के किसी और दूसरे प्रांत के रहनेवाले को, क्योंकि सभी की आजादी महात्माजी के ही पराक्रम से, उनकी एक अलौकिक शक्ति से और उनके एक आश्चर्यजनक नेतृत्व से ही प्राप्त हुई है। महात्माजी ने ऐसे समय में जब कि पहली लड़ाई १९१४ ई० से १९१८ ई० तक चली थी, अँगरेजों के साम्राज्य का बल और भी पहले से बढ़ गया था, और संसार-भर में वह छाया हुआ था, जब कि आधे से ज्यादा दुनिया में उनका एकछत्र राज्य था, और संसार की तमाम नाशकारी शक्तियाँ अँगरेजों के हाथ में थीं, ऐसे समय में इस देश में एक आत्मसम्मान, आत्मगौरव और स्वावलंबन का ऐसा स्रोत प्रवाहित किया, कि उसके अमृत से हमारे यहाँ एक नवजीवन की धारा बह चली और इससे ही बढ़ते-बढ़ते हम उनके ही प्रभाव से उनके बताए हुए रास्ते पर बढ़े। हम बरसों से गांधी-जयंती मनाते आए हैं और महात्माजी के प्रति प्रतिवर्ष हम अपनी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उनकी आज्ञाओं को पालन करने का प्रयत्न करते रहेंगे, पर महात्माजी के महत्त्व को संसार अभी तक नहीं, सैकड़ों वर्ष तक भी पूरी तरह नहीं समझ पाएगा। महात्माजी केवल एक भारतीय ही नहीं थे। यद्यपि उन्होंने भारत के राष्ट्रीय संग्राम में, उसके

स्वतंत्र कराने में, पूर्ण भाग लिया, और वह उसमें सबसे आगे रहे। वह तो यहाँ का चरित्र सुधारने के लिये, यहाँ की जनता की अवस्था सुधारने के लिये, यहाँ के गिरे हुए, लोगों को ऊँचा उठाने के लिये, यहाँ के भूखो-नंगों को खाना दिलाने के लिये, यहाँ के दबे हुए आदमियों को फिर संसार में पुन: जीवित कराने के लिये ही आए थे। और, यदि विचार करें, तो उन्होंने अपनी शक्ति लगाई, तथापि उनकी आत्मा और उनके विचार किसी देश की सीमा के भीतर सीमित नहीं थे, वह तो सारे संसार के महापुरुष थे। उनको भारत को स्वतंत्र कराने की अभिलाषा उतनी ही थी, जितनी संसार के और दबे हुए परतंत्र लोगों को। वह हमेशा यह समझते थे कि जिस क्षेत्र मे वह हैं, वही उनका क्षेत्र है, और वहीं उनको काम करना है। वह दुनिया में अपना कर्तव्य कर गए, और उनके कारण दुनिया के सब देश जागे। हुआ भी ऐसा ही कि भारत की स्वतंत्रता के साथ सारा एशिया स्वतंत्र हो गया। महात्माजी के कार्य ने सभी गिरे हुए देशों मे जान डाल दी, और सब लोगों में यह भावना फैलाई कि वह भी उठ सकते हैं, और उनके लिये भी संसार मे स्थान है, और वह भी स्वतंत्र हो सकते हैं। हमारे देश मे ही नहीं, वरन् सभी एशिया-भर मे एक आत्मविश्वास उत्पन्न करके महात्माजी ने केवल हमे ही नहीं, बल्कि सारे एशिया को ऊपर उठाकर संसार मे उच्च स्थान दिलाया।

महात्माजी केवल राजनीतिक कार्यों को करनेवाले ही नहीं थे, वह तो उनका एक छोटा-सा अंग था। उनकी तो अपनी एक फिलॉसफ़ी थी, जीवन का एक आदर्श था, और उसी के लिये वह रहते थे, और उसी के ढाँचे पर वह समाज का निर्माण करना चाहते थे। महात्माजी के बराबर क्रांतिकारी आज तक कोई शायद ही हुआ हो। उन्होंने जो क्रांति हमारे देश में की, उसका पूरा परिणाम हमने देख लिया, और उसको देखने के बाद उसकी तुलना या मुक़ाबला किसी दूसरे काम से कठिनाई से हो सकता है, और किस अनोखे ढंग से उन्होंने किया, वह तो लोगों को भौचक्क करनेवाली बात है, जिसको कि संसार के लोग सुनते हैं, और उनकी समझ मे नहीं आता कि कैसे यह परिवर्तन हो गया। पर महात्माजी ने सदैव जहाँ भी हुआ, भारतीय आत्मा को उठाने मे, हमारे गर्व और राष्ट्रीय उत्थान, जहाँ भी आवश्यक हुआ, उसमे उन्होंने हमारा पूरा-पूरा नेतृत्व किया। दक्षिण ऑफ्रिका मे, जहाँ हिंदोस्तानियों पर अत्याचार होता था, अकेले उन्होंने प्रधान मंत्री स्मट्स से, उन गोरों से भारतीयों के लिये उनके अधिकारों को स्वीकार और कबूल करवाया। यहाँ आकर उन्होंने चंपारन मे और और जगह पर गरीबों की मर्यादा को ऊँचा उठाकर, उनको स्वतंत्रता प्राप्त कराई। उन्होंने जिसको दुखी पाया, उसको सुखी बनाने मे अपनी शक्ति लगाई, मगर सबसे अधिक निर्बलों को बलवान् बनाने मे, और प्रत्येक व्यक्ति को यह

आदेश दिया कि वह अपनी क़ौम को ऊँचा उठा सकता है। उन्होंने किसानों, मज़दूरों और हरिजनों को एक नया पाठ बतलाया, और सबके लिये एक नई दुनिया पैदा कर दी। उन्होंने हमारे स्त्री-समाज में भी एक ऐसी क्रांति कर दी, जो मुर्झाया हुआ था, उसे भी पूरी तरह जानदार बना दिया। उन्होंने इन सब बातों को किया, और कई और बातें कीं। उनका कोई विशेष क्षेत्र नहीं था। वह हर जगह यह भी देखते थे कि खाने के लिये समाज में किस तरीक़े पर लोगों को कम-से-कम तकलीफ़ करके अपने स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती को आगे बढ़ाने का मौक़ा मिल सकता है। खेती कैसे सुधर सकती है। उनका राजनीतिक शास्त्र भी था, और उन्होंने भारत की संस्कृति को उठाया। महात्माजी के हमारे राजनीतिक क्षेत्र में आने से पहले एक विदेशी हवा ऐसी चली थी कि किसी को, ख़ासकर राजनीतिक नेताओं को, ज़मीन पर बैठना या धोती और टोपी पहनना एक ग़ैर मामूली-सी बात समझी जाती थी। उन्होंने भारतीयता को हमारे देश में स्थापित करके हमें मनुष्य बनाया, और संसार के सामने हमारी जो पुरानी आभा थी, उसको रखकर हमारे राष्ट्र के गौरव को बढ़ाया। ऐसे महात्मा के प्रति श्रद्धाञ्जलि देना किस तरीक़े से हमारे लिये पर्याप्त हो सकता है, और किन शब्दों द्वारा हो सकता है? हम कुछ भी करें, प्रत्येक भारतीय अगर बीसों दफ़ा भी महात्मा-जी के लिये अपना प्राण दे दें, तब भी उऋण नहीं हो सकते,

और जब तक मानव-इतिहास रहेगा, तब तक महात्माजी का स्थान संसार के ऊँचे-से-ऊँचे महात्माओं में रहेगा। महात्माजी ने यह सब कुछ किया था। वह अनासक्ति योग का पाठ किया करते थे, और उन्होंने हमको यह बतलाया कि पुराने ज़माने के ऊँचे आदर्शों को अपनाकर कैसे संसार और राष्ट्र की उन्नति हो सकती है। महात्माजी के बराबर अनासक्त और निरासक्त व्यक्ति कोई भी आज तक नहीं हुआ, जिसने समाज के कल्याण में अपना तमाम समय और शक्ति लगाई हो। जो आसक्ति छोडकर संघ से अलग हुए, वह संसार छोड़कर सन्यास लेकर चले जाते, परंतु महात्माजी ने वास्तविक कर्मयोग का पालन किया, और अपने संयम के द्वारा अपने को बनाया।

अपने समय के शांति-सम्राट्

[डॉ० विधानचंद्रराय, प्रधान मंत्री, पश्चिमी बंगाल]

राष्ट्र-पिता बापू अब नहीं रहे। अब वह हमारा पथ-प्रदर्शन करने हमे परामर्श देने और हमारे कर्तव्य तथा जिम्मेदारियों का बोध कराने के लिये न रहे। इस त्रस्त संसार को सत्य और अहिंसा के पथ पर चलने का आग्रह करनेवाला मानवीय स्वर अब सुनाई नहीं देगा। तथापि वह जीवित हैं, जैसा कि उन्होंने खुद कहा था कि मृत्यु एक महान् परिवर्तन-मात्र

है, और कुछ नहीं। हाँ, वह आज भी जीवित हैं, उनकी आत्मा हमारे साथ है। उनकी अमर आत्मा सर्वदा इस देश का और दुनिया का लक्ष्य-प्राप्ति के लिए पथ-प्रदर्शन करती रहेगी।

गांधीजी का जीवन संघर्ष का जीवन था। विश्राम कभी न खोकर वह आजीवन देश की आजादी के लिये और मानवता की आजादी के लिये लड़ते रहे। उनकी लड़ाई तलवार की लड़ाई न थी। वह दुश्मनों को भी प्यार करते थे। उन्होंने अपनी उद्देश्य-सिद्धि के रूप में ही शक्तियों को पराजित किया।

सारी दुनिया गांधीजी की मृत्यु से शोक-ग्रस्त हुई। उनकी मृत्यु से सबको क्षति पहुँची है। जब दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक घृणा के ज़हर से वातावरण विषाक्त है, हिंसा की भावना ज़ोर पर है, और उसने मानवात्मा को अपवित्र बना दिया है, गांधीजी के उपदेशों की ज़रूरत आज पहले से बढ़ी हुई है। गांधीजी को विश्वास था कि हिंसा से ऊबकर दुनिया एक दिन अवश्य ही अहिंसा और सत्य को कबूल करेगी। गांधीजी ने कहा है अहिंसा हमारे विश्वास का पहला और अंतिम सूत्र है। सभ्यता की इतिहास में इसकी ज़रूरत इतनी कभी नहीं पड़ी थी, जितनी कि आज।

हम लोगों ने व्यक्ति की नैतिकता के विकास की ओर ध्यान नहीं दिया। हमने उसके जन्मसिद्ध अधिकार स्वतन्त्रता से वंचित रक्खा है। हमें उसके व्यक्तित्व को विकसित और उसे गांधीजी की तरह स्वतन्त्र बनने देना हैं। गांधीजी

जो अपने आरंभिक जीवन में एक साधारण आदमी की तरह कमजोरियों और अभावों के शिकार थे मानवीय दुःख और कृष्ण वासनाओं और रूढियों से दबे थे। लेकिन कतिपय सरल और महत्वपूर्ण विचारों को आश्रय बनाकर वर्षों के कठोर आत्मानुशासन और नियंत्रण द्वारा वह अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को बदलने मे सफल हुए। और, इस तरह उन्होंने अपने अंदर स्वतंत्रता की भावना और मानसिक शांति को प्रतिष्ठित किया, जो हर समय दूसरों की स्वतंत्रता को कबूल करने को तैयार रहती थी।

कहा जाता है, गांधीजी राजनीतिज्ञों के बीच महर्षि थे और महर्षियों के बीच राजनीतिज्ञ । लेकिन सबसे बढकर वह मनुष्य थे । और मनुष्य होने के नाते उन्हें अपनी गल-तियाँ स्वीकार करने का साहस था।

आज दुनियाँ में गलतफहमियों, ईर्ष्या, प्रतिद्वंद्विता, शंका और अविश्वास का बोलबाला है। गांधीजी के उपदेश को भुला दिया गया है। घृणा और अविश्वास आदमी को गुमराह बना रहा है। इस तरह विश्लेषण करने के सिवा हम और किस तरह इस बर्बर हत्या का, जिससे दुनिया अपने समय के शांति सम्राट से विहीन हुई है, विश्लेषण कर सकते हैं ?

जिस प्रकार गांधीजी की हत्या हुई, वह हमे चेतावनी देती है कि देश मे जोर से घृणा और हिंसा की शक्तियों काम

कर रही हैं और उनसे हमारी आजादी को खतरा है। हमारी इज्जत मिट्टी में मिलनेवाली है। इन शक्तियों का शीघ्र-से-शीघ्र उन्मूलन होना चाहिए। मुझे इसमें शक नहीं कि आज देश की जनता इन्हें मिटाने की माँग कर रही है।

सामान्य मनुष्यों के हकों के जीवित प्रतीक

[श्रीबी० जी० खेर, प्रधानमंत्री, बंबई-प्रांत]

महात्मा गांधी असाधारण मनुष्य थे। पर साधारण मनुष्यों के हकों, हैसियत, इज्जत और सम्मान के वह जीवित प्रतीक थे।

महात्मा गाधी की मृत्यु से किसी खास व्यक्ति या किसी खास राष्ट्र को ही क्षति नहीं पहुँची, बल्कि उनकी मृत्यु से सारे ससार को नुकसान हुआ है। उनकी मृत्यु से मानवता को क्षति पहुँची है, और यही वजह है कि उनकी मृत्यु पर आज सारा संसार आँसू बहा रहा है तथा मानवता रो रही है।

महात्मा गाधी देश की स्वाधीनता के लिये जीवन-भर सग्राम करते रहे और अंत में देश को उन्होंने आजाद भी करवाकर छोड़ा। देश को केवल आजादी ही नहीं दिलवाई है, हमें बहुत सारी अन्य बातें बताईं। हमें चलना और

बोलना सिखाया। अत्याचार और पाप से विद्रोह करना बताया और जो सबसे बड़ी बात उन्होंने हमें, हमारे देश को, संसार को बताई वह यह कि किसी बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों, विपत्तियों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही किया जा सकता है।

गांधीजी सत्य, अहिंसा और प्रेम के प्रतीक थे। उनका स्थूल शरीर हमारे बीच न रहा, पर वह अमर हैं, और उनके आदर्श तथा सिद्धांत तब तक अमर रहेंगे, जब तक चाँद और सूर्य रहेंगे। वह महान् थे, अद्वितीय थे।

इस युग का महानतम् पुरुष

[श्री ओ० पी० रामस्वामी रेड्डियार, प्रधान मंत्री, मदरास]

संपूर्ण राष्ट्र आज शोक-मग्न है। इस युग का महानतम् पुरुष अपने ही जन्म के देश में एक हत्यारे के हाथों मारा गया—उसी देश में, जिसकी स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए उसने अपना पूरा जीवन ही विसर्जन कर रक्खा था।

जगत्-गुरु गांधी

[डॉ० श्रीकृष्णसिंह, प्रधान मंत्री, बिहार]

आज हम इसलिए रो रहे हैं कि महात्माजी को खोकर हमने अपने पिता, दार्शनिक तथा पथ-प्रदर्शक को खो दिया है। अंधकार और गुलामी की बेड़ियों में जकड़े हुए हम लोगों को उन्होंने उबारा और आजादी के प्रकाश में ला खड़ा किया। स्वतंत्रता की इस भीषण लड़ाई में ऐसे कठिन अवसर भी आए जब कि समस्या को सुलझाना टेढ़ी खीर था। वह इस कोटि के दार्शनिक और राजनीतिज्ञ थे कि उन्हें मानव प्रकृति और प्रवृत्ति का पूर्ण ज्ञान था। अतः ऐसे संकटकाल में पूर्ण राष्ट्र उन्हीं की ओर आशा लगाए आज्ञा की अपेक्षा करता था।

कल तक हम गुलामी में बँधे थे। इसीलिये हममें वह गुण नहीं आया है कि हम एक प्रजातंत्रात्मक राष्ट्र का संगठन कर सकें। हम सब एक दूसरे से अलग होकर रहना चाहते हैं। हम अभाग्यवश उन प्रवृत्तियों के शिकार हैं, जो राष्ट्र को कई टुकड़ों में बाँटना चाहती है। इन प्रावृत्तियों के चलते एक सुदृढ़ राष्ट्र बनाना सम्भव नहीं है। हमने एक प्रजातंत्र राज्य स्थापित करने का निश्चय किया है। इसके लिए शिक्षा-दीक्षा और अनुशासन की आवश्यकता है। महात्माजी ही एक ऐसे पुरुष थे, जो हमें न केवल ऐसी शिक्षा ही दे सकते थे, वरन् व्यवहार से हमें उसमें दक्ष भी कर

सकते थे। शब्दों के असली अर्थों में वही पंचायती राज्य के प्रतीक थे। वह बडे प्रवीण राजनीतिज्ञ थे। भारतीय राजनीति में उतरते ही, उन्होंने जान लिया कि इस जात-पांत के पचडे में पडे हुए देश मे अगर हमें स्वतंत्र होना है, तो हमे एक दूसरे से मनुष्यत्व के नाते मिलना होगा, और इसी से उन्होंने अस्पृश्यता, और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध जेहाद छेड दिया। आनेवाली पीढियां समझेंगी कि किस प्रकार इस निरंतर २५ वर्ष से भी अधिक समय से चलते रहने वाले जेहाद (धर्मयुद्ध) से, उन्होंने हम लोगों में साधारण मनुष्यत्व की भावना को रोपा, और इस देश मे एक राष्ट्रीयता की नींव रक्खी।

इस समय भारतवर्ष को उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। परंतु केवल इसी देश के वासियों को महान् दु:ख नहीं हुआ है, संपूर्ण विश्व रो रहा है। उन्होंने हमें तो स्वतंत्रता दिलाई, पर संपूर्ण संसार को भी संदेश दिया। वह न केवल हमारे राष्ट्रपिता थे, वरन् मानवता के गुरु भी। संसार की आधुनिक सभ्यता इस समय संकटकाल में है। हम एक ढालू पहाड़ी के छोर पर खड़े है, और डर है कि हम फिर एकबार जंगली अंधकारमय युग के गर्त मे गिर जायँगे—ऐसी शक्तियाँ इस समय काम कर रही हैं। परंतु ये शक्तियाँ अब की बार बाहर से आकर हमलावर नहीं होंगी, बल्कि मनुष्यो में ही वे प्रवृत्तियों के

रूप मे कार्य कर रही है। ऐसे संकटग्रस्त संसार को उन्होंने प्रेम और अहिंसा का संदेश दिया। वह एक क्रांतिकारी थे और संसार को उन्होंने उपदेश दिया कि वह अपनी प्रवृत्तियों में उतना महान् परिवर्तन करे और ऐसे सिद्धांतो पर अपना निर्माण करें कि हमारी सभ्यता पुन अंधकार-युग में न पड सके। वह हमें एक नवयुग और नवीन सभ्यता जो मनुष्य के सम्मान पर आधारित हो देने आए थे, और वह भी ऐसे संसार को जिसने अपने को ज्ञान की चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। अत. स्वाभाविक ही है कि संपूर्ण संसार ऐसे जगत् गुरु के निधन पर शोक मनावे।

गांधीवाद जीवित रहेगा

[डॉ० गोपीचंद भार्गव, प्रधान मंत्री, पूर्वी पंजाब]

हमने अपने पिता को खो दिया है और जीवन-भर अनाथ ही रहेंगे। बापू अब नहीं रहे। गांधीजी तो चले गए, पर गांधीवाद सर्वदा के लिये जीवित रहेगा।

शांति और सद्भावना के लिये जिए और मरे

[पं० रविशंकर शुक्ल, प्रधान मंत्री, मध्य प्रांत]

देश पर जो सबसे बड़ी विपत्ति आ सकती थी, वह आ गई। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी को गोली से मार दिया गया

है। यह घटना इतनी हृदय-विदारक है कि हमारे पास इसे प्रकाश में लाने के लिये शब्द नहीं हैं, और न हम ऐसे समय ठीक-ठीक सोच ही सकते हैं। हम स्तब्ध और प्रकंपित हैं, परंतु फिर भी हमे न भूलना चाहिए कि महात्माजी शांति और सद्भावना के लिये जिए और मरे।

स्वर्गीय पथ-प्रदर्शक

[श्रीगोपीनाथ बार्दोलोई, प्रधान मंत्री, आसाम]

महात्मा गाधी की मृत्यु से भारतवर्ष ने उस स्वर्गीय पथ-प्रदर्शक को खो दिया है, जिसमे भारत के ऊपर पडी हुई विपत्तियों को निवारण करने की अभूतपूर्व शक्ति थी। वीरता के कार्यों मे ईसा मसीह के बाद गाधीजी का ही नाम आता है। गाधीजी की मृत्यु से न केवल शोक और प्रार्थना का दिवस ही आता है, वरन् अपने हृदयों को टटोलने का भी। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह महात्माजी की शिक्षाओ को ग्रहण करे।

प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्षों की

स्वतंत्र भारत पर कलंक का टीका

[श्रीमहामायाप्रसादसिंह, प्रधान प्रा० का० कमेटी, बिहार]

आज जब सारे विश्व के, सारे देश के और सारी दुनिया के दिल से खून को धारा बह रही है, जब हरएक देशवासी दर्द और गम से, शोक और पीड़ा से कराह रहा है, तब क्या कहा जाय और कैसे कहा जाय। बापू का निधन हमारे महान् देश के विशाल इतिहास मे, नहीं-नहीं, सारे विश्व के इतिहास मे सबसे बडा और सबसे घातक निधन है। बापू की हत्या इतिहास की सबसे निर्दय और कायरता-पूर्ण हत्या है। सदियों की गुलामी के बाद स्वतन्त्र होने पर शुरू-शुरू में ही स्वतन्त्र भारत के सिर पर कलक का काला टीका लगा है, कैसा दुर्भाग्य है, कैसा अभिशाप है।

अगर हम में सच्चाई और वफादारी है, अगर हममें प्रेम और लगन है, अगर हममें चरित्र और नैतिक बल है, तो बापू का आशीर्वाद और महाप्रकाश सर्वदा हमारे साथ रहेगा। बापू ने हमारे जकडे हुए हाथों को खोलकर उनमें तोप और ऐटम बम-से बडी ताकत भर डाली। वह ताकत है प्रेम और एकता, सत्य और अहिंसा।

नवीन संसार का मार्ग-दर्शक

[श्रीसुरेंद्रमोहन घोष, प्रधान प्रां० का० कमेटी, बंगाल]

उस संध्या को राष्ट्र चोट से अचेतन हो गया। एक पागल मनुष्य ने इस संसार के महानतम व्यक्ति को लूट लिया। अपने जीवन मे अपने कमज़ोर शरीर से गांधीजी ने कई बार मृत्यु को चुनौती दी, और अपनी अमर आत्मा से वह निरंतर ही मृत्यु को चुनौती देते रहेंगे। उन्होंने न हमे केवल आज़ादी ही दी, बल्कि और कुछ भी। उन्होंने मनुष्य को उसकी खोई हुई बुद्धि दी। सर्वोपरि उन्होंने सर्व-साधारण को मानव-सम्मान के उच्च शिखर पर पहुँचा दिया है। सब अधिकारों और ज़िम्मेदारियों के साथ अमर महात्मा गांधी हमे नवीन संसार का मार्ग दिखाने के लिये सर्वदा हमारे साथ रहेंगे। अपने उपदेशों और लेखों में उन्होंने हमारे लिये काफ़ी छोड़ दिया है। हमे उनको अंत-रात्मा से कभी न भूलना चाहिए।

मुसलमान गांधीजी को कभी न भूलेंगे

[खान मलोगुलखाँ, प्रधान प्रां० का० कमेटी, सीमाप्रांत]

महात्मा गांधी—इस शताब्दी के सबसे बड़े शांति-उपासक और मानव-जाति के सबसे बड़े शुभचिंतक चले गए। उन्हीं के अहिंसात्मक संघर्ष से भारत को आज़ादी मिली, और

आज से धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी अपूर्णनीय क्षति हुई है। वह पाकिस्तान के बँटवारे के बाद से अपने जीवन के अंत तक साम्प्रदायिक शांति के लिये घोर प्रयत्न करते रहे। अपने साम्प्रदायिक एकता के आंदोलन से महात्माजी ने अपने को मुसलमानों में अति प्रिय बना लिया था, और मुसलमान उन्हें अपने जीवन-पर्यंत नहीं भूलेंगे।

सीमाप्रांत में उनकी मृत्यु जनता के लिये बड़ी भारी दुर्घटित क्षति समझी जा रही है।

ईसा की भाँति अहिंसा के प्रतीक

[मौलाना मुहम्मद तय्यबुल्ला, प्रधान प्रां० कां० कमेटी, आसाम]

ईसा की भाँति अहिंसा के प्रतीक महात्माजी सत्य, शांति एवं इस्लाम की रक्षार्थ मारे गए। उनका पिछला उपवास मुसलमानों के लिये ही हुआ था। वह उपवास बापू ने केवल इसलिये किया था कि साम्प्रदायिकता की आग पूरे भारतवर्ष ही को भस्म करने जा रही थी। इस सब वातावरण का अब अंत होना चाहिए। बापू के प्रति यही हमारी सर्वोपरि श्रद्धांजलि होगी।

समाजवादी नेताओं की

नवयुग की अभिलाषाओं के प्रतिनिधि

[आचार्य नरेन्द्रदेव, वाइस चांसलर, लखनऊ-विश्वविद्यालय]

अन्य देशों में महापुरुष उत्पन्न हुए हैं, लेकिन मेरी अल्पबुद्धि मे महात्मा गाधी-जैसा अद्वितीय, बेजोड़ महापुरुष केवल भारतवर्ष मे ही जन्म ले सकता था, और वह भी बीसवी शताब्दी मे, क्योंकि महात्मा गाधी ने भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति को, उसकी पुरातन शिक्षा को परिष्कृत कर, युगधर्म के अनुरूप उसको नवीन रूप प्रदान कर उसमें वर्तमान युग के नवीन सामाजिक एव आध्यात्मिक मूल्यों का पुट देकर एक अद्भुत एव अनन्यतम सामजस्य स्थापित किया। उन्होंने इस नवयुग की जो अभिलाषाएँ है, जो आकाक्षाएँ हैं, जो उसके महान् उद्देश्य हैं, उनका सच्चा प्रतिनिधित्व किया है। इसीलिये वह भारतवर्ष के ही महापुरुष नहीं अपितु समस्त संसार के महापुरुष हैं। यदि कोई यह कहे कि उनकी राष्ट्रीयता सकुचित थी, तो वह गलत कहेगा। यद्यपि महात्मा गाधी स्वदेशी के व्रती थे, भारतीय संस्कृति के पुजारी थे तथा भारतीय राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक थे, किंतु उनकी राष्ट्रीयता उदारता से पूर्ण थी, ओत-प्रोत थी। वह संकुचित नहीं थी। संकुचित राष्ट्रीयता वर्तमान समाज का एक बड़ा अभिशाप है। किंतु महात्माजी का हृदय विशाल था। जिस

प्रकार भूकंप-मापक यंत्र पृथ्वी के मृदु-से-मृदु कंप को भी अपने में अंकित कर लेता है, उसी प्रकार मानव-जाति की पीड़ा की क्षीण रेखा भी उनके हृदय पटल पर अंकित हो जाती थी।

हमारा देश समय-समय पर महापुरुषों को जन्म देता रहा है। पतित अवस्था में भी, गुलामी की हालत में भी भारतवर्ष ही अकेला ऐसा देश रहा है, जो जगद्‌वंद्य महापुरुषों को जन्म दे सका है। मैं समझता हूँ, इस व्यवसाय में भारत सदा से कुशल रहा है। हमारे देश में भगवान् बुद्ध हुए तथा अन्य धर्म-प्रवर्तक हुए, किंतु सामान्य जनता के जीवन के स्वर को ऊँचा करने में कोई भी समर्थ नहीं हो सका— यह यथार्थ है कि पीड़ित मानवता के उद्धार के लिये नूतन धार्मिक संदेश उन्होंने दिए थे, समाज के कठोर भार को वहन करने की समर्थता प्रदान करने के लिये उन्होंने नए-नए आश्वासन दिए थे, उनके विक्षुब्ध हृदयों को शांत करने के लिये पारलौकिक सुखों की आशाएँ दिखाई थीं। लेकिन सामान्य जीवन के जो कठोर सामाजिक बंधन हैं, जो जनता के ऊपर कठोर शासन चल रहा है, जो सामाजिक और आर्थिक विषमताएँ हैं जो दीनों और अकिंचन जनों को भाँति-भाँति के तिरस्कार और अवहेलनाएँ सहनी पड़ती हैं। इन सब समस्याओं को हल करनेवाला यदि कोई व्यक्ति हुआ, तो वह महात्मा गांधी हैं। उन्होंने ही सामान्य जनों के जीवन-स्तर को ऊँचा किया।

उन्होंने जनता में मानवोचित स्वाभिमान को उत्पन्न किया। उन्होंने ही भारतीय जनता को इस बात के लिये समर्थता प्रदान की कि वह साम्राज्यशाही के भी विरुद्ध विद्रोह करे और यह भी पाशविक शक्ति का प्रयोग करके नहीं, किंतु आध्यात्मिक बल का प्रयोग करके हुआ। उनकी अहिंसा बेजोड़ थी। भगवान बुद्ध ने कहा था—"अक्रोधेन जयेत् क्रोधम्" अर्थात् अक्रोध से क्रोध को जीतना चाहिए। उनकी अहिंसा का सिद्धांत भी केवल व्यक्तिगत आचरण का उपदेश-मात्र था, किंतु सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिये अहिंसा को एक साधन, एक उपकरण बनाना और राजनीतिक क्षेत्र में अपने महान ध्येय की प्राप्ति के लिये उसका सफल प्रयोग करना महात्मा गांधी का ही काम था और चूँकि वह संसार में अहिंसा को प्रतिष्ठित करना चाहते थे, इसलिये उनकी अहिंसा की व्याख्या भी अद्भुत, बेजोड़ और निराली थी। उनकी अहिंसा की शिक्षा केवल व्यक्तिगत आचरण की शिक्षा नहीं है। उनकी अहिंसा की शिक्षा समाज की विषमताओं का, जो वैमनस्य और विद्वेष के कारण हैं, उन्मूलन करना चाहती है। अहिंसा के ऐसे व्यापक प्रयोग से ही अहिंसा को संसार में प्रतिष्ठा हो सकती है। सामाजिक और आर्थिक विषमता को दूर कर मनुष्य को मानवता से विभूषित कर, आत्मोन्नति के लिये सबको ऊँचा उठाकर और जाति—पाँति और संप्रदायों के बंधनों को तोड़कर ही हम अहिंसा को सच्चे अर्थों

में प्रतिष्ठा कर सकते हैं, यदि किसी ने यह शिक्षा दी, तो गांधीजी ने। इसलिये यदि हम उनके सच्चे अनुयायी होना चाहते हैं, तो समाज से इस विषमता को, इस ऊँच-नीच के भेद-भाव को, अस्पृश्यता को, समाज के नीचे के स्तर के लोगों की दरिद्रता को और आर्थिक विषमता को समाज से सदा के लिये उन्मूलित करके ही हम सच्चे अहिंसक कहला सकते हैं।

हत्या का उत्तरदायित्व सारे भारत पर

[श्रीमती अरुणा आसफअली, समाजवादी नेत्री, दिल्ली]

महात्मा गांधी की हत्या का उत्तरदायित्व सारे भारत पर है, भारत के सभी प्रगतिवादी राजनीतिक दलों को चाहिए कि वे प्रतिक्रियावादी शक्तियों का अंत करने के लिये सामूहिक रूप से कार्य करें। इधर कुछ दिनों से देश का वातावरण ऐसा हो गया था, जिससे महात्मा गांधी बहुत दुखी रहते थे।

जब कभी गांधीजी को साम्प्रदायिक हत्याकांड की खबर मिलती, तब वह कहते थे कि अब मेरे जीने की आवश्यकता नहीं। उन्हें कभी विश्वास नहीं होता था कि आजादी के बाद देश में इतनी खूँरेजी होगी। वह हमेशा देश के विभाजन का विरोध करते रहे, और जब भारत का विभाजन हो गया, तब

वह बिलकुल निरुत्साह हो गए। उस विपत्ति की घड़ी में हरएक राजनीतिक कार्यकर्ता को चाहिए कि वह देश में मौजूद रहे।

आदर्शों का पालन उनका स्मारक

[श्री अच्युत पटवर्धन, समाजवादी नेता, बंबई]

गांधीजी के स्मारक के लिये देश में मूर्ति की स्थापना उपयुक्त नहीं होगी। उनके आदर्शों का पालन करना ही सर्वश्रेष्ठ स्मारक होगा।

साम्प्रदायिकता का जहर जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान कायम हुआ, आज भी अनेक लोगों में फैला हुआ है। गांधीजी के इस संदेश को कि अपना घर ठीक करने के लिये दूसरे के घर को नहीं जलाना चाहिए, भुला दिया गया है।

गांधीजी ने इस देश को यहाँ रहनेवाली हर जाति और संप्रदाय के लिये खुशहाल बनाने की कोशिश की। उन्होंने देश की विभिन्न शक्तियों को एकत्रित किया, उनके भेदों को दूर किया और देश-हित के कार्य में उन्हें लगा दिया। क्या एकता का वह डोर जो सबको बाँधे हुए था, गांधीजी की मृत्यु से टूट जायगा।

निकट-जनों की

सारे विश्व के सर्वश्रेष्ठ बंधु

[श्रीमणिलाल गांधी]

हमको तो पितृ-शोक हुआ ही है, पर गांधीजी केवल हमारे ही पितृदेव नहीं थे. वह तो समस्त भारत के राष्ट्र-पिता तथा सारे विश्व के सर्वश्रेष्ठ बंधु थे । सारा विश्व उनके शोक से दु खी है। उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, पर स्वर्ग से. वह हमारा मार्ग प्रदर्शन करते रहेगा।

आध्यात्मिक रूप से हमारे बीच रहेंगे

[श्रीदेवीदास गांधी, सपादक, हिंदुस्तान टाइम्स]

मुझ मे और बापू मे पिता-पुत्र का जो स्वाभाविक प्रेम था, उसका साक्षी ईश्वर है। वह दिन आज मुझे भी याद है, जब लगभग बारह वर्ष की आयु मे मैं बापू से अलग होकर विशेष अध्ययन के लिये काशी जा रहा था और तब बापू ने झट आगे बढे प्रेम से मेरा माथा चूम लिया था। पिछले कुछ महीनों से जब से कि बापू दिल्ली मे थे मेरे तीन वर्षीय पुत्र को उनका लाड-प्यार पाने का सौभाग्त प्राप्त हुआ था। मेरे लिये अभी कुछ दिन हुए एक बार बापू ने मुझसे कहा भी था कि जिस दिन तुम लोग बिडला भवन नही आते, उस दिन तुमसे भी ज्यादा मुझे गोपू की याद आती है। अब यह छोटा बालक जब वैसा मुँह बनाता है, जैसा उसके दादा उसका स्वागत करते

समय बनाया करते थे तो हमारी आँखो से आँसू निकल पड़ते हैं। इन बातो के बावजूद भी मैं इस बात पर भार देना चाहता हूँ कि गाधीजी की गणना पारिवारिक व्यक्तियों मे नहीं हो सकती। मैने बहुत पहले ही खयाल छोड़ दिया था कि वह अकेले मेरे ही पिता हैं। मेरे लिये वह वैसे ही ऋषि थे, जितने कि आप किसी के लिये। मैं आपकी तरह उनका अभाव महसूस कर रहा हूँ। मैं भयंकर विपत्ति को, ऐसे प्राणी को तटस्थ भावना से देखता हूँ, जो मानो उत्तरी ध्रुव में रहता हो, और जिससे उस महापुरुष के साथ रक्त या जाति का कोई सबध न हो। उनकी हानि का तो हमको अभी धुँधला-सा आभास हो रहा है।

समवेदना के जो हार्दिक संदेश मुझे और परिवारवालों को मिल रहे हैं, उनसे हमको बडी सात्वना मिल रही है। लेकिन हम मानते हैं कि समवेदना भेजनेवाले शायद इससे भी कहीं अधिक दुखी और संतप्त हैं। कौन किसको दिलासा दे ?

बदले का प्रश्न ही नहीं उठाता। क्या प्रतिशोध से बापू लौट आयँगे ? क्या वे चाहेंगे कि हम प्रतिशोध ले ? नहीं, शतवार नहीं। लोग कहेंगे हम उनकी रक्षा नहीं कर सके। पर प्रश्न यह है कि क्या हम किसी की रक्षा कर सकते हैं। भगवान् के अतिरिक्त अपने ७८ वर्ष के जीवन मे उन्होंने किसी से रक्षा की याचना नहीं की। उनको मृत्यु के घाट उतार देना कोई बडी बात न थी। शोक के समय हमें यह न भूल जाना चाहिए कि

हम उन व्यक्तियों पर झूठ-मूठ का दोषारोपण न करें, जो कि स्वयं उस विपत्ति से, हम लोगों से अधिक दुखी हैं।

मैं इस बात को नहीं मानता कि भविष्य अंधकारमय है। अवतार के अतिरिक्त भविष्यवाणी कौन कर सकता है? हाँ, वर्तमान अवश्य अंधकार-पूर्ण है। पर यदि हम बापू के कथनानुसार उनके बताए मार्गों पर चलेंगे, तो हमारा भविष्य बिगड़ नहीं सकता। मैं इसीलिये निराशावादी नहीं हूँ। यदि हम बापू से यह कहते कि वह सदैव के लिए हमारे बीच रहें, तो वह हमें अवश्य स्वार्थी और लोभी कहते। हमें अपने पैरों पर खड़ा होना है। वह शारीरिक रूप से हमारे बीच में नहीं हैं, पर आध्यात्मिक रूप से वह सदैव हमारे बीच में रहेंगे और हमारा पथ-निर्देश करते रहेंगे।

गांधीजी के रूप में ईश्वर ने मानवता को नापने का माप-दंड भेजा

[दादा धर्माधिकारी]

यह बात अधिक मूल्य की नहीं है कि गांधीजी का हत्यारा ब्राह्मण था। यदि उन्हें कोई हिंदू मारता, तो किसी-न-किसी जाति का होता ही, परंतु साथ-साथ मुझे इस बात की शर्म है कि वह एक ब्राह्मण था और बापू के प्राण लेकर उस ब्राह्मण ने जो पाप किया है, उसका प्रक्षालन यदि एक लाख

ब्राह्मणों का खून बहाकर भी होता तो इस नीच धर्माधिकारी का खून सबसे पहले बहाया जाय। महात्माजी की समता का व्यक्ति आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व ही क्या, मानव की शुरूआत से अब तक भी नहीं हुआ। ईसामसीह ने केवल इतना ही सिखाया कि यदि कोई कष्ट दे, तो उसे सह लो, उसका प्रतिकार न करो; परंतु गांधीजी ने कहा कि अन्याय का प्रतिकार तो करना ही चाहिए। हमारी दुश्मनी अन्याय से है। हम अन्याय दूर करना चाहते हैं, अन्यायी को मारना नहीं चाहते।

हिमालय को देखकर कालिदास ने कहा था कि पृथ्वी की नाप करने के लिये ईश्वर ने एक मानदंड तैयार किया है। आज जब हम गांधीजी की मानवता की महानता को देखते हैं, तब बरबस कहना होता है कि ईश्वर ने उनके रूप में मानवता को नापने का एक माप-दंड भेजा है। लोग गांधीजी को देवता और ईश्वर मानते हैं, परंतु मैं उन्हें साधारण मानव ही मानता हूँ। अभी तक दुनिया में यदि मानव कोई हुआ है, तो वह केवल बापू और बाकी सब उपमानव।

श्रीकृष्ण के बाद प्रलय हुआ, परंतु गांधीजी की महानता को हम तभी सिद्ध कर सकेंगे, जब गांधीजी के बाद फैलने-वाली अराजकता को हम रोक सकें।

इधर पंद्रह दिनों से लोगों ने हमें बहुत उपदेश दिए हैं कि मनुष्य यह पार्थिव शरीर छोड़कर पूरे विश्व में व्याप्त हो

जाता है और उसके लिये शोक नहीं करना चाहिए, परन्तु हमें तो उनके उस पार्थिव शरीर से भी मोह हो गया था। हम उनको हँसते देखना चाहते थे, उनकी वर्धा की सड़कों पर घूमते देखना चाहते थे, और हमें तो उनकी वह अँगुली भी चाहिए, जिससे बताकर वह हमें समझाते और सिखाते थे।

गांधीवाद हमारा धर्म है

[श्री वी० ए० सुंदरम्, मद्रास]

तामिल निवासियों से मिलने की हार्दिक इच्छा एवं तामिल प्रांत के दर्शन की आंतरिक अभिलाषा के साथ महात्मा गांधी तथा उनकी पत्नी १९१५ में मद्रास पहुँचे। मद्रास के निवासियों तथा दक्षिणी भारत की जनता ने उनका हार्दिक स्वागत किया। विक्टोरिया पब्लिक हाल में गांधीजी ने अपने भाषण में उन तामिल विद्यार्थियों के प्रति श्रद्धा प्रकट की थी, जिन्होंने दक्षिणी ऑफ्रिका के सत्याग्रह में अनुपम बलिदान का आदर्श उपस्थित किया था।

उस समय किसी ने यह नहीं सोचा होगा कि सत्याग्रह की पावन शांति पर जाज्वल्यमान सूर्य का उदय होने जा रहा है। पवित्र सुंदर पहाड़ियों से होकर बहती हुई गंभीर

हवा महात्मा के शरीर का स्पर्श कर रही थी, जब कि बिगलेपुर में गांधीजी ने १६१६ के आस-पास हड़ताल एवं सत्याग्रह का संदेश दिया था। सत्याग्रह-संग्राम में तामिल-नाद के कार्यों की प्रशसा करते-करते महात्माजी कभी थकते न थे।

श्रीकृष्ण के ही सदृश गांधीजी ने मरकर अमरता प्राप्त कर ली है। श्रीकृष्ण के पैर मे तीर लगा था इन्हें छाती मे गोली लगी। मुझे यह कहने मे कोई आपत्ति नहीं कि गाधीजी श्रीकृष्ण के ही अवतार थे। शांति के इस महान् उपासक ने हँसकर अपनी खुली छाती पर गोलियों का प्रहार सहा, और मरते समय भी उसी पवित्र नाम का उच्चारण किया, जिसका वह जीवन-भर जप करते रहे। जिस चंदन की लकड़ी ने गाधीजी के दुर्बल शरीर को भस्म के रूप मे परिणत कर दिया, उसने उन लोहे की गोलियों को भी पवित्र कर दिया होगा। आज हम देख रहे हैं कि महात्मा का विश्व-प्रेम सारे विश्व मे शनै.-शनै. आच्छादित होता जा रहा है। यह वास्तव में एक अनुपम एवं आश्चर्य-जनक वस्तु है।

गांधीजी का अवसान आज अवश्य हो गया है, पर आत्मा तो उनकी अमर हो गई। सारा भारत आज गांधीवादी है। गांधीवाद ही आज से हमारा धर्म है। उनका प्रेम ही हमारा सिद्धात है। हमे सदैव स्मरण रखना चाहिए कि ब्राह्म मुहूर्त मे प्रात तारा के रूप में गांधीजी मुस्किरा रहे हैं। ओ३म् के पवित्र उच्चारण में उनके शब्द गूँज रहे हैं। शिशुओं के

निर्दोष आनन पर उनकी मुस्कान खेल रही है। भारत की प्रत्येक नारी के हृदय में उनकी विशदता व्याप्त है, मानो आँखों की प्रेम-भरी कटाक्षियों में वह झाँक रहा है। आज से प्रात तारा गांधी तारा के रूप में उदित हो रहा है।

ओ३म् शांति, ओ३म् गांधी।

बापू जीवित हैं

[डॉ० सुशीला नैयर]

कहते हैं, समुद्र-मथन में अमृत निकला। हीरे-जवाहरात निकले और हलाहल जहर निकला। जहर इतना घातक था कि सारे जगत् का नाश कर सकता था। उसे क्या किया जाय ? सब इस बारे में चिंतित थे। शिवजी आगे बढ़े, और उन्होंने वह जहर पी लिया। हिंदुस्तान के समुद्र-मथन से आजादी का अमृत निकला। साथ ही, आपस की मार-काट का, दुश्मनी का, वैर का हिंसा का जहर भी निकला। गांधीजी ने इसके सामने अपनी आवाज बुलंद की। लोग अपनी मूर्छा से चौंके, लेकिन जागे नहीं। पाकिस्तान के लोगों के कानों में भी वह आवाज पहुँची। बापू की आवाज अकेली गगन में गूँज रही थी—'इस आग को बुझाओ, नहीं तो दोनों

इस आग में भस्म हो जाओगे।" उनका हृदय दिन-रात पुकारता था—"हे ईश्वर, इस ज्वाला को शांत कर, नहीं तो मुझे इसमें भस्म होने दे। मैं इसका साक्षी नहीं बनना चाहता।"

जो बापू अनेक उपवासों में से, अनेक हमलों से बच निकले थे, वह अपने ही एक गुमराह पुत्र की गोली से न बच सके। पुत्र के हाथ से हलाहल का प्याला लेकर वह पी गए, ताकि हिंदुस्तान ज़िंदा रह सके। किसी ने कहा, जगत् ने दूसरी बार ईसा को सूली पर चढ़ते देखा है।

बापू! आपने जो अगाध प्रेम मुझ पर बरसाया, जो अगाध विश्वास बताया, भूल पर भूल क्षमा की तुच्छ, अज्ञान, मतिहीन को अपनाया, सिखाया, अपनी बेटी बनाया, उसके लायक बनाना। एक बार बापू ने महादेव भाई से बातें करते हुए कहा था—'सुशीला ने सबसे अंत में मेरे जीवन में प्रवेश किया, मगर वह सबसे निकट आई। मुझमें समा गई।' हे प्रभु, उसी समय तूने मुझे क्यों न उठा लिया। उसके बाद सुशीला उनसे दूर चली गई। बापू की बात पर उसके मन में शंका आने लगी, मगर बापू ने धीरज से उसकी शंकाओं को निवारण करने का प्रयत्न किया। उसे अपने से दूर न जाने दिया। एक बार कहने लगे—"तूने 'हाउंड ऑफ् हेवेन' कविता पढ़ी है? तू मुझसे भाग कैसे सकती है? मैं भागने दूँ, तब न?" इस नालायक़ बेटी के

प्रति इतना प्रेम! हे प्रभो, जो योग्यता उनके जीवन-काल में मुझमें न थी, वह उनके जाने के बाद दोगे?

शाश्वतता की भावना मुझमें रहने लगी है

[मीरा बहन]

मेरे सिर्फ दो थे—ईश्वर और बापू, और अब वे दोनों एक हो गए हैं।

जब मैंने बापू की मृत्यु की खबर सुनी, तो मेरे अंतर की आत्मा को बंदी बनानेवाले दरवाजे खुले और बापू की आत्मा ने उसमें प्रवेश किया। उस पल से शाश्वतता की नई भावना मुझमें रहने लगी है।

यह सच है कि प्रिय बापू जीते-जागते रूप में हमारे बीच नहीं रहे, लेकिन उनकी पवित्र आत्मा तो आज हमारे ज्यादा नजदीक है। एक समय बापू ने मुझसे कहा था—'जब मेरा यह शरीर नहीं रहेगा तब भी हम एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे। तब मैं तुम्हारे ज्यादा नजदीक आ जाऊँगा। यह शरीर तो बाधा-रूप है।" ये शब्द मैंने श्रद्धा से सुने थे। अब मैं अपने अनुभव से बापू के उन शब्दों का दिव्य सत्य जान पाई हूँ।

उस विधि-निर्मित शाम को जब मैं ध्यान में अचल बनकर बैठी थी, मैंने सारी दुनिया में से गुजरनेवाली संताप की कँप-

कँपी का अनुभव किया। मनुष्य-जाति की मुक्ति के लिये एक बार फिर अवतार का खून बहा, और धरती इस भयानक पाप के डर और बोझ से कराह उठी।

वह पाप एक आदमी का नहीं है। वह युग-युग में सारी दुनिया को ढंक लेनेवाला पाप है। उसे एकमात्र ईश्वर के भक्तों का बलिदान ही रोक सकता है।

अब बापू हमारे लिये जो काम छोड गए हैं, उसे पूरा करने में हमे जमीन-आसमान एक कर देने चाहिए। बापू हम सबके लिये—हर मर्द, औरत और बच्चे के लिये—जिए और मरे। वह लगातार काम करते-करते जिए, और इसलिये शहीद की मौत मरे कि हम नफ़रत, लालच, हिंसा और झूठ के बुरे रास्ते से पीछे लौटें। अगर हमे अपने पापों का प्रायश्चित्त करना है और बापू के पवित्र मकसद को आगे बढ़ाने में हिस्सा लेना है, तो हर तरह की सांप्रदायिकता और दूसरी बहुत-सी बातें खतम होनी चाहिए। काला बाजार, रिश्वतखोरी तरफदारी, आपसी जलन और उसी तरह हिंसा और असत्य के दूसरे काले रूप जड मूल से मिट जाने चाहिए। इन सबके साथ हमें मजबूती से और बिना हिचकिचाहट के काम लेना होगा। बापू प्रेम और दया के सागर थे, लेकिन बुराई के खिलाफ लड़ने में वह बड़े कठोर थे।

बापू ने भीतरी बुराई पर विजय पा ली थी, इसीलिये बाहर की बुराई से वह लड़ सके थे। भगवान् हमें इस तरह पवित्र

बनावे कि हम अपने सामने पड़े हुए बड़े भारी काम के लायक बन सकें।

युग का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति

[आमना मानम]

३० जनवरी इतिहास का सबसे भयानक दिन था। उसी दिन हजारों वर्ष बाद मानवीय पाशविकता गांधीजी की हत्या के रूप में फिर से देख पडी। यह कहना ठीक होगा कि इस कार्य से हिंद पर कलंक लगा है, और दुनिया के राष्ट्रों के बीच वह निंदा का पात्र बना है।

दयामय ईश्वर ने महात्मा को उत्पन्न कर दुनिया को एक रत्न दिया था। आजीवन महात्मा ने मानवता की सेवा की, सत्य के लिये संघर्ष किया और हमारी आजादी प्राप्त करने के लिये अपनी पूरी मानसिक, शारीरिक और आत्मिक ताकत लगा दी। वह बराबर अपने सिद्धांत पर अटल रहे। अहिंसा का उन्होंने कठोर रूप से पालन किया। उनके इस सिद्धांत से बहुत लोग आश्चर्य-चकित हुए, लेकिन वह महात्मा की इच्छा पूरी करता था।

अपने कर्मफल का उपभोग बहुत थोडे ही लोग कर पाते है। महात्मा उन्हीं मे से हुए। उन्होंने एक महान् देश को अपना विकास करने के लिये स्वतंत्र किया।

सामाजिक तौर पर वह ऋषि थे, राजनीतिक तौर पर राष्ट्र-निर्माता और नैतिक तौर पर ईसा मसीह। वह किसी एक धर्म के नहीं थे, वह केवल सत्य-धर्म को माननेवाले थे। कम-से-कम उनका हम जो मूल्यांकन कर सकते हैं, वह होगा उन्हें युग का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति मानना। यह नियति का विचित्र खेल है कि जिस व्यक्ति ने अपना सारा जीवन सेवा में अर्पण किया, वह अपने ही एक व्यक्ति द्वारा मारा जाय। लेकिन खैर, उनका उद्देश्य कुछ-न-कुछ पूरा हो ही गया था। जीवन या मृत्यु उनके लिये कोई भेद नहीं रखता था। उन्हें इस संसार में रहने की जरूरत नहीं थी, संसार को उनकी जरूरत थी। गांधीजी का अंतिम त्याग ईसा के त्याग से कम न था।

हिंद की लाखों संतानों ने अपने प्यारे बापू से क्या पाया? एक स्वतंत्र देश जो उनका हार्दिक उद्देश्य था। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। इससे भी महत्त्व-पूर्ण है वह सिद्धांत, जिसके लिये बापू ने अपने प्राण दे दिए।

क्या हम उनके द्वारा छोड़े हुए गुणों के योग्य हैं? क्या हम बापू के पथ पर चलते रहेंगे? ये सवाल हैं, जिन पर हमें विचार करना है। निस्संदेह हम लोग अपने प्यारे पिता की कृतघ्न संतान साबित हुए। जब-जब महात्मा की मृत्यु पर शोक मनाया जायगा, तब-तब हमारी कृतघ्नता स्मरण की जायगी। आनेवाली पीढ़ी हमें स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिये बधाई दे सकती है, लेकिन साथ ही वह हमें राष्ट्र-पिता की हत्या के लिये कोसेगी।

क्या इसके प्रायश्चित्त का कोई उपाय नहीं है ? एक ही रास्ता है और वह गांधीजी के विचार, उनके कार्य और उनके उद्देश्य को पूरा करना है। वह हमारे बीच नहीं हैं, तो क्या ? उनका बताया हुआ रास्ता हमारे सामने है।

देशी नरेशों व उनके मंत्रियों की

हिंदू-मुस्लिम एकता के लिये प्राण दिए

[हिज़ एक्ज़ाल्टेड हाइनेस, निज़ाम, हैदराबाद]

महात्मा गांधी सत्य और अहिंसा के जीवित शरीर थे, और उन्हीं के त्याग और तपस्या के कारण भारत को आज़ादी मिली। हिंदू-मुसलिम एकता के लिये उन्होंने अपने प्राण गवाँ दिए। भारत और विश्व के इतिहास में उनके महान् कार्य सर्वदा स्मरण किए जायँगे।

शाश्वत आदर्श अमिट रहेंगे

[श्रीमीर लायकअली प्रधान मंत्री]

इस आकस्मिक और हृदय-विदारक घटना को सुनकर सब लोग चकित हो गए। महात्माजी की मृत्यु से दुनिया को बहुत बड़ी क्षति हुई है। आपका नश्वर शरीर आज नहीं रहा, लेकिन आपके अनश्वर और शाश्वत आदर्श हमारे मस्तिष्क में अमिट रहेंगे।

मानवता के साथ अत्याचार

[नवाब जंगबहादुर]

इस अभागे देश के इतिहास में आज का दिन अत्यंत दुख के साथ लोग याद किया करेंगे। यह केवल महात्माजी के साथ नहीं, बल्कि मानवता के साथ अत्याचार किया गया है। इस घटना से देश की आत्मा कराह उठी है। ईश्वर हम लोगो की दानवी शक्तियो से रक्षा करे।

महती क्षति

[हि० हा० महाराजा काश्मीर]

महात्माजी का निधन हमारे लिये महती क्षति है। मैं अपनी, महारानी और प्रजा की ओर से समवेदना प्रकट करता हूँ।

महात्माजी की आत्मा हमारे साथ

[हि० हा० महाराजा, मैसूर]

यह दुर्घटना व्यक्तिगत नहीं बल्कि संपूर्ण देशवासियों के लिये है। मै और मेरा परिवार इसे अपना निजी दुख समझकर शोक मना रहे हैं। महात्मा गांधी की आत्मा हमारे साथ है।

भयंकर दुर्घटना अवर्णनीय है

[सर ए० रामस्वामी मुदालियर, दीवान मैसूर]

इस भयंकर दुर्घटना का असर इतना गहरा और अचेतन करनेवाला है कि अभी हम न बोल सकते हैं, और न बता सकते हैं कि इसका परिणाम क्या होगा।

शांति के लिये संघर्ष करनेवाले

[श्रीके० सी० रेड्डी, प्रधान मंत्री, मैसूर]

घृणा और हिंसा की शक्ति से गांधीजी का निर्यात हो। यह ऐसी दुःखदायी घटना है कि कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि महात्माजी इन्हीं की शांति के लिये संघर्ष कर रहे थे।

महत्तम हिंदू

[हि० हा० महाराजा कोचीन]

यदि हिंदुओं में थोड़ा-सा भी आत्म सम्मान और इज्जत की भावना है तो उनको चाहिए कि वे इस महत्तम हिंदू के उपदेशों एवं आदर्शों के प्रचार के लिये अपनी सारी शक्ति लगा दें। यही एक उपाय है, जिससे हम अपना और अपने धर्म का रहना उचित करार दे सकते हैं।

महात्माजी अब भी हमारे साथ हैं

[श्रीजी० रामचंद्र, कांग्रेस-नेता, ट्रैवंकोर]

महात्माजी मरे नहीं हैं। वह मर ही नहीं सकते। वह अब भी हमारे नेता हैं। वह अब भी मार्ग दिखाते हैं। आइए, हम उनके अधूरे कामों को पूरा करें।

युग का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खो गया

[हि० हा० महाराजा, बड़ौदा]

हमारे जीवन-काल की महती दुर्घटना घटित हुई है, महात्मा गांधी को खोकर। हमने युग के सर्वश्रेष्ठ पुरुष को खो दिया है।

भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता

[हि० हा० महाराजा, पटियाला]

भारत के सर्वश्रेष्ठ नेता हमारे बीच से चले गए। पागलपन के इस कृत्य ने हमारे देश को दुख और अंधकार में डुबो दिया। यद्यपि गांधीजी अब नहीं हैं, तथापि उनकी आत्मा हमारे बीच सदा बनी रहेगी। मैं अपनी प्रजा के साथ युग के सर्वश्रेष्ठ पुरुष के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शांति और एकता का संदेश देनेवाला

[हि० हा० महाराजा, इंदौर]

महात्माजी ने दरिद्रों और दलितों की सबसे अधिक सेवा की। उनका संदेश शांति और एकता का था, उस शांति और एकता का, जिसमें मातृभूमि के सभी तबकों और दलों की भलाई हो।

भयानक निधन

[हि० हा० नवाब, भोपाल]

महात्माजी के निधन के शोक में हम सब सम्मिलित हैं। ऐसे समय, जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता थी, उनका निधन बड़ा ही भयानक है।

हमारी जाति के सर्वोच्च आदर्श

[सर वी० टी० कृष्णमाचारी दीवान, जयपुर]

महात्मा गांधी की मृत्यु भारत के लिये ही नहीं, संपूर्ण विश्व के लिये महती दुर्घटना है। अपने कमज़ोर शरीर में वह हमारी जाति के सर्वोच्च आदर्शों को वहन कर रहे थे। उनके प्रवचन और उपदेश हमें हमेशा ही उत्साह और ताक़त देते और अपनी नई आज़ादी की रक्षा करने में हमें मार्ग दिखाते रहे हैं।

कुछ अन्य जनों की

ज्योतिर्मय नक्षत्र अस्त हो गया

[जगगुरु श्री १०८ शंकराचार्य, ज्योतिर्मठ]

भारत तथा संसार का एक ज्योतिर्मय नक्षत्र अस्त हो गया। इस दुर्घटना से संसार दुःखी हुआ है। भगवान् उनकी आत्मा को शांति दें।

जीवन में समन्वयशीलता थी

[श्रीसंपूर्णानंद शिक्षा-मंत्री, युक्त प्रांत]

महात्मा गांधी महापुरुष थे। उनके जीवन में समन्वय-शीलता थी। उनके जीवन के प्रत्येक अंग से विभिन्न प्रकार की शिक्षाएँ मिलती हैं। महात्माजी ने हमारे सामने विभिन्न आदर्शों को रक्खा, जिनमें धर्म का आदर्श सर्वश्रेष्ठ है।

हिंदू-धर्म-शास्त्रों में कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है, अधिकारों का नहीं। इसका कारण यह कि प्राचीन विद्वानों की धारणा थी कि कर्तव्य के पश्चात् अधिकार स्वतः स्थान पाएगा। वर्तमान जगत् में अधिकार-शब्द ही मतभेद और भिन्नता का मूल कारण है। भारतवर्ष स्वतंत्र हो चुका है, इसके कर्तव्य व्याप्त और विस्तृत हो गए हैं। महात्माजी

श्रीमद्भगवद्गीता में बताए गए कर्तव्यों पर विशेष जोर देते थे।

सच्चे धर्म के सार

[श्रीजी० एल्० मेहता]

महात्मा गांधी के निधन से हमने ऐसे व्यक्ति को खो दिया, जिसमे बुद्ध का त्याग, ईसा मसीह की शहादत, सुकरात के ज्ञान तथा अब्राहम लिंकन की राजनीतिक शक्ति का समन्वय था। महात्मा एक क्रातिकारी थे जिन्होंने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के दिलों और दिमागों को बदल दिया। और तब भी वह समझौते मे विश्वास रखते थे। उन्होंने आजादी की अतिम लडाई तक लडी, लेकिन फिर भी वह सर्वश्रेष्ठ शाति के स्थापक थे। अपने जीवन-काल मे उनकी हालत मसीहा की जैसी हुई, जिसकी पूजा की जाती है, अनुगमन नही। गाधीजी केवल भारत की आत्मा के प्रतीक न थे, सच्चे धर्म के सार रूप भी थे। धर्म की अनेक भाषाएँ और स्वरूप होते है, लेकिन गाधीजी धर्म मे निहित सत्य, सामाजिक न्याय, दया और सहिष्णुता की वाणी बोलते थे। आजकल एक दूसरे से घृणा करने के लिये अनेक धर्म हैं, लेकिन गाधीजी के पास अपने दुश्मनों को प्यार करने के लिये अनेक धर्म थे। अपने जीवन और मृत्यु से गांधीजी ने दिखा दिया कि वह इस

सासारिक वातावरण के लिये बहुत महान और बहुत ऊँचे पड़ते थे। उनकी हत्या हुई, क्योंकि हमलोग अब तक कल्पना-विहीन हैं और अपने महायोगियों मे विश्वास नहीं रखते हैं।

गांधीजी एक अद्वितीय पुरुष

[डॉक्टर कृष्णलाल श्रीधरनी]

"अद्वितीय" शब्द गांधीजी के लिये उपयुक्त है। जैसे जीवन मे, वैसे ही मृत्यु के समय गांधीजी अद्वितीय रहे। आप उनके किसी प्रसिद्ध समकालीन को ले लीजिए, और उनसे उनकी तुलना कीजिए। परंतु गांधीजी के समान अन्य नहीं जन्मा। इतिहास मे एक भी ऐसा महापुरुष पैदा नहीं हुआ; जिसके इतने करोड़ अनुवर्ती उसके जीवन मे रहे हो। इसी प्रकार इतने देशो मे, इतनी बड़ी संख्या मे, लोग कभी एक व्यक्ति के लिये दुखी न हुए।

सदैव देवत्व के निकट रहनेवाला महात्मा अपनी मृत्यु पर लगभग अवतार मान लिया जाता है परंतु गांधीजी ने कभी अपने को देवदूत नहीं माना। अपने को 'महात्मा' शब्द से संबोधित होने पर वह बुरा मानते थे।

एक प्रकार से महात्मा गांधी ही एक असली दार्शनिक और क्रांतिकारी थे, जिन्हें आधुनिक भारत ने जन्म दिया। हमारे आंदोलन को उन्हीं ने असली दार्शनिक आदर्श दिया।

आप चाहे उनसे सहमत हों अथवा नहीं, परंतु वह उनका समाज-निर्माण का अपना भाव था, जिससे कोई भी जीवित मानव अछूता न बचा। यद्यपि भारतवर्ष ने बहुत-से वीर पुरुषों को जन्म दिया है, फिर भी महात्माजी ही तब तक अकेले क्रांतिकारी रहे, जब तक कि तीन गोलियों ने उनको समाप्त न कर दिया।

बापू के १२५ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा में एक अनुपम आकर्षण था। उस व्यक्ति के लिये, जो निर्वाण की कामना करता हो, लोक सेवा के लिये अपनी आयु को बढाना बडा भारी त्याग है। हमे याद आते हैं अवलोकितेश्वर बुद्ध, जिन्होंने जब कि वह स्वर्ग मे प्रवेश कर रहे थे, पृथ्वी पर दु:खी जनों की पुकार सुनी, और जो पुन लौट पडे—यह कहकर कि वह तब तक स्वर्ग मे प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक कि पृथ्वी पर आखिरी मनुष्य का दुख न छूट जायगा। एक पागल मनुष्य ने महात्माजी को तीन गोलियाँ दागकर उनका प्राणान्त कर दिया, पर वह तो अमर हो गए।

———

गांधीजी निरिंधन ज्वाला-ज्योति

[पं० वेंकटेशनारायण तिवारी, मेंबर कांस्टिट्युएंट असेम्बली]

हत्यारे की गोली से, ३० जनवरी १९४८ को, दिल्ली में, गांधीजी का शरीर-पात हुआ, और उस गोली के धड़ाके से भारत के निवासी चौंके, सिहर उठे, और स्तंभित, व्यथित हो उठे। क्या हुआ, क्या सचमुच गांधीजी नहीं रहे ?—यही सवाल लोगों की ज़बानों पर थे, और निराशा की दशा में एक-दूसरे से वे इन्हीं प्रश्नों को दोहराते थे, आतुर आशा में कि शायद कहीं कोई कह दे कि समाचार झूठ है, और गांधीजी अभी मरे नहीं। आस घर-घर खटखटाते घूमी, पर कहीं भी उसके मन की मुराद पूरी न हुई; किसी ने भी तो न कहा कि अभी गांधीजी हैं, मरे नहीं। पर उससे होता क्या है ? आस आज भी निराश नहीं है। मन आज भी यह मानने को तैयार नहीं कि गांधीजी अब नहीं रहे।

कौन कहता है, गांधीजी नहीं रहे ? ठीक है कि उनका शरीर पात हुआ, और उनकी देह चिता पर भस्म हो गई, लेकिन गांधीजी ही ने तो बार-बार यह कहा है कि न कोई मारता है न कोई मरता है।

"हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते हतम्,
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।"

(यदि मारनेवाला यह समझता है कि उसने मारा, और

मरनेवाला यह जानता है कि वह मारा गया, तो दोनों ही गलत समझते है, न यह मारता है, न वह मरता है।)

गाधीजी म हमारी श्रद्धा है। वह तो सत्य के परम खोजी थे। सभी कहते और नत-मस्तक होकर स्वीकार करते हैं कि उनमे प्रभु की सत्ता थी, और वह दैवी अनल के राशि पुंज थे। फिर जब वह हमसे कहते हैं कि आत्मा अमर है, न पैदा होती है और न मरती है, तब क्यो हम विश्वास नहीं करते कि गाधीजी मरे नही; वह आज भी जीवित हैं। उनका शरीर नहीं रहा, पर इससे क्या, नश्वर से मोह क्या और उसके न रहने का शोक क्या ?

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।

गांधीजी युग के प्रवर्तक थे। हमने और तुमने भगवान् वामन की कथा पढ़ी है कि उन्होने तीनो लोकों को पगों के बीच मे नाप डाला। गाधीजी ने सचमुच विश्व को अपनी टॉगों के बीच में रखकर अपने विशाल व्यक्तित्व की निस्सीम की गुरुता से उसके मान को चकनाचूर कर दिया। डेढ हजार साल पहले ऐसा ही एक दूसरा महापुरुष इसी भारत की भूमि से निकला था—उसे बुद्ध के नाम से दुनिया आज भी पूजती है। चीन में अकेला कनफ्यूशियस हुआ, और ईरान ने केवल जरदुस्त को उत्पन्न किया। जहाँ अरब में हजरत मुहम्मद ने जन्म लिया, वहाँ फिलस्तीन में ईसा मसीह अवतरित हुए। सिर्फ भारत का यह दैव-दुर्लभ गौरव है कि उसने गौतम बुद्ध

और गांधी को जन्म दिया। संसार के किसी और देश में दो की कौन कहे, एक भी पुरुष सिंह नहीं जन्मा, जो महत्ता में, व्यापकता में या दैवी संपदा और विभूति में गौतम या गांधीजी से टक्कर ले सके। काल की अनन्त दालान में उनकी कीर्ति सदा गूँजती रहेगी। उस समय भी, जब औरों की गर्जना की प्रतिध्वनि क्षण-क्षण क्षीण होती-होती विलीन हो चुकी होगी। गांधीजी, बुद्ध ही के समान, युग-निर्माता ही नहीं, युग-प्रति-युग के स्रष्टा हैं। अविनाशी हैं; अजर और अमर हैं; बल हैं और बलद हैं; प्राण हैं और प्राणद हैं; चल में अचल जग में अग और नश्वर में अमर हैं।

"अशरीरं शरीरेषु अनवस्थेष्ववस्थितम्।"

गांधीजी क्या थे—जब तक वह हमारे साथ रहे, हमने उन्हें पूरे तौर से पहचाना नहीं, उन्हें अच्छी तरह हम न जान पाए, और न समझ सके। जब वह इस लोक से चल बसे, तब अभाव की तीव्र वेदना ने हमारी आँखों को खोल दिया, और भौचक्का-से हम रह-रहकर उस समय बेबसी के साथ इधर-उधर झाँकते हैं कि वह कहाँ गए, या कहीं आ तो नहीं रहे हैं। यह तो मोह की कायरता है। गांधीजी जीवित हैं हममें, तुममें और आनेवाली अनन्त पीढ़ियों में। वह भारत की आत्मा हैं। उनके पहले जो भारत था, वह अब नहीं रह गया, और न आगे कभी फिर पहले-सा होगा। पहले वह अ-गांधी था, अब वह गांधीमय है। गांधीजी ने हमारे जातीय

जीवन को, हमारी सम्कृति को, हमारे जीवन पर दृष्टि-कोण को जिस रग से रँग दिया है, उसे काल भी न छुटा सकता है, और न धुँधला कर सकता है। वह तो अमिट है। दिन-दिन निखरेगा और चटकीला होता जायगा। क्योंकि ऋषियो के शब्दों मे, गांधीजी अमरता के सर्वश्रेष्ठ सेतु हैं, वे ईंधन की ज्वाला हैं। इन्हीं के लिये कठोपनिषद् ने कहा है—

"अमृतस्य परं सेतं दग्धेन्धनमिवानलम्।"

न्याय-पूर्ण निर्णायक

[सर फ्रेंक अग्रवाल, प्रमुख न्यायाधीश, पटना-हाईकोर्ट]

महात्मा गाधी मे महान गुण थे, और राजनीतिक नेता की हैसियत से उनमें दैवी प्रतिभा थी। परंतु वह एक अभूतपूर्व न्यायाधीश भी थे, और इसी कारण हमे उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करना चाहिए। मेरे विचार से इसी हैसियत से लोग उन्हें जन्म-जन्मातर स्मरण रक्खेंगे। उनका कार्य हमेशा छोटे-मोटे आपसी झगडों को निवारण करने में ही नहीं बीतता था, और न अन्य जजों की भाँति उनके पास यह सुविधा ही थी कि दोनो दलों की ओर से प्रतिभाशाली वकील अपना मुक़दमा रख दे। उनका सबंध तो उन गंभीर और महान् मुक़दमों से था, जिनके फैसलों पर पूरे राष्ट्र की खुशी और भलाई निर्भर थी।

जिन हालतों में वह थे, यह सर्वथा असम्भव था कि उनके पास दोनों पक्ष की दलीलें फैसला करने के लिये मौजूद रहें। परंतु इसमें उनके न्यायपूर्ण निर्णय में कभी बाधा नहीं पड़ी, क्योंकि उनमें न्याय करने की यह अनोखी दैवी सूझ थी कि वह अत्यंत निकट के लोगों के प्रभाव में भी न्यायपथ से हटते नहीं थे। अपने निःस्वार्थ भाव, त्याग की भावना और सादे जीवन के कारण उन पर उन सब बातों का प्रभाव पड़ ही नहीं पाता था, जिनके कारण साधारण जन विचलित हो जाते हैं।

महान् शहीद

[सर आर्थर ट्रूवर हैरिस, प्रधान न्यायाधीश, कलकत्ता]

महात्माजी की मृत्यु हो गई है, परंतु उनकी आत्मा जीवित है। उन्होंने भारत को अपना सब कुछ अर्पण कर दिया—अपना जीवन भी। हमको चाहिए कि हम उनके योग्य बनें। हमें उनके आदर्शों को पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए—भारत की उन्नति और देश में शांति के लिये यह कोई न कह सके कि गांधीजी बेकार मरे।

महात्माजी ने अपना स्थान संसार के महान शहीद संतों में बना लिया है। जब शांति और सद्भावना की पुनः इस

देश में स्थापना होगी, तभी हम सच्चाई और ईमानदारी से कह सकेंगे—'ईश्वर ही देता है, ईश्वर ही छीन लेता है।"

गांधीजी ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया

[श्रीहालाचार्य]

महात्माजी आए और चले गए। हम लोग अपनी मूर्खता अपनी कमजोरी और कुवृत्ति के कारण उन्हें पहचानने, मे असफल रहे। अब, जब वह हमारे बीच नहीं हैं, तब हमे थोडा ज्ञान हो सकता है कि वह क्या थे, और कौन थे।

श्रीकृष्ण ने अनासक्ति का पाठ पढाया, महावीर ने अनधिकार का। बुद्ध ने समरसता पर जोर दिया, ईसा मसीह ने सद्भावना पर, मुहम्मद ने विभेद नहीं करने की शिक्षा दी, और गाधी ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया। ये एक ही वस्तु के भिन्न-भिन्न पहलू हैं। एक के विना दूसरे का अस्तित्व नही रह सकता।

गाधीजी की हत्या से देश सचमुच अधकार में पड़ गया है। लेकिन यह अँधेरा उषा के पहले की अंधकार-घड़ी हो।

वह हम सबकी गलतियों के कारण मरे। जब तक वह जीवित थे, हम लोगों ने उनकी बातों का पूर्णतया पालन नहीं किया। अब वह हम अलग हो गये हैं। क्या अब भी हम उनका अनुसरण नहीं करेंगे?

पाकिस्तान की

महान् त्यागी

[श्री लियाकतअली प्रधानमंत्री]

निःसंदेह गांधीजी इस युग के महान पुरुषों में से एक थे। पिछले तीस वर्षों से हिंदुस्तान की राजनीति में उनका स्थान महत्त्व-पूर्ण था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कांग्रेस की वर्तमान महत्ता और शक्ति गांधीजी के भगीरथ प्रयत्न और नेतृत्व का प्रतिफल है। तीस वर्ष पहले गांधीजी ने अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। सचमुच यह भाग्य का दुर्विपाक है कि अहिंसा का प्रचारक हत्यारे की गोली का शिकार हो।

पिछले कई महीनों से साम्प्रदायिकता का जोर बढ़ गया था। गांधीजी ने यह अनुभव किया कि अगर इस भावना का विकास जारी रहा, तो इससे न केवल अल्पसंख्यकों का ही, बल्कि सारे राष्ट्र का विनाश होगा।

गांधीजी साम्प्रदायिक एकता स्थापित करने के लिये परेशान थे। उन्होंने जी-जान से शांति के लिये कार्य किया। अपनी जान की बाजी लगाकर भी वह अपने उद्देश्य का प्रचार करते रहे। हत्या का तत्काल कारण था साम्प्रदायिक एकता और शांति-स्थापना के उनके प्रयास। जो साम्प्रदायिक

एकता और शांति के पुजारी हैं, वे बारबार गांधीजी के महान् त्याग की याद करेंगे। उनकी मृत्यु से जो क्षति हुई, वह कभी पूरी नहीं की जा सकती है। हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि जो उनके जीवन-काल मे पूरा न हो सका, वह उनकी मृत्यु के बाद पूरा होगा. और देश मे अब शांति और एकता स्थापित होगी।

सर्वश्रेष्ठ महापुरुष

[श्रीअब्दुर्रब निस्तर यातायात-विभाग के मंत्री]

महात्मा गांधी की हत्या का समाचार बहुत ही शोक-पूर्ण है। गांधीजी ससार के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष थे, शांति-स्थापना मे उनका बहुत बडा प्रभाव था। उनकी मृत्यु से न केवल भारत को, अपितु संसार को ऐसी क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

ऐतिहासिक घटना-क्रम बदल दिया

[श्रीआई० चुंद्रीगर व्यापार मंत्री]

गांधीजी की मृत्यु से भारत और पाकिस्तान, दोनो दुखी

है। वह उन महान व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने इतिहास के घटनाक्रम को बदल दिया है।

अप्रत्याशित चोट

[ख़ान अब्दुलक़य्यूम ख़ाँ प्रधान मंत्री सीमा-प्रान्त]

महात्मा गांधी की हत्या की ख़बर अप्रत्याशित चोट है। सहसा कोई विश्वास नहीं कर सकता कि वह अब नहीं रहे।

सब से बड़े नेता

[ख़ान इफ़्तिख़ारहुसैन ममदोत पश्चिमी पंजाब के प्रधान मंत्री]

महात्मा गांधी भारतवर्ष के सदियों में होनेवाले नेताओं में सबसे बड़े नेता थे। उनके शांति प्रयास ने सम्पूर्ण विश्व को अपने प्रति आकर्षित किया था।

सबसे बड़ी दुर्घटना

[श्रीनज़ीमुद्दीन प्रधान मन्त्री पूर्वी बंगाल]

सबसे बड़ी दुर्घटना तो यह है कि गांधीजी ऐसे समय चले गए हैं, जब उनकी बड़ी सख्त ज़रूरत थी।

सब से महान् पुरुष

[ख़ाँ बहादुर डाक्टर एम० हसन वाइसचांसलर, ढाँका]

मैं महात्माजी को इस युग का सबसे महान् पुरुष मानता हूँ। एक व्यक्ति, जिसने इस देश को आजादी दिलाने और शांति स्थापित करने में तन-मन और ईमानदारी से चेष्टा की। जो लोग उनकी ईमानदारी में शक करते थे, वह भी उनके पिछले उपवास से इसकी सत्यता मान गए कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान में हिंदू-मुस्लिम पूर्ण सद्भावना और सहयोग की कामना की। उनकी मृत्यु और खासकर ऐसे समय जब भारत और पाकिस्तान में हिंदुओं और मुसलमानों में मित्रता कराने के लिये उनका जीवित रहना अत्यतावश्यक था, ऐसी क्षति है, जो पूरी नहीं की जा सकती।

मुसलमानों के रक्षक

[श्रीमुहम्मद युसुफ़]

'दोनों उपनिवेशों के भविष्य पर काली घटा छा गई। कौन बता सकता है उन लाखों बिलखते नर-नारियों का क्या होगा। भारत के मुसलमानों ने अपने रक्षक को खो दिया है। महात्मा गाधी पाकिस्तान के सच्चे दोस्त थे।

भारत-स्थित विदेशी राजदूतों की

उनकी महानता अमर है

[डॉ० हेनरी एफ० ग्रेडी, अमेरिका से]

गांधीजी के निधन से सारा संसार दुःखी है। वह विश्व के नेता थे। उन्होंने मानव के आध्यात्मिक जीवन को काफी सामग्री दी है। उनके जन्म लेने से दुनिया में धार्मिक अच्छाई व्याप्त हुई। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी महानता अमर है।

गांधीजी की आत्मा जीवित रहेगी, और ज्यों-ज्यों दिन बीतेंगे, त्यों-त्यों उसका प्रभाव बढ़ता जायगा। जिस मानवीय भलाई के सिद्धांत के लिये वह जीवित थे, जिस प्रेम और भाईचारे की शिक्षा वह देते थे, और जिसके लिये उनकी हत्या हुई, वे उनके देशवासियों के लिये ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लोगों के लिये प्रेरणा के अमर स्रोत रहेंगे।

अन्य महान् पुरुषों की भांति वह केवल हिंदू की नहीं, बल्कि सारी दुनिया के लोगों की निधि हैं। उनके निधन से हमें जो एक सांत्वना मिलती है, वह यह है कि उनकी आध्यात्मिक व्यक्तित्व-शक्ति का प्रभाव उनके जीवन-काल से अब अधिक बढ़ेगा। गांधीजी के गुणों का अनुसरण कर ही दुनिया उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकती है, जैसा कि वह अन्य महापुरुषों के प्रति अर्पित करती रही है। हम सब शांति और भाईचारे के प्रति अपनी निष्ठा को बढ़ा सकते हैं, हम सब घृणा और वैमनस्य की भावना दूर

करने का प्रयास कर सकते हैं; हम सब नए उत्साह के साथ, उस समाज-निर्माण में लग सकते हैं, जिसकी गांधीजी कल्पना करते थे।

आदमियों और राष्ट्रों के बीच के सभी भेदभाव दूर किए जा सकते हैं। अगर आत्मिक शक्ति है, तो रास्ता बराबर निकाला जा सकता है। विश्व-शांति के महान् उपासक फ्रेंकलीन रूजवेल्ट ने एक अवसर पर कहा था—"आत्मिक शक्ति वास्तविक चीज है। महात्मा गांधी की आत्मा, उनके आदेश और भाई-भाई के प्रेम पर आधारित शांति-कार्य में उनकी निष्ठा का ही वास्तविक महत्त्व है।"

अमिट चरण-चिह्न

[डॉक्टर लुइन, चीनी]

प्रकाश बुझा नहीं है। अलबर्ट आइस्टाइन ने ठीक ही कहा है कि भावी पीढियाँ मुश्किल से विश्वास करेंगी कि गांधीजी-जैसा व्यक्ति दुनिया में कभी पैदा हुआ था, तथापि आनेवाली पीढ़ियों को यह तो निश्चय ही विश्वास होगा कि भूगर्भ के इस हिस्से पर, जिसे हिंद कहा जाता है, ऐसे व्यक्ति का वास्तव में आगमन हुआ था और उसकी आध्यात्मिकता के अमिट चरण-चिह्न इस महान् राष्ट्र के मस्तिष्क पर अंकित हैं।

गांधीजी के अनुयायियों के लिये इससे बढ़कर दूसरा कार्य नहीं कि वह नैतिक शून्यता को भरने और प्रेम, सद्भावना,

शांति के उद्देश्य को पूरा करने के लिये एक साथ मिलकर नई शक्ति से काम करें। तब भावी इतिहास यह प्रमाणित कर देगा कि बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तित किया जा सकता है, जैसा कि ईसा की शहादत के बाद हुआ।

चीनी होने के नाते मैं कन्फ्यूसियस और गांधीजी के नैतिक सिद्धांतों में साम्य पाता हूँ। दूसरों के गुणों को बढ़ाकर और अवगुणों को कम कर, पहले अपने पर दोषारोपण कर और बराबर अपने हृदय टटोलकर कन्फ्यूसियस सहिष्णुता सिखाते थे। ठीक उसी तरह घृणा का भाव दूर करने और लाखों-लाख देशवासियों के हृदय में प्रेम-भावना उत्पन्न करने के लिये गांधीजी उपवास करते थे। कितनी ही बार गांधीजी ने अपने अनुयायियों से कहा कि उन लोगों की गलती मेरी है, क्योंकि उन पर नैतिक प्रभाव डालने में अवश्य ही मेरी ओर से कमी हुई होगी। गांधीजी की धार्मिक उच्चता, नैतिक महानता और व्यावहारिक बुद्धि का कारण यही था।

मानवता के शत्रुओं के दमन के लिये आहुति

[बर्मी राजदूत यूविन]

दुनिया को आज ऐसी क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती। दानव शक्तियों ने उन्हें डस लिया है। अब हमें देखना है कि दानवी शक्तियाँ किस सीमा तक जा सकती हैं। इस दुर्घटना की खबर सुनकर हम लोग अवाक् रह गए।

मानवता को बचाने के लिये जिस प्रकार ईसा मसीह ने अपने का बलिदान कर दिया था, उसी प्रकार गांधीजी ने भी मानवता के शत्रुओं को दमन करने के लिये अपने प्राणों की आहुति दे दी। हम बर्मियों के लिये यह केवल राष्ट्रीय क्षति-मात्र नहीं है। इसी प्रकार की घटना हमारे देश में कुछ दिनो पहले हो चुकी है। बर्मा के लोगो के हृदयों में महात्माजी के लिये बहुत अधिक श्रद्धा है। महात्माजी प्रेम और सत्य के जीवित रूप थे, और उन्हे खोकर हम लोगो ने संसार की सबसे बड़ी निधि खो दी है। महात्माजी के आदर्श को पूरा करने के लिये हम लोगों को चाहिए कि धार्मिक झगडों को सदा के लिये दफ़ना दें।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा-परिषद् (सिक्योरिटी कौंसिल) की

अहिंसा आदर्श के लिये इतिहास में अमर

[एम० श्री फर्नॅंड वॉन लैंगनहोव]

इस शोक-पूर्ण दुर्घटना ने हमारे विचारों को अभिभूत कर लिया है। हम ऐसे शोकमय वातावरण में मिल रहे हैं, जब गांधीजी की मृत्यु से सारा संसार क्षुब्ध हो गया है। हम जानते हैं, इस दुर्घटना का असर विशेषकर भारत पर क्या होगा। मैं सुरक्षा-परिषद् के नाम पर भारत के प्रतिनिधि और उनके द्वारा सारे भारतीय राष्ट्र से समवेदना प्रकट करता हूँ।

दुनिया के बहुत कम लोगों के विचार इतने उच्च और उदार रहे हैं। गांधीजी ने अपने आदर्श की पूर्ति के लिये प्राणों की आहुति तक दे दी। दूर से वह हमें इस संसार से ऊँचे एक स्वार्थी मसीहा ज्ञात होते थे, जो अपने देश की स्वतंत्रता के सच्चे प्रतीक थे और अपने जीवन में ही जिन्होंने भारत को आज़ादी दिलाई। परन्तु आप इससे भी ऊँचे आदर्श के प्रतीक थे—देश की आज़ादी आपके लिये गौण थी। आपका आदर्श था—अहिंसा, और इस पवित्र उद्देश्य से ही हमारी संस्था भी प्रेरित है। केवल यही आदर्श अकेला ही हमें उनके प्रति सम्मान के लिये विवश करता है। इस उच्च आदर्श के लिये आपका नाम इतिहास में अमर रहेगा। एकता, सहानु-

भूति और विश्व बंधुत्व के आदर्श गांधीजी के अन्य विशेषण थे। इसी कारण उनका नाम हमारे वाद-विवादों मे अक्सर आता था। किसी-न-किसी तरह हम समझते थे कि हमारे विश्व-शांति के प्रयत्नों मे वह बहुत बडे सहायक मित्र थे।

गांधीजी की मृत्यु से उनका उपयोगी कार्य समाप्त नहीं होगा। इस ससार से प्रस्थान करने पर भी उनके आदर्श जीवित रहेगे। वे सब लोग जो इस देश में अथवा भारत में उन्हे गौरव प्रदान कर रहे हैं. उनके अहिंसा और एकता के आदर्शों और सिद्धांतों पर चलेगे, जिनके लिये गाधीजी जिए और मरे।

दुनिया में सबसे बड़े आदमी

[ब्रिटिश प्रतिनिधि श्रीनोयल बेकर]

दुनिया के सबसे बडे आदमी की हत्या की गई है। गांधीजी गरीबों और निस्सहायों के परम मित्र थे। आज तक कोई भी आदमी किसी की मृत्यु से इतना दुखित नहीं हुआ होगा।

अमर गांधी

[सोवियट प्रतिनिधि श्री एंद्री ग्रोमाइको]

सोवियट प्रतिनिधि मंडल की ओर से मैं समस्त भारत-वासियों को अपनी सहानुभूति प्रदान करता हूँ। भारतीय इति-हास में गांधीजी का नाम अमर रहेगा।

एशिया का सबसे बड़ा महापुरुष

[चीनी प्रतिनिधि डॉ० ह्सिचांग]

गांधीजी की मृत्यु से एशिया का सबसे बड़ा महापुरुष खो गया।

आदर्शों की पूर्ति के लिये बलिदान

[पाकिस्तान के प्रतिनिधि सर ज़फरुल्लाखां]

गांधीजी की मृत्यु से पाकिस्तान और हिंदुस्तान को ही नहीं, संसार में शांति-स्थापना के कार्य को भारी क्षति पहुँची है। इसका हम ख़याल भी नहीं कर सकते थे कि गांधीजी को हानि पहुँचाने के लिये कोई सोच भी सकता है। गांधीजी ने आदर्शों की पूर्ति के लिये अपने को बलिदान कर दिया है और बलिदान द्वारा अपने आदर्शों की गति कदाचित् तेज कर दी, जिनके लिये वह जीवित थे।

राष्ट्रसंघ उनके आदर्शों पर चलेगा

[अमेरिका के प्रतिनिधि वारेन ऑस्टिन]

बड़े दुख की बात है कि महात्मा गाधी की मृत्यु ऐसे समय हुई है, जब सहयोग की भावना की इतनी अधिक आवश्यकता थी। हमे विश्वास है, उनकी शहादत से राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि उनके आदर्शों का अधिक उत्साह से प्रतिपादन करेंगे।

महान् व्यक्ति गांधी

[भारतीय प्रतिनिधि सर गोपालस्वामी आयंगर]

गाधीजी का जीवन हमारे देशवासियों के लिये उत्साह-वर्धक होगा। यह उन देशों और राष्ट्रों के लिये पथ-प्रदर्शक प्रकाश होगा, जो समझते हैं कि मानवता के लिये हिंसा की जरूरत नही है। यदि संसार मे कोई भी एक व्यक्ति था, जिसने अपने जीवन भर उन आदर्शों एव सिद्धातों का प्रतिपादन किया, जिनके लिये राष्ट्रसंघ स्थापित हुआ है, तो वह महान् व्यक्ति महात्मा गाधी ही हो सकते हैं।

उनका धर्म बुराई का बदला भलाई से देने का था। इसी का प्रतिपादन करने मे वह मारे गए। कहा जाता है, उनकी मृत्यु से इन आदर्शों का चलाने मे अधिक सहायता और उत्साह मिलेगा। काश ऐसा ही हो।

समस्त मानवता की क्षति

[संयुक्त राष्ट्रसंघ के मंत्री]

महात्माजी की मृत्यु से समस्त मानवता को ऐसी क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति होना असंभव है। विशेषकर जब समस्त संसार ईर्ष्या और द्वेष में जल रहा है, उनके आध्यात्मिक नेतृत्व की सबसे अधिक आवश्यकता थी।

उनका जीवन ही शांति का था और संयुक्त राष्ट्रसंघ के महान् सिद्धांतों का आदर्श उन्होंने ही उपस्थित किया था। हमारा विश्वास है, उनके जीवन के बलिदान से संसार सबक लेगा। हम भारत की जनता के साथ ही शोक प्रकट करते हैं।

केवल राष्ट्रीय क्षति नहीं

[सुरक्षा-परिषद् के वैदेशिक विभाग के अध्यक्ष]

महात्मा गांधी की मृत्यु केवल राष्ट्रीय क्षति ही नहीं है, बल्कि यह दुर्घटना बता रही है, संसार के बहुत बड़े भाग में मनुष्य आज भी पशु हैं, जो आज की सभ्यता को खतरे में डाले हुए हैं।

लेकसक्सेस में संयुक्त राष्ट्रसंघ का सफेद और नीले रंग का झंडा महात्मा गांधी के सम्मान में झुका दिया गया। दूसरे देशों के झंडे भी नहीं फहराए गए।

विदेशों की—
(१) ब्रिटेन की

मानवसमाज की अपार क्षति

[ब्रिटिश सम्राट् की]

लंदन, ३१ जनवरी—ब्रिटेन के सम्राट् ने भारत के गवर्नर जेनरल लार्ड माउंटबेटेन के पास यह समवेदना का संदेश भेजा—

गांधीजी की मृत्यु का समाचार पाकर सम्राज्ञी को तथा मुझे भारी धक्का लगा है। वास्तव में समस्त मानव-समाज की अपार क्षति हुई है। कृपया भारतीय जनता को मेरी समवेदना पहुँचा दीजिए।

सारे विश्व के सर्वश्रेष्ठ बंधु

[लार्ड मांउटबेटेन का प्रत्युत्तर]

मेरी सरकार और मैं श्रीमान सम्राट् की भारतीय जनता को उनके शोक में भेजे हुए समवेदना के संदेश के लिये धन्यवाद देता हूँ। निस्संदेह गांधीजी की मृत्यु मानव-जाति के लिये, जिसे उनके दिए हुए प्रेम और सद्भावना के आदर्शों की, जिसके लिये वह जिए और मरे, अतीव आवश्यकता है, बड़ी भारी क्षति है। अपने शोक-काल में भारत को गर्व है कि उसने संसार को अमर प्रतिभाशाली महापुरुष दिया, और वह विश्वास करता है कि उनका उदाहरण उसे अपना भविष्य बनाने में शांति और उत्साह प्रदान करेगा।

विश्व के उज्ज्वलतम नक्षत्र

[श्री क्लिमेंट एटली, प्रधान मंत्री]

महात्मा गांधी, जैसा कि भारतीय उन्हें जानते हैं, विश्व के उज्ज्वलतम नक्षत्रों में एक थे। वह इतिहास के अन्य युग के व्यक्ति जान पड़ते थे। उनका जीवन एक महात्मा का जीवन था और भारत की करोड़ों जनता उन्हें देव समझती थी। उनका प्रभाव उनके सहधर्मियों से परे उन लोगों पर भी था और इस साम्प्रदायिकता से जर्जर देश में भी वह सभी भारतीयों को समान रूप से प्रिय थे।

अहिंसा उनका सिद्धांत था। ऐसी शक्तियों के विरुद्ध, जिन्हें वह पथ-भ्रष्ट समझते थे, वह सत्याग्रह के द्वारा लड़ते थे। हिंसा के द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति करनेवाले लोगों का वह विरोध करते थे। भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में जब-जब हिंसा का प्रयोग किया गया, तब-तब उन्हें उससे बड़ी चोट पहुँची।

अपने उद्देश्य की पूर्ति के प्रति निस्सन्देह वह सदा ईमानदार रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में साम्प्रदायिक उपद्रव होने पर उनके उपवास की धमकी से बंगाल की साम्प्रदायिक आग आप से आप बुझ गई, और अभी हाल के उपवास से देश का वातावरण ही बदल गया। वह अन्याय के विरुद्ध सदा लड़ते ही रहे, पर उसके साथ ही गरीबों और विशेषकर दलित जातियों की उन्नति और विकास के लिये भी वह सदा प्रयत्नशील रहे।

शांति का अग्रदूत

[श्रीएमरी, भूतपूर्व भारत-मंत्री]

सभी अँगरेज, चाहे वे किसी भी दल के क्यों न हों, इस दुखद समाचार से क्षुब्ध हो गए हैं। यह कितनी ग्लानि की बात है कि शांति के अग्रदूत की हत्या की गई है। इतिहास के पन्ने को लोगों ने कालिख से रंग दिया है, लेकिन आशा है कि अब भी लोग अपनी भूलें समझेंगे, और संसार में शांति स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

इतिहास में अमर

[श्रीमारगन फ़िलिप्स, लेबर पार्टी का सदस्य]

गांधीजी की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर लेबर पार्टी के सदस्यों के हृदय में गहरी चोट पहुँची। मानवतावादी आदर्श तथा कार्य के लिये आपका नाम इतिहास में सदा के लिये अमर रहेगा।

महान् आत्मिक शक्ति

[सर स्टैफ़र्ड क्रिप्स]

महात्मा गांधी महान् आत्मिक शक्ति के प्रतीक थे। यह शक्ति हमें और भारतीय जनता को हमारे सामने उपस्थित इस कठिन समय में राह दिखाने में सहायक होगी।

महात्मा गांधी के निधन से सारे ससार की क्षति हुई है, क्योंकि अब हमे ऐसा नेता कहाँ मिलेगा, जो अपनी जिंदगी और कार्य-कलापों के जरिए हमारी समस्याओं के हल के लिये मुहब्बत का पाठ पढ़ाने मे समर्थ हो। ईसामसीह ने भी इसी प्रेम की शिक्षा दी थी।

क्या हम गाधीजी के जीवन से यह अमूल्य सबक नहीं ले सकते हैं कि शक्ति के प्रयोग से अपने को विनाश से बचाने का प्रयास व्यर्थ है। प्रेम की शक्ति ही सबसे बडा अस्त्र है। आज की दुनिया मे, आधुनिक इतिहास मे, मुझे कोई व्यक्ति नहीं दिखता, जिसमे ऐसी प्रबल आत्मिक शक्ति रही हो। एक ऐसे मानव के रूप में, जिसने अपने विश्वासों को, निर्भय होकर कार्य-रूप में, परिणत किया। गाधीजी अपने समय के सभी व्यक्तियो से ऊपर थे।

महात्मा गाधी ने लंदन में वकालत पास की, और उन्हें क़ानून के संबध में अपनी योग्यता का गर्व था। दक्षिण-आफ्रिका में पहली बार वह भारतीयो के घनिष्ठ संपर्क में आए। दक्षिण-आफ्रिका में वह भारतीयों और दीन जनों के वकील बन गए। यहीं उन्होंने भारतीयों को गुलामी से मुक्त करने का दृढ़ निश्चय किया।

गांधीजी के लिये अहिंसा एक नकारात्मक नीति नहीं थी, बल्कि इससे कहीं ऊँची वस्तु थी। अहिंसा में गाधीजी का अटूट विश्वास था, और वह उसके द्वारा प्रेम का साम्राज्य

स्थापित करने का निश्चय कर चुके थे। दैनिक जीवन से धर्म को अलग करने का सिद्धान्त उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। गांधीजी का जीवन धर्ममय था और परोपकार जीवन ही उनका धर्म था। हिंदोस्तान की जनता और आत्मा को उनके समान किसी अन्य ने नहीं पहचाना। उन्होंने यह समझ लिया कि आत्मत्याग भारतीयों पर किस प्रकार प्रभाव डालता है। आत्मत्याग को उन्होंने अपने कार्यों का प्रमुख अंग बनाया। अपनी जनता के लिये उनका सबसे शक्तिशाली हथियार था अनशन। दूसरे के पापों को अपने ऊपर लेकर वह स्वयं उनका प्रायश्चित्त करते थे। वह हठी नहीं थे किंतु जब वह अपनी बात का औचित्य समझ लेते थे तो उस मार्ग से उन्हें विचलित करना असंभव था। तर्क में वह सिद्धहस्त थे। बहस में उनको जीतना मुश्किल था। प्रार्थना और ध्यान के बाद वह अपना विचार स्थिर करते थे न कि तर्क करते समय।

महान् आघात

[श्रीअर्नेस्ट बेविन]

इस दुर्घटना से हिंद को तथा दुनिया को जो क्षति पहुँची है, उसे व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। हम लोगों की गांधीजी के अंतिम प्रयास की ओर आदर-दृष्टि लगी थी। जब हत्या की खबर आई, तो हमें महान् आघात हुआ।

जीवन को सेवा-कार्य में लगाया

[श्रीसॉरेंसन लेवर सदस्य, ब्रिटिश पार्लियामेंट]

गांधीजी के विचारों को हम शाश्वत मूल्यों से ही तौल सकते हैं। आपने अपने जीवन को सेवा-कार्य में लगा दिया था। आपके विचारों का हिंदोस्तान के बाहर भी असर पड़ा है। अपने विचारों को आपने राजनीति मे कार्यान्वित भी किया है। हम आपके विचारों से पूर्ण सहमत हों या न हों, लेकिन आपके ऋणी तो अवश्य ही हैं।

इतिहास के महापुरुषों में से

[लदन-स्थित चीन के राजदूत श्रीहा० तेनसी]

सारा संसार महात्मा गाधी की हत्या से चकित है। वह इतिहास के महापुरुषों मे से थे। जहाँ हमे एक ओर उनके लिये दुख है, वहाँ दूसरी ओर हमारा विश्वास है, उनका बलिदान उनके पवित्र आदर्शों की पूर्ति मे योग देगा।

महात्मा गांधी का प्रेम अणुबम से भी शक्तिशाली

[प्रसिद्ध आयरिश क्रांतिकारी माउडगोने आइड]

महात्मा गाधी की मृत्यु के दु खद समाचार को सुनकर मैं स्तब्ध एवं चेतना-हीन हो गया। एक पागल ने उनकी हत्या ऐसे समय कर डाली, जब कि न केवल भारतवर्ष को ही, बल्कि समस्त ससार को उनकी सबसे बडी आवश्यकता थी। महात्मा गाधी

का हत्यारा अवश्य ही राक्षस होगा। गांधीजी की सत्य और अहिंसा तथा उनका नैसर्गिक प्रेम अणुबम से भी शक्तिशाली था।

नीचता-पूर्ण कार्य

[श्री चर्चिल भूतपूर्व प्रधान मंत्री]

मैं उस नीचता-पूर्ण कार्य को सुनकर दुखित हूँ।

अन्याय पर न्याय की विजय के प्रतीक

[प्रो० हेरल्ड लास्की]

गांधी ने एक राष्ट्र को अपने पैरों खड़ा कराया, और उसकी पुकार पर राष्ट्र तन कर खड़ा हो गया। महात्मा गांधी भौतिकता पर आत्मा को, हिंसा पर साहस को और अन्याय पर न्याय की विजय के प्रतीक थे। उनकी सफलता का यह प्रमाण कम नहीं है कि उन्होंने हिंद से ब्रिटिश शासन का अंत कर दिया। इतिहास की अदालत में गांधीजी ने हिंद की जनता की ओर से मुद्दई का कार्य संपन्न किया और जब उन्होंने अपना तर्क उपस्थित किया, तो विरोधी के पास दूसरा जवाब न था—एकमात्र जवाब था, स्वतंत्रता।

अत्यंत भला होना खतरनाक

[सर जॉर्ज बर्नार्डशा]

इससे मालूम होता है कि अत्यंत भला होना भी कितना खतरनाक है।

---

(२) अमेरिका की

संसार से एक पुरुषोत्तम उठ गया

[अमेरिका के प्रेसीडेंट ट्रूमैन का भारत को संदेश]

राष्ट्रपति ट्रूमैन ने भारत के गवर्नर-जनरल के नाम यह संदेश भेजा—"श्रीमोहनदास गांधी की मृत्यु का समाचार सुनकर मुझे महान दुःख हुआ। मैं इस दुःखद अवसर पर भारत-सरकार तथा उसकी जनता को अपनी समवेदना भेजता हूँ। एक शिक्षक और नेता के रूप में गांधीजी का प्रभाव केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व-भर में पड़ा। उनकी मृत्यु से समस्त शांति-प्रिय लोगों को भारी धक्का पहुँचा है। शांति और भ्रातृ-भावना के लिये संसार से एक पुरुषोत्तम उठ गया। मुझे आशा है, एशिया की जनता सहयोग और आपसी विश्वास के उद्देशों को, जिनके लिये महात्माजी ने अपनी जान दे दी, प्राप्ति के लिये अधिक दृढ निश्चय से कार्य करने में उनकी दुःखद मृत्यु से प्रेरणा प्राप्त करेगी।"

भविष्य की सूचना के देवदूत

[जापान-स्थित मित्र राष्ट्रों के सर्वोच्च सेनापति जेनरल मैकार्थर]

महात्मा गांधी की विचार-हीन हत्या से बढ़कर हृदय-विदारक घटना इस युग के इतिहास में नहीं घटी है। शांति एवं अहिंसा के इस अनन्य दूत का हिंसा द्वारा निधन काल की

ऐसी क्रूर विडंबना है, जिससे तर्कशास्त्र व्यर्थ सिद्ध होता है। गांधीजी भविष्य की सूचना देनेवाले देवदूत थे।

गांधीजी की मृत्यु पराजय है या विजय ?

[श्रीमती पर्लबक]

अमेरिका में, पेंसिलवेनिया के निकट, देहाती क्षेत्र में एक गाँव है पेरेक्सीर। वहीं हमारी शांतिमयी झोपड़ी है। खिडकियों से बाहर घने हिम-पात का दृश्य दिखलाई दे रहा था, और आकाश की आभा भूरे रंग की हो रही थी। हमारे बच्चों को शंका हो रही थी कि कहीं और अधिक हिम-पात न हो। एकाएक गृह-पति कमरे में आए। उनकी मुख-मुद्रा गंभीर थी। उन्होंने कहा—"रेडियो पर अभी एक अत्यंत भयानक समाचार आया है।"

यह सुनकर हम सब उनकी ओर देखने लगे, और तुरंत ये हृदय-विदारक शब्द सुनाई पड़े—"गांधीजी का देहावसान हो गया।"

मेरी इच्छा है कि भारत से हजारों मील दूर स्थित अमेरिका-निवासियों पर गांधीजी की मृत्यु से जो प्रतिक्रिया हुई, उसे भारतवासी जानें। हम लोगों ने हृदय दहला देनेवाला यह संवाद सुना। यह साधारण मृत्यु नहीं है। गांधीजी शांति की प्रतिमूर्ति थे, और उन्होंने अपना सारा जीवन अपने देश

की जनता की सेवा के लिये लगा दिया। ऐसे शांति प्रिय व्यक्ति की हत्या कर दी गई। मेरे दस वर्ष के छोटे बच्चे की आंखों में आंसू छलकने लगे। उसने कहा—'मैं चाहता हूँ कि यदि बंदूक बनाने का आविष्कार ही न हुआ होता, तो बड़ा ही अच्छा था।"

हम लोगों में से किसी ने भी कभी गांधीजी को नहीं देखा था क्योंकि जब हम लोग भारतवर्ष में थे, तब गांधीजी जेल में थे। फिर भी हम सभी उन्हें जानते थे। हमारे बच्चे गांधीजी की आकृति से इतने परिचित थे, मानो वह स्वयं हमारे साथ घर में रहते हों। हमारे लिये गांधीजी संसार के इने गिने महात्माओं में से एक थे। पृथ्वी के उन गिने चुने वीरों में से वह एक थे, जो अपने विश्वास पर हिमालय की तरह अटल और दृढ रहते थे। उनके संबंध में हमारी धारणा भी वैसी ही अटल है।

उनकी मृत्यु का समाचार सुनने के बाद हम परस्पर गांधीजी के जीवन और उनकी मृत्यु से होनेवाले संभावित परिणामों के संबंध में बातचीत करने लगे।

हमें भारतवर्ष पर गर्व है कि महात्मा गांधी जैसे महान् व्यक्ति भारत के ही एक अधिवासी थे। पर साथ ही हमें खेद भी है कि भारत के ही एक अधिवासी ने उनकी हत्या की। इस प्रकार दुखी और संतप्त हम लोग चुपचाप अपने दैनिक कार्यों में लग गए।

भारतवासी संभवतः यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि हमारे देश में गांधीजी का यश कितने व्यापक रूप में फैला था। वे यह जानकर आश्चर्यान्वित होंगे। मैं उनकी मृत्यु के एक घंटे बाद सड़क से होकर कहीं जा रही थी कि एकाएक एक किसान ने मुझे रोका, और पूछा—"संसार का प्रत्येक व्यक्ति यह सोचता था कि गांधीजी एक उत्तम व्यक्ति थे, तो फिर उन लोगों ने उन्हें मार क्यों डाला ?"

मैंने अपना सिर धुना, और कुछ बोल न सकी। उसने संकेत से कहा—"जिस तरह लोगों ने महात्मा ईसा को मारा था, उसी तरह महात्मा गांधी को मार डाला।"

उस किसान ने ठीक ही कहा था कि महात्मा ईसा की सूली के अतिरिक्त संसार की किसी भी घटना की महात्मा गांधी की गौरव पूर्ण मृत्यु से तुलना नहीं हो सकती। गांधीजी की मृत्यु उन्हीं के देशवासी द्वारा हुई, यह ईसा के सूली पर चढ़ाए जाने के बाद दूसरी ही वैसी घटना है। संसार के वे लोग जिन्होंने गांधीजी को कभी नहीं देखा था, आज उनकी मृत्यु से शोक-सतप्त हो रहे हैं। वह ऐसे समय में मरे, जब उनका प्रभाव दुनिया के कोने-कोने में व्याप्त हो चुका था।

कुछ दिनों से अमेरिका-निवासियों में महात्मा गांधी के प्रति बढ़ती हुई श्रद्धा का अनुभव हम कर रहे थे। महात्मा गांधी के प्रति लोगों में अगाध श्रद्धा थी।

महात्मा गांधी के प्रति जनता में वास्तविक आदर था, और हम लोगों को यह प्रतीत होने लगा था कि वह जो कुछ कह रहे थे, वही ठीक था।

जब अपने देश के प्रति उन्नत सैनिकीकरण के मध्य हमारी दृष्टि गांधी की ओर जाती थी, यह प्रतीत होता था कि (युद्ध का नहीं, बल्कि शांति का) गांधी का मार्ग ही ठीक है। हमारे समाचार-पत्रों ने गांधी की इस नई शक्ति को पहचाना। भारत को इस महान् व्यक्ति के कारण अन्य देशों में प्रतिष्ठा बढ़ी। महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में होनेवाले भारतीय स्वातंत्र्य युद्ध की ओर हमारी दृष्टि गई, क्योंकि उनका ढंग राष्ट्रों के बीच मतभेदों को शांति-पूर्ण ढंग से तय करने का था।

मैं चाहती हूँ कि भारत के प्रत्येक नर नारी के हृदय में विश्वास करा दूँ कि उनके देश को अब अन्य देश-वासी क्या समझते हैं। आज भारत केवल भारत ही नहीं, वरन् वह संसार की मानव-जाति का प्रतीक है। चर्चिल और उनके समान अन्य व्यक्ति हमें बताते रहे कि यह आवश्यक नहीं है कि दुनिया के सभी लोग स्वतंत्र हों। इन लोगों का कहना है कि जगत् को यह जान लेना चाहिए कि कुछ थोड़े बलवान और शक्तिशाली व्यक्ति ही विश्व पर शासन कर सकते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि कोई-न-कोई शासक तो अवश्य ही होगा, और यदि हम स्वयं शासित होना नहीं चाहते, तो हमें

शासक होना चाहिए। लेकिन हम इस बात पर विश्वास नहीं करते। हम तो ऐसे संसार की कल्पना कर रहे हैं, जिसमें जनता स्वय अपना शासन चलाने के लिये स्वतन्त्र रहे। हमारे लिये उस काल्पनिक ससार का प्रतीक भारतवर्ष है। हम प्रतिदिन भारतीय समाचारो के लिये समाचार-पत्रों को बडी उत्कठा से आँखे फाड़-फाड़कर देखते हैं। श्रीचर्चिल ने जिस 'रक्त-स्नान' की धमकी दी थी, वस्तुत क्या वह घटना सत्य होगी ? क्या यह सत्य है कि लोग अपने मतभेदों को शाति से न मिटा सकेंगे ? क्या युद्ध सदा होते रहेंगे ?

हम सभी लोगों के लिये, जिनकी धारणा थी कि जनता पर विश्वास करना चाहिए, गाधीजी आशा के केंद्र थे। यह बात नहीं कि हम उस क्षीणकाय चश्मेवाले गाधी को भावुकता मे आकर कोई देवता समझ बैठे थे, वल्कि हमारा यह विश्वास था, और हम आशा करते थे कि गाधीजी ने मानव-जीवन के मौलिक सत्य को प्राप्त कर लिया था। उनकी मृत्यु पराजय है या विजय, इसका उत्तर भविष्य मे भारत-वासी विश्व को अपनी भावी गति-विधि से देंगे।

उन लोगों मे, जो समझते हैं कि गाधीजी सत्य-पथ पर थे, यदि उनकी मृत्यु से नई जाग्रति, नई चेतना और नया सकल्प उत्पन्न हो सके, तो यह हमारे और भारत के लिये समान रूप से लाभ-दायक सिद्ध होगा, क्योंकि हम मानवता में विश्वास करते है। यदि उनकी मृत्यु से हम निराश और पराजित हो

जायँ, तो निश्चय ही संसार की मानवता पराजित हो जायगी।

अमेरिका में गांधीजी की मृत्यु का समाचार नर्क की तरह लगा, और कुछ क्षणों के लिये लोग स्तब्ध रह गए। लोग एक दूसरे की ओर आश्चर्य से देखने लगे। नेहरूजी अभी जीवित हैं। अब ऐसी दुर्घटना न घटेगी। केवल यही नहीं कि पश्चिमी जगत भारत के किसी और व्यक्ति की अपेक्षा नेहरू को अधिक जानता है, बल्कि वह नेहरू की बुद्धिमत्ता, योग्यता और धैर्य पर विश्वास करता है। भारत में इतना वर्गभेद नहीं हो जायगा, जिससे निराशा और पराजय के कारण लोग नेहरू को पदच्युत कर दें। यदि ऐसा हुआ, तो भारत की बड़ी हानि होगी, और वह पश्चिमी जगत की दृष्टि में नितांत गिर जायगा।

बुद्धिमान भारतीय ऐसी गलती करने के पूर्व अच्छी तरह सोचेंगे। मैं न केवल एक साधारण अमेरिकन दृष्टि से यह कह रही हूँ, बल्कि एक ऐसे तटस्थ की हैसियत से, जिसे इसकी जानकारी है कि भारत अपने लिये क्या करना चाहता है, तथा नेता के रूप में संसार के लिये क्या कर सकता है। इस दृष्टि से मेरे उक्त विचार हैं।

भारत का भाग्य अँधेरे में दोलायमान रहा है। भारतीय अपने वर्ग-भेद की भावना को मिटाकर अपने विशाल-हृदय, सत्यनिष्ठ नेताओं के आदेश पर चलें, और संकुचित विचार

वाले, उन्नति मे बाधक नेताओं से बचें, तभी उनका कल्याण होगा।

मानवता का महान रक्षक

[अलबर्ट आइंस्टाइन]

बुद्धि, विनम्रता के प्रतीक, मानवता के महान् रक्षक, अपने देश के अकेला रहनुमा महात्मा गाधी ने अपने कार्यों से सारे संसार को आश्चर्य में डाल दिया। उन्होंने सदैव हिंसा का विरोध किया और अहिंसा के बल पर अपने अभूतपूर्व संघर्ष मे सफलता प्राप्त की। गांधीजी ने अपने देशवासियों की उन्नति मे सारा जीवन खपा दिया। योरप की पाशविकता से ऊपर उठकर एक शानदार विनम्र इंसान की भाँति कार्य करके गाधीजी योरप के सब नेताओं से आगे बढ गए।

ज्ञान के अमर प्रतीक

[सयुक्त राष्ट्र सांस्कृतिक सघ के डाइरेक्टर-जेनरल जुलियन हक्सले]

गाधीजी की दु:खद हत्या के कारण मैं हिंद-सरकार तथा हिंद-जनता के प्रति अपनी व्यक्तिगत हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता हूँ। अज्ञान से पीडित दुनिया मे वह ज्ञान के अमर प्रतीक के रूप में जीवित रहेंगे।

स्वदोष निर्देशक गांधी

[श्री होरेस अलेक्जेंडर]

गांधीजी ने न कभी बुरा देखा, न सुना और न सोचा। जो कोई उनसे मिला, वह तुरंत उनको देवता-सा मानने लगते थे। उसका मैं एक कारण समझता हूँ। वह यह कि वह बराबर सबके लिये अच्छा ही सोचते थे। अगर किसी ने उनके आराम या विश्वास के अनुकूल कार्य नहीं किया, तो उसकी असफलताओं की ओर वह सबसे पहले निर्देश करते थे और चाहते थे कि वह अपनी गलती क़बूल करे। गांधीजी का विश्वास था कि अपनी भूल स्वीकार करने से व्यक्ति का सुधार होता है। गांधीजी अपने दोष की जाँच सबसे अधिक करते थे। अगर किसी की गलती का वह निर्देश करते थे, तो उससे पहले वह अपने को दोषी करार दे चुकते थे। हमें ऐसे पुरुष के उपदेश भूलना नहीं चाहिए।

मानव समाज का विशाल परिवार बनाने के इच्छुक

[एच्० एन्० ब्रेल्सफोर्ड समाजवादी लेखक और पत्रकार]

महात्मा गांधी के निधन से केवल उनके देशवासियों को ही क्षति नहीं पहुँची है बल्कि समस्त मानव-जाति को।

हिंदोस्तान का उनसे अच्छा दूसरा प्रतिनिधि कोई नहीं था। फिर भी हम दूसरे देश के वासी उनसे प्रेम करते थे, और यही प्रेम गांधीजी की शक्ति का स्रोत था।

जब कभी वह बोलते थे, तो हिंदू परंपरा की तीसों सदी उनमे अभिव्यक्त होती थी। उन्होंने सब धन-आराम छोडकर चर्चिल के शब्दों मे "नगे फकीर" का रूप धारण किया। वह गलती और शोषण का विरोध अवज्ञा द्वारा करते थे। वह अपने देशवासियों की नैतिक उन्नति के लिये ही उपवास करते थे। उनके ये सब कार्य हिंदू ऋषियो और उपदेशकों की लीक पर थे। यही कारण है कि गॉव-गॉव की जनता उनके पीछे हो गई। यही जनता उनसे पहले प्रसिद्ध विद्वान् नेताओं के पीछे नहीं आ सकी थी।

और अब इस विरोधाभास पर गौर कीजिए।

यद्यपि वह बिलकुल शुद्ध हिंदुस्तानी की तरह बोलते और कार्य करते थे, फिर भी उन्होंने समस्त ससार के प्रेम को प्राप्त करने की कोशिश की, जैसा पहले किसी भी हिंदोस्तानी नेता ने नहीं किया। आखिर ऐसा क्यों ?

इसका पहला कारण यह था कि गाधीजी ने मनुष्य-जाति मे भेद-भाव पैदा करनेवाले बंधनों को नही माना। काले और गोरे मनुष्य, मुस्लिम और ईसाई, अफसर या साधारण किसान सब गाधीजी के लिये एक प्रकार के दोस्त थे। वह सबसे बराबरी के आधार पर मिलते थे।

प्रेम के बंधन से बॉधकर वह समस्त मानव का एक विशाल परिवार बनाना चाहते थे। इस उद्देश्य को व्यक्त करने का उनका निजी तरीका था। एक मिनट के अंदर उनसे कोई

भी व्यक्ति इतना हिल-मिल सकता था, जितना वह अपने देशवासी के साथ अधिक समय में भी हिल-मिल नहीं सकता। वह निर्दोष हँसी हँस सकते थे। वह मजाक कर सकते थे, वह चिढ़ा सकते थे, लेकिन बराबर पूरी शिष्टता और मैत्री के साथ।

वह बराबर गंभीर और प्रशांत रहते थे। अंत में अच्छाई की विजय होती है—यह विश्वास वह कभी नहीं खोते थे। उनसे मिलने के बाद बराबर हर कोई उनके आकर्षण से विमुग्ध होकर विदा लेता था।

उनके आकर्षण का कारण था प्रेम करने की उनकी शक्ति। वह सभी भाइयों से शास्त्रानुसार प्रेम करते थे। चाहे कोई वाइसराय हो, मुसलमान हो, या पत्रकार हो, वह बड़ी ख़ुशी से और अभ्यास-वश उनसे प्रेम करते थे।

मैं अपने जीवन-काल के केवल एक व्यक्ति के बारे में सोच सकता हूँ, जो गांधीजी की तरह मानव-जाति का विश्वास-पात्र माना जाता था। टॉल्सटाय ने, जैसा कि गांधीजी कहा करते थे, किसान-जीवन की सादगी अख्तियार करने को कहा, वह हर तरह की ताक़त के प्रयोग के बाद करने को कहा, चाहे वह कानून की या सेना की ताकत हो।

फिर भी जहाँ तक उन दोनो के प्रभाव का संबंध है, दोनों मे व्यापक अंतर है। टॉल्सटाय एक सैनिक और अभिजात-

वर्गीय था, जिसने सामंतशाही-जीवन व्यतीत किया था। बाद को वह शांति और सामाजिक समानता के प्रचारक बने। उनके ऐसे परिवर्तन का कारण था, दोष भावना की अनुभूति।

लेकिन उनकी तुलना में गांधीजी की प्रेरक-शक्ति सकारात्मक थी—अपने साथियों के प्रति प्रेम, खासकर विशाल जनता के प्रतिनिधि किसानों का प्रेम। हिंदुस्तान की आज़ादी के वह कट्टर पक्षपाती थे। कारण, उनका विश्वास था कि किसानों और मजदूरों का विदेशी-शासन द्वारा विनाश हो रहा है, साथ ही इसी के साथ विकसित चेतना विहीन औद्योगिक प्रथा के कारण भी उनकी बर्बादी हो रही है।

दो महान् उद्देश्यों की प्राप्ति से गांधीजी को इतिहास में अभिनव स्थान मिला है। उन्होंने दो बार स्वतंत्रता प्राप्त की। पहले उन्होंने अपने देश की जनता के हृदय में इसे प्राप्त किया। जिस वक्त से जनता को उन्होंने विद्रोह का पाठ पढ़ाया, उस वक्त से उसने अपने दिमाग में अपने को विदेशी-शासन की प्रजा समझना छोड़ दिया।

मैंने ऐसा तब समझा, जब देखा कि सन् १९३० के आंदोलन में भाग लेनेवाली लाखों की जनता उसी समय से आज़ाद व्यक्ति बन गई थी।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के बाद गांधीजी दूसरे उद्देश्य की ओर बढ़े। कानूनी तौर पर उन्होंने आज़ादी प्राप्त की। जब सन् ४५ में लेबर-दल की सरकार इंगलैंड में बनी, तब उसने तय

किया कि वह अब हिंदुस्तान पर ताकत से अल्प पर राज नहीं करेगी। ऐसा फैसला गांधीजी और जवाहरलालजी के कारण किया गया था।

हिंद की प्रतिगामी शक्तियों के प्रतिनिधि पागल हत्यारे ने इस युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का अंत कर दिया। जैसा कि हम कहते हैं उनकी मृत्यु हो गई है। लेकिन उनके शब्द, उपदेश, उनकी प्रेरणा, उनका साहस और प्रेम आज भी उतना ही जीवित है, जितना कि उनके जीवन काल में। सबसे पहले यह हिंद के मुताबिक अछूतों और मुसलमानों से व्यवहार कर उनका नाम अमर करें।

पारस्परिक विद्वेष ही गांधीजी की हत्या का कारण

[अमेरिका के सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री लुई फिशर]

यदि अधिकतर भारतीय, जो गांधीजी के अनुयायी होने का दम भरते थे, अपने से भिन्न मत रखनेवालों के प्रति घृणा का भाव रखने, उन्हें लूटने और उनकी हत्या करने में बर्बरों के समान व्यवहार नहीं करते, तो ऐसा नहीं होता। पश्चिमी जगत दोष-पूर्ण है, और भारतवासी सदा ही उसके दोषों की आलोचना करते रहे हैं। अब वे अपने दोषों की आलोचना करें, और उन्हें मिटावें।

महात्मा गांधी मानवता के रक्षक थे

[न्यूयार्क के कम्यूनिटी चर्च के रेवरेंड डॉक्टर जॉन हेन्स होम्स]

महात्मा गांधी की मृत्यु ने लोगों के इस विश्वास को दृढ़ कर दिया है कि वह सभी युगों के महात्मा थे, तथा हम लोगों का यह वर्तमान युग उनके जन्म लेने से गौरवान्वित हो गया है।

मैं इस समाचार को सुनकर इतना अधिक दुखी हो गया था कि इससे पहले नहीं लिख सका। अमेरिकन पत्रों ने उनकी हत्या के बाद उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया है। किसी ने उन्हें बुद्ध के बाद सबसे महान् पुरुष कहा है, तो किसी ने ईसा-मसीह से उनकी तुलना की है, पर मैंने तो उनको सबसे महान् पुरुष समझा है। उनकी मृत्यु का संवाद सुनते ही मैंने अपने चर्च में विशेष प्रकार की प्रार्थना की। उसको मैंने छपवा भी दिया।

गांधीजी न केवल महान् व्यक्ति थे, बल्कि वे सर्वप्रिय भी थे। उनकी मृत्यु से तो मुझे ऐसा मालूम पड़ रहा है, जैसे मेरा कोई अपना आदमी मर गया हो। मेरा दिल टूट गया है। वह जिसके दिल में बैठ जाते थे, मानों उस पर अधिकार कर लेते थे। मेरा तो ऐसा विश्वास है कि अपने जीवन-काल में इस दुनिया पर उनका जितना प्रभाव था, उससे अधिक उनकी मृत्यु के बाद पड़ेगा। वह मानव-समाज को भाइचारे तथा प्रेम के बंधन में बाँधने का प्रयत्न करते हुए मारे गए।

जब तक विश्व का अस्तित्व रहेगा, मानवता के रक्षक के रूप में वह याद किए जायेंगे। मैं जानता हूँ कि उनके लिये ये आदर-सूचक शब्द उनकी योग्यता के योग्य नहीं हैं, पर उनके दिवंगत होने से मेरे मन पर जो बीत रही है, उसे मैं आपको कैसे बतलाऊँ?

अमेरिका के ग्रंथालय में गांधीजी के भाषण के रेकार्ड सुरक्षित

[वाशिंगटन, १२ फरवरी। गत वर्ष एप्रिल महीने में एशियाई राष्ट्र-सम्मेलन के अवसर पर नई दिल्ली में महात्मा गांधी ने अंगरेजी में बोलते हुए जो भाषण किया था, उसके तैयार किए हुए कुछ रेकार्डों को आज श्रीअलफ्रेड वेग ने यहाँ के राष्ट्रीय ग्रंथालय को भेंट किए। श्रीवेग यहाँ के विख्यात लेखक एवं वक्ता हैं, तथा आप भारत में पहले संवाददाता के रूप में भी रह चुके हैं।

गांधीजी के उक्त भाषण के रेकार्ड तैयार करने में भारत-सरकार के दिल्ली रेडियो ने भी सहयोग दिया था।]

गांधी के शब्दों का अनर्थ न हो

[श्रीवेग]

गांधीजी द्वारा दिए गए अँगरेजी के भाषण के सरकारी रेकार्ड केवल ये ही हैं, जिन्हे मैं यहाँ भेंट कर रहा हूँ।

गांधीजी के लिखित शब्द अधिकतर किसी परिस्थिति अथवा व्यक्ति-विशेष से ही संबंधित रहे हैं, अतएव सरलता-पूर्वक उनका गलत अर्थ लगाया जा सकता है, अथवा उन्हें अवास्तविक रूप मे उपस्थित किया जा सकता है।

गांधी—संत गांधी राजनीतिक तथा सामाजिक शक्तियों के बीच एक महत्त्व-पूर्ण स्थान लेने जा रहे हैं, जिनसे केवल एशिया ही नहीं, वरन् समस्त विश्व प्रभावित होने को है। इस राष्ट्रीय सग्रहालय में गांधीजी के शब्द भावी इतिहासकारों एवं छात्रों के लिये सुरक्षित रख छोड़ता हुआ आज मैं यह अनुभव कर रहा हूँ कि कम-से-कम एक स्थान में तो इस महान् नेता की आवाज साक्षी-रूप में रहेगी।

गांधी विश्व की एक प्रेरणा

[राष्ट्रीय ग्रंथालय के स्थानापन्न अध्यक्ष डॉक्टर वैनीग्रावर]

महात्मा गांधी विश्व-भर के लिये एक महान् नेता थे। ऐसे युग मे जब कि हिंसा, सहिष्णुता और भौतिक द्वन्द्ववाद ने संसार मे अपना रग जमा रक्खा है। महात्मा गांधी के अहिंसा के उपदेश घृणा और वैमनस्य मिटाने के लिये उनका बलिदान तथा आध्यात्मिक शक्तियों से भरा हुआ उनका उत्साहमय एवं निःस्वार्थ जीवन समस्त विश्व को निस्सदेह एक सत्य की प्रेरणा देता रहेगा।

महात्मा का स्वर्णिम संदेश

[अमेरिका में भारत के राजदूत श्रीआसफअली]

महात्माजी का संदेश अहिंसा का स्वर्णिम संदेश है। अमेरिका का राष्ट्रीय ग्रंथागार आज उस व्यक्ति के भाषण का रेकार्ड अपने यहाँ रख रहा है, जिसकी आवाज आनेवाली सदियों तक गूँजती रहेगी। वस्तुतः इस ग्रंथागार को आज एक अपूर्व और सबसे मूल्यवान् थाती मिली है।

गांधीजी के भाषण का संदेश

गांधीजी के भाषण के रेकर्डों के निम्न-लिखित अंश आज ग्रंथालय में सुनाए गए —

"मैं जो चाहता हूँ वह यह है कि आप एशिया का संदेश समझें; पर इसे पश्चिम के दृष्टिकोण से अथवा अणुबम का अनुकरण करते हुए नहीं समझना होगा। यदि आप पश्चिम को कोई संदेश देना चाहते हैं, तो वह अवश्य ही प्रेम का संदेश एवं सत्य का संदेश होना चाहिए।

"प्रजातंत्र के इस युग में, दीन से भी दीन प्राणी के इस जागरण-काल में आप एशिया का यह संदेश अधिक दृढ़ता के साथ दे सकते हैं।

"आप पश्चिम पर पूर्ण विजय प्रतिशोध की भावना रख कर नहीं पा सकते, क्योंकि आप शोषित हैं। आपको तो बुद्धि

एवं विवेक द्वारा ही यह विजय प्राप्त करनी है। मुझे बड़ा आनंद होगा कि आप सभी मिलकर एक हृदय एव एक मस्तिष्क से पूर्व के महापुरुषों का—बुद्ध, ईसा और मुहम्मद का—वह रहस्यमय संदेश समझ लें, और यदि वास्तव में हम वह महान् संदेश समझ गए, तो फिर पश्चिम पर हमारी पूर्ण विजय हो जायगी और हमारी इस विजय को स्वय पश्चिम ही प्यार करने लग जायगा।

"आज पश्चिम ज्ञान के लिये व्याकुल हो रहा है। एटम बम निकालकर उसे घोर वेदना हो रही है, क्योंकि एटम बम का अर्थ होगा केवल पश्चिम का ही नहीं, वरन् समस्त विश्व का महाविनाश। मानो बाइबिल की भविष्यवाणी सत्य होने जा रही है। मानो महाप्रलय की वेला आना चाह रही है। यह आपका कर्तव्य है कि आप विश्व को इसकी दुष्टता एव पाप से सावधान कर दें—यही आपके पूर्वजों ने, यही आपके शिक्षकों ने एशिया को सिखाया है।"

महात्मा गांधी की आवाज़

[राष्ट्रीय ग्रंथालय के चित्र-डाइरेक्टर डॉ० इरविन]

राष्ट्रीय ग्रंथालय के चित्र-डाइरेक्टर डॉ० इरविन ने कहा कि महात्मा गाधी के भाषण के रेकार्ड उन रेकार्डों के साथ रक्खे जायँगे, जो प्रेसिडेंट विलसन, रूज़वेल्ट और ट्रूमैन, जेनरल

आइसन हॉवर, श्री विंस्टन चर्चिल, श्रीमती च्याग-काई-शेक, श्री एडवर्ड अष्टम तथा सम्राट् जार्ज पष्ठम जैसे महान व्यक्तियों के भाषणों से लिए गए हैं।

---

(३) अन्य देशों की

सोवियट रूस की

भारतवर्ष मे सभी तबकों को आश्चर्य और दुख हुआ कि महात्माजी की मृत्यु पर रूस की ओर से सरकारी अथवा गैरसरकारी तौर पर कोई समवेदना नहीं प्रकट की गई। सोवियट रूस की समाचार वाहिनी एजेंसी टास ने इसका खुलासा किया है और लिखा है कि सोवियट रूस ने सरकारी तौर पर समवेदना और श्रद्धाजलि ३१ जनवरी, १९४८ को ही पं० जवाहरलाल नेहरू के पास अर्पित की थी। मास्को ने समाचार पाते ही तुरंत ही समवेदना प्रकट की।

भारतवर्ष में रूसी राजदूत के० वी० नोविकोव, सोवियट सरकार की ओर से बिड़ला-भवन गए, और अपनी सरकार की ओर से अंतिम श्रद्धांजलि भेंट की। उसके बाद वह पं० जवाहरलाल के भवन पर भी सरकारी तौर पर समवेदना प्रकट करने गए।

मास्को मे वैदेशिक मन्त्री श्रीमोलोटोव ने भारतीय राजदूत श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित के पास समवेदना प्रकट की।

गांधीजी का विस्तृत प्रभाव था

[विश्व प्रसिद्ध रूसी लेखक ए० ल्याकोव]

३० जनवरी, १९४८ को दिल्ली मे गाधीजी की हत्या की गई। उनका नाम भारतीय स्वतन्त्रता-संघर्ष से, वह संघर्ष जो

प्रथम विश्व युद्ध से लेकर १५ अगस्त १६४७ तक चला सूत्रवद्ध है। इस काल मे गाधीजी भारतीय राष्ट्रीय महासभा के एकमात्र प्रमुख नेता थे, पर उनका प्रभाव इससे भी अधिक विस्तृत था। वह करोड़ों भारतीयों के हृदयों मे समा गए थे।

दक्षिणी आफ्रिका की

डरबन, ३१ जनवरी—

आज संध्या को ८००० से ऊपर भारतवासी हर जाति और हर धर्म के एकत्रित हुए और उन्होंने शपथ ली कि गांधीजी के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिये वे उन्हीं के आदर्शों पर चलेंगे।

आदर्श के लिये मरे

[महात्मा गांधी की शिष्या मिस मेरी बार]

एक आदर्श जिसके लिये बापू जिए तथा मरे, वह थी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सद्भावना स्थापित करना।

प्रतिक्रिया सारे संसार में होगी

[ट्रांसवाल सत्याग्रह-कौंसिल के चेयरमैन डॉ० युसुफ दादू]

इस समाचार का ध्यान करना भी रोमाच-जनक है। इस घटना ने मुझे ऐसा स्तब्ध कर दिया है कि अभी मैं इस संबंध मे कुछ कह नही सकता। केवल इतना ही कहूँगा कि इसकी प्रतिक्रिया सारे संसार मे होगी।

मानवता के उज्ज्वलतम नक्षत्र

[डॉक्टर जी० एम० नेकर, नेटाल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष]

मानवता के इस उज्ज्वलतम नक्षत्र के अवसान में हम विश्व के सभी भारतीयों के साथ हैं।

बर्मा की

गांधीजी से मानवता का विकास हुआ

[अध्यक्ष माव शिव थेकी]

गाधी के हत्यारे ने दुनिया के एक महान् व्यक्ति की हत्या की। अनेक बर्मी नेता गाधीजी को जानते थे, उनके लिये गाधीजी प्यारे थे। मुझे खुद कई अवसरों पर उनसे मिलने का मौका मिला है। सत्य और स्वतंत्रता के उद्देश्य के प्रति उनकी लगन और निष्टा से मैं भी औरों की तरह प्रभावित हुआ। साम्राज्यवाद और शोषण के विरुद्ध उनके संघर्ष द्वारा मानवता के विकास मे परिवर्तन हुआ है।

गाधीजी ऐसे वक्त हमारे बीच से जाते रहे, जब कि दुनिया मे उनकी सबसे अधिक जरूरत थी। मै आशा करता हूँ कि भारतवासी परिस्थिति के अनुकूल शक्ति पैदा कर कार्य करेंगे, क्योंकि साम्प्रदायिक एकता द्वारा ही भारतीय स्वाधीनता की रक्षा हो सकती है। साथ ही इस एकता की स्थापना के बाद ही भारत, एशिया तथा विश्व को अधिक गौरवान्वित करने का उद्देश्य पूरा हो सकता है।

पवित्र और निःस्वार्थ व्यक्ति

[ए० पी० एफ० एल० बर्मा की ओर से]

गांधीजी की हत्या से बर्मा में जो तत्काल शोक फैला है, वह बर्मा और हिंद के निकट संबंध का परिणाम है। उनके निधन से एक पवित्र और निःस्वार्थ व्यक्ति की हानि हुई है, लेकिन उनकी मृत्यु सबको विश्वशांति के लिये उनके पद-चिह्नों पर कार्य करने की बराबर याद दिलाती रहेगी।

बर्मी राष्ट्र को क्षति

[बर्मा के प्रधान मंत्री श्रीथाकेन नू]

महात्मा गांधी की मृत्यु से भारत को ही नहीं, बर्मी राष्ट्र को भी क्षति पहुँची है, ऐसा यहाँ सब समझते हैं। बर्मी-जनता और सरकार इस दुर्घटना से बहुत दुखित है। पूरा देश शोक मना रहा है।

लंका की

विश्व के लिये पूरी न होनेवाली क्षति

[गवर्नर और प्रधानमंत्री]

लंका की जनता तथा सरकार को गांधीजी की हत्या का समाचार सुनकर वज्राघात-सी पीड़ा पहुँची है।

हमें यह अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि गांधीजी का अभाव हिंद तथा विश्व के लिये पूरी न होनेवाली क्षति है।

कोलंबो ३१ जनवरी—सिलोन पार्लामेंट की दोनों सभाओं ने महात्मा गांधी की मृत्यु पर शोक-प्रस्ताव किया है।

पूर्व की सब अच्छाइयों के प्रतीक

[प्रधान मन्त्री, डी० एस्० सेनानायक]

महात्माजी पूर्व के देशों में जितनी अच्छाइयाँ हैं, उन सबके प्रतीक थे। प्रकाश की वह मार्गदर्शक ज्योति—आहिंसा में शांत हो गई है। पर असल में ऐसा हो ही नहीं सकता। वह उन अमर आत्माओं में से, उन सदुपदेशक मसीहों में से थे, जिनका अनुवर्तन संसार सदैव करेगा, और उस महान् आत्मा के उपदेश की आत्मिक शक्ति शैतान पर विजय प्राप्त करेगी।

मानवता के बड़े पुजारी

[सर ओलिवर गोनोतिलक]

भारत ने अपने पिता को और संसार ने मानवता के एक बड़े पुजारी को खो दिया है। पर मुझे विश्वास है कि वह जीवन की अपेक्षा मृत्यु से और भी महान हो गए हैं।

चीन सरकार की

संसार की महती क्षति

चीन-सरकार की ओर से प्रकाशित वक्तव्य में कहा गया है कि महात्मा गांधी की हत्या से चीन-सरकार को महान् दुःख है। हमारे बीच से एक महान् आध्यात्मिक नेता छीन लिया गया। संसार की इससे महती क्षति हुई है।

इस स्वतंत्रता-प्राप्ति के अवसर पर महात्मा गांधी की हत्या से भारतवासियों की बहुत बड़ी हानि हुई है। गांधीजी भारतीय स्वतन्त्रता के स्तंभ थे। उनके साहस-पूर्ण नेतृत्व और त्याग के बिना भारत आज अपने उद्देश्य से बहुत दूर हो गया है, वह अपने लोगों के उच्चतम आदर्श की प्रतिमूर्ति थे। भारत की अंतिम लड़ाई का नेतृत्व करते समय ही वह मारे गए।

महात्मा गांधी एक महान एशियाई थे। उनके बाद भी उनका आदर्श भावी संतति के प्रोत्साहन का साधन बनेगा।

विदेशों के कुछ प्रधान
अधिकारियों की

ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री

गांधीजी के निधन के समाचार से ऑस्ट्रेलिया की जनता एवं सरकार अत्यंत दुखी है। मानवता की भलाई करनेवाले की हैसियत में गांधीजी को ऑस्ट्रेलिया सदैव स्मरण रक्खेगा। भारत की जनता तथा सरकार के साथ हम लोग समवेदना प्रकट करते हैं।

कनाडा के प्रधान मंत्री

कनाडा के प्रधान मंत्री ने नेहरूजी के पास एक शोक एवं समवेदना-सूचक संवाद भेजा है।

डच प्रधान मंत्री

डच प्रधान मंत्री डाक्टर लुई बील ने कहा है कि अपने देशवासियों की उन्नति के लिये गांधीजी सभी तरह के त्याग करने के लिये तैयार रहते थे।

फ्रांस के परराष्ट्र मंत्री

हम आपके दुःख से दुःखी हैं और महात्मा गांधी की मृत्यु के कारण जो सारे राष्ट्र पर शोक छा गया है, उसके लिये हम अपनी हार्दिक सहानुभूति भेजते है।

भारत मे फ्रांसीसी राजदूत को यह आदेश दिया गया है कि वह इस संवाद को भारत-सरकार के पास पहुँचा दें।

डच गवर्नर जनरल

नेदरलैंड अधिकृत पूर्वी हिंद द्वीप-पुंज के लेपिटनेंट गवर्नर जेनरल सर हर्बर्टस् वान मूक ने निम्न-लिखित शोक-संवाद भेजा है—"सारा संसार आज दीन हो गया है। मुझे विश्वास है, गाधीजी का प्रभाव संसार से हिंसा तथा शत्रुता की मनोवृत्ति को समूल नष्ट कर देगा। यहाँ के सभी भारत-वासी तेरह दिनों तक शोक मनाएँगे।"

वियतनाम के प्रधान मंत्री

प्यारे बापू की मृत्यु पर वीयतनाम-सरकार तथा जनता की ओर से मैं समवेदना प्रकट करता हूँ। उनके निधन से दुनिया ने एक महान् नेता खोया। गाधीजी के अमर आदर्श और निस्वार्थ निष्ठा एशियाई जनता को बराबर प्रेरणा देती रहेगी।

डेपुटी प्रधान मंत्री

गाधीजी की मृत्यु से न केवल हिंद को क्षति पहुँची है, बल्कि दुनिया की सारी शोषित जनता को, जो स्वतत्रता और न्याय के लिये लड़ रही है।

आफ्रिका के प्रधान मंत्री

महात्मा गाधी की हत्या का समाचार मैंने अत्यंत शोक से सुना। मुझे उम्मीद है कि समस्त संसार के लोगों को इसी

प्रकार दुःख हुआ होगा। गांधीजी इस युग के महापुरुष थे। उनके गत तीस वर्षों के मेरे परिचय ने उनके प्रति और भी मेरी श्रद्धा बढ़ाई। वह मानवों में महामानव थे। मैं भारत के साथ इस दुःख-पूर्ण अवसर पर समवेदना प्रकट करता हूँ।

दक्षिणी रोडेशिया के प्रधान मंत्री

गांधीजी के दुःखद निधन से जो मुसीबत हिंद की जनता पर पड़ी है, उस पर मैं अपनी तथा अपने सहयोगियों की ओर से शोक जाहिर करता हूँ।

फिलिपाइंस के सभापति

हिंद के अमर सपूत तथा हिंद की स्वतन्त्रता के निर्माता महान् गांधी की नृशंस हत्या से यहां की जनता शोक-पीड़ित है।

ईरान के प्रधान मंत्री

भारतीय स्वतंत्रता के पिता महात्मा गांधी की हत्या की खबर से मुझे असीम दुःख पहुँचा है। इस हत्या ने भारतीय राष्ट्र पर ही निर्दयता-पूर्वक आघात किया है।

ईराक के परराष्ट्र मंत्री

इस विश्व-व्यापी क्षति के लिये मैं अपनी सरकार की ओर से हिंद की जनता के प्रति हार्दिक सहानुभूति और शोक प्रकट करता हूँ।

पोलैंड के परराष्ट्र मंत्री

गांधीजी की मृत्यु के शोक पर हम लोगों की सच्ची समवेदना स्वीकार की जाय। सपूर्ण विश्व गांधीजी के उच्च गुणों का लोहा मानता है। अत्याचार के विरुद्ध लोकतंत्र के लिये उन्होंने जो संघर्ष किया, उसीके दौर में उन्होंने ये गुण अख्तियार किए।

ग्रीस के डेपुटी प्रधान मंत्री

बडे दुःख के साथ मैंने गांधीजी की असामयिक मृत्यु की खबर सुनी। इससे जितनी क्षति हिंद को हुई है, उतनी ही संपूर्ण मानव-जाति को हुई है। ग्रीस की जनता ने गांधीजी की महानता की बराबर प्रशंसा की है। मैं जनता तथा सरकार की ओर से इस महान दुःखद घड़ी मे हिंद की सरकार तथा जनता के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ।

लुक्जेम्बुर्ग के परराष्ट्र मंत्री

महात्मा गांधी की नृशंस हत्या से मुझे सख्त चोट पहुँची। यहाँ की जनता तथा सरकार की हार्दिक सहानुभूति मैं ज्ञापित करता हूँ।

सीरिया

शांति के दूत महात्मा गांधी की क्षति से सीरिया का प्रतिनिधि मंडल दुःखित है। जो शांति के प्रथम अग्रदूत के साथ घटना घटी थी वही इनके साथ भी। हम लोग इस मौके पर हार्दिक शोक प्रकट करते हैं।

सूडान के गवर्नर जनरल

सारा सूडान महात्मा गांधी की हत्या से दुःखित है। हिंद-सरकार हमारी सरकार और जनता की समवेदना स्वीकार करे।

फिनलैंड प्रजातंत्र के अध्यक्ष

हम लोग हिंद के महान नेता के निधन से शोक-पीड़ित हैं।

कोलंबिया के राष्ट्रपति

महात्मा गांधी की हत्या से हिंदुस्थान को ही नहीं, अपितु सारे विश्व को बहुत बड़ा धक्का लगा है। कोलंबिया उस महान नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जिसने अपनी सेवाओं और राजनीतिक कार्यों द्वारा अपना स्थान ऊँचा बना लिया है।

मिश्र के विरोधी दल के नेता

मुस्तफानहसपाशा —

मुझे यह जानकर बड़ा दुख हुआ है कि गांधीजी की हत्या का कारण था उनका हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश, और दूसरे यह कि उनकी हत्या एक हिंदू द्वारा हुई।

हवाई के राजकुमार

राजकुमारी और मैं हिंद की उस विपत्ति के कारण दुःखित हूँ, जो गांधीजी की हत्या से उस पर आ पड़ी है। हिंद की जनता के प्रति हम लोग हार्दिक दुख और सहानुभूति प्रकट करते हैं।

तिब्बत के दलाईलामा

शांति के महान् प्रतीक गांधी की हत्या से मैं वेहद दुःखित हूँ। मैंने ईश्वर से उनकी आत्मा को शांति प्रदान करने के लिये प्रार्थना की है। मैं हिंद के प्रति अपनी हार्दिक सहानु-भूति प्रकट करता हूँ।

मोरक्को के सुलतान

महात्माजी के दुःखद अंत से मोरक्को की जनता में विषाद छा गया है, क्योंकि महात्मा गांधी शोषित मानव की स्वतंत्रता के प्रतीक तथा एकता और बंधुत्व के अग्रदूत थे।

ब्रिटिश सोमालीलैंड के सुलतान

सोमाली राष्ट्र महात्माजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है। सोमाली जनता ने उनके संदेश को बराबर गंभीरता के साथ ग्रहण किया और भविष्य में भी उनका सक्रिय रूप से पालन किया जायगा।

युगेंडा के गवर्नर

अपनी ओर से, सरकार की ओर से और युगेंडा की जनता की ओर से मैं गांधीजी की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक और सहानुभूति प्रकट करता हूँ।

सेनमेरिनो के परराष्ट्र मंत्री

सेन मेरिनो की सरकार तथा जनता गांधीजी की मृत्यु पर अपना शोक प्रकट करती है।

गेटेमेला के परराष्ट्र मंत्री

युग के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति महात्मा गांधी की हत्या पर यहाँ की सरकार और जनता हार्दिक शोक प्रकट करती है।

फिलस्तीन के वादेल्मी यहूदी संप्रदाय के सभापति

मानवता और विश्व व्यापी धार्मिकता के संरक्षक महात्मा गांधी के असामयिक निधन पर फिलस्तीन की यहूदी जनता हिंद की जनता के शोक में साथ है।

अंतिम प्रणाम

[जवाहरलाल नेहरू]

उस महापुरुष की जीवन-यात्रा, जिसने संपूर्ण भारतवर्ष- हिमालय से कुमारी अंतरीप तक और सिंध से ब्रह्मपुत्रा तक- की यात्रा की थी, का अंत हो गया:—उस महापुरुष की जीवन-यात्रा जिसने भारत के करोड़ों निवासियों के हृदयों को सबसे अधिक पहचाना था। उसने अपना समस्त जीवन भारतवासियों, जिनको वह अत्यत प्रेम करता था, की सेवा में बिताया।

आज जब हम पवित्र संगम पर से लौटे, हमें सूनापन मालूम होने लगा। अब हम पुन गांधीजी को न देख सकेंगे और न हम अब बार-बार उनके पास नेतृत्व, सलाह और सहायता क लिये दौड सकेंगे। आज एक भी ऐसा वीर नहीं रह गया है, जो अपने कधों पर वह भार वहन कर सके, जिसे बापू ने इतनी कुशलता से सँभाला। हजारों लोग उनके पास अपने निजी मामलों को लेकर सलाह-मशविरे के लिए

जाते थे। वे उनके बच्चों के समान थे। शब्दों के असली अर्थ मे महात्मा गांधी राष्ट्र-पिता थे। अतः आज यह स्वाभाविक ही था कि उनके बच्चे राष्ट्र पिता के निधन पर शोक मनाने के लिये एकत्रित हों।

महात्मा गांधी की हत्या क्यों की गई? गांधीजी की हत्या इसलिये की गई कि कुछ लोग उनसे विरोध करते थे। देश के राजनीतिक शरीर में यह एक बड़ी खतरनाक बीमारी होगी, अगर विरोधी विचार-धाराएँ सहन न की जा सकें, और लोग अपने विरोधियों की हत्या करना शुरू कर दें। जनतंत्रवाद के लिये यह बहुत बड़ा खतरा होगा। अब समय आ गया है कि हम एक सूत्र में बँधकर अपने नवजात राष्ट्र की रक्षा करें।

स्वराज्य के अर्थ हैं कि सर्वसाधारण के लाभ के लिये सर्वसाधारण की राय, सम्मति और पूर्ण सहयोग से राज-कार्य चलाया जाय। और वे जो हिंसा का सहारा लेकर शक्ति को अपनाना चाहते हैं, और इस प्रकार स्वराज्य की जड़ खोदते हैं, मूर्ख और गलत राह पर हैं।

महात्मा गांधी हमे सत्य और अहिंसा के मार्ग पर ले चले थे, पर वह मुख्यत कर्मयोगी थे। उन्होंने अपने दिल और हृदय व आत्मा से हरिजनों की सेवा की। और उन्हीं की तरह उन्होंने अपना जीवन-यापन भी किया। दरिद्रनारायण की सेवा में उन्होंने तन-मन संपूर्ण रूप से लगा दिया। सच तो

यह है कि उन्होने ४० करोड भारतवासियो की सेवा की जिनके लिये वह अपने सपने का स्वराज्य लाना चाहते थे।

बडे खेद की बात है कि ऐसे महापुरुष की हत्या उन्ही मनुष्यों मे से एक ने की, जिनकी उसने सेवा की थी। आज हममें से हरएक को अपने हृदय को टटोलकर देखना चाहिए कि हम कहाँ तक महात्मा गांधी के आदर्शों और उपदेशो पर चल रहे हैं। उन्हें अपने से पूछना चाहिए कि वे कहाँ तक हिंदू-मुसलिम एकता कायम करने में सफल हुए हैं।

यद्यपि महात्मा गांधी की वाणी हमे सुनने को फिर नहीं मिलेगी, फिर भी लाखो आदमी, जो त्रिवेणी-तट पर एकत्रित हुए हैं, और करोडों जो भारतवर्ष में वसते हैं, अपने हृदयों में महात्मजी का चित्र लिए रहेंगे। वह चित्र इस देश के कृतज्ञवासियों के हृदय मे रहा है, और आनेवाली सैकड़ों पीढियों के हृदयों मे रहेगा।

"हमें यह कहलाने का अवसर न देना चाहिए कि भारतवर्ष मे एक महापुरुष पैदा हुआ, जिसने अपने बच्चों को विदेशी सत्ता से स्वतंत्र किया; परंतु वही लोग, जिनकी उसने जीवन-भर सेवा की, उसके महान् आदर्शों को भूल गए, उन महान् उपदेशों को, जो उसने मृत्यु के समय दिए थे। पिछले उपवास के दिनों मे हमने वापू को वचन दिया था कि हम

भारतवर्ष में सांप्रदायिक एकता रखेंगे। और यद्यपि इसमें भारी कठिनाइयाँ हैं, परंतु हम निश्चय ही अपने वचनों का पालन करेंगे।

श्राद्ध-दिवस
१२।२।४८

महात्मा गांधी की जय।

233